आर.एन.आई. नं. 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 जून 2022
डाक प्रेषण तिथि : 29 जून-01 जुलाई 2022
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 60 अंक : 06
मूल्य : 10/- पृष्ठ संख्या : 72
डाक पंजीयन संख्या BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

60th षष्ठी प्रवेश

जन्म उत्सव है तो मृत्यु महोत्सव है

संघ शिखर सदस्य

श्री शान्तिलाल जी सांड
बेंगलुरु

श्री विमल जी सिपाणी
बेंगलुरु

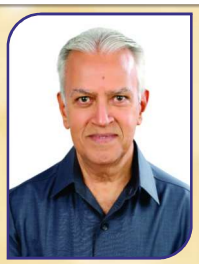
श्री रिद्धकरण जी सिपाणी
बेंगलुरु

श्री जयचन्दलाल जी डागा
बीकानेर

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां

स्व. श्री मूलचन्द जी डागा
बीकानेर

समता मनीषी
श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक

स्व. श्री विजयचन्द जी डागा
बीकानेर

श्री माणकचन्द जी नाहर
उदयपुर

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु

श्री दिनेश जी सिपाणी
बेंगलुरु

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां

रचनाएँ आमंत्रित

भगवान महावीर के अहिंसा सन्देश को जन-जन के हृदय पटल पर जागृत करने एवं समाजोत्थान के साथ-साथ समाज कल्याण को समर्पित आपकी अपनी श्रमणोपासक पत्रिका का अंक आपके करकमलों में है। आप संघ के मुखपृष्ठ के नियमित पाठक है यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। हम आतुर हैं आपके सुझावों को जानने के लिए। कृपया श्रमणोपासक के सम्बन्ध में आप अपने सुझाव हमें नि:संकोच भिजवाएँ ताकि इसे और अधिक जनोपयोगी व रुचिकर बनाया जा सके। आपके सुझाव हमारा मार्गदर्शन करेंगे ऐसा हमारा विश्वास है।

श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी प्रकार आगामी **15-16 अगस्त 2022** का धार्मिक अंक **''समभाव : एक उच्च साधना''** विषय पर प्रकाशित किया जाएगा। रचनाओं की शब्द सीमा अधिकतम 500 शब्द रहेगी। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी **M.I.D.** (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि मो. **9314055390** एवं ईमेल : **news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाओं के लिए श्रमणोपासक टीम सदैव आतुर हैं।

-श्रमणोपासक टीम

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्रीमती कुसुमजी कोटड़िया
कोण्डागाँव

श्री रतनलालजी साँखला
अजमेर

श्रीमती प्रेमलताजी नंदावत
बैंगलोर

श्रीमती सुन्दरदेवी सुराणा
बैंगलोर/गंगाशहर

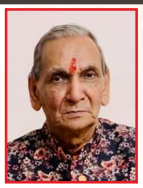
श्री पारसजी छाजेड़
धमधा

श्री पारसजी खेतपालिया
ब्यावर

श्री रिखबचंदजी सोनावत
भीनासर

श्री मनीषकुमारजी कोठारी
बैंगलोर

श्री मेघराजजी पुगलिया
कोलकाता

श्री सुरेशकुमारजी नांदेचा
खाचरोद

श्री राजेशजी कटारिया
बैंगलोर

श्री पारसजी छल्लाणी
सोनाली

स्व. श्री ओमप्रकाशजी भूरा
देशनोक

श्री प्रसन्नजी सुराणा
रायपुर

श्री कान्तिलालजी कटारिया
रतलाम

श्रीमती आशादेवी कटारिया
रतलाम

श्रीमती रतनीदेवी लूणावत
दिल्ली

श्री मोतीलालजी मुणोत
जलगाँव

श्रीमती तारादेवी सुराणा
गंगाशहर

श्री राजमलजी चौरड़िया
जयपुर

श्री ललितकुमारजी लोढ़ा
मदुरान्तकम्

श्री निर्मलकुमारजी भूरा
करीमगंज

श्री राजकुमारजी बच्छावत
नेपाल

श्री केशरीमल जी देशलहरा
दुर्ग

चतुर्थ चरण

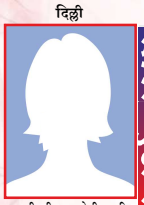
स्व. श्रीमती सुभद्रादेवी पगारिया
सूरत

श्री खूबचन्दजी पारख
राजनांदगाँव

श्री राजीवजी सूर्या
उज्जैन

श्री विनयजी अब्भाणी
चित्तौड़गढ़

श्री प्रकाशजी कांकरिया
इन्दौर

श्री उत्तमचंदजी रांका
जयपुर

स्व. श्रीमती सरोजदेवी
सुराणा-बेरला

श्री रावतमलजी संचेती
गंगाशहर

श्री पुखराजजी मुकिम
जयपुर

श्री जयचंदलालजी मरोटी
देशनोक/कोलकाता

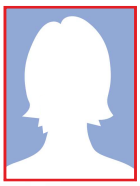
श्रीमती कमलादेवी कोठारी
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी डागा
कोलकाता

श्री राजमलजी पंवार
कानवन

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री केशरीमलजी देशलहरा-दुर्ग * श्री शांतिलालजी बच्छावत-सूरत * श्री अनिलकुमारजी गोलछा-सिलचर * श्री प्रकाशचंदजी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमलादेवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुन्दरलालजी बोथरा-मुम्बई * श्री गोपालचंदजी खिंवसरा-बैंगलोर * श्री बापूलालजी कोठारी-उदयपुर * श्री विजय कुमारजी टंच-बदनावर

द्वितीय चरण * श्री तेजकुमारजी तातेड़-इंदौर * श्री पूनमचंदजी भूरा-भीलवाड़ा * श्री बसंतीलालजी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्री बसंतजी कटारिया-रायपुर * श्रीमती इन्द्राबाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्री कमलजी बैद-मुम्बई * श्री प्रकाशचंदजी सूर्या-उज्जैन * श्रीमती सुनीताजी मेहता-बेलगाँव * श्री दिलीपजी पगारिया-जावरा * श्री राजकुमारजी बाफना-हरदा * श्री प्रेमचंदजी व्होरा-बदनावर

प्रथम चरण * श्रीमती सूरजादेवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमारजी संचेती-बेलगाँव * श्री उदयराजजी पारख-रायपुर * श्री झंवरलालजी कुम्मट-सिलचर * श्री सोहनलालजी रांका-ब्यावर * श्रीमती ज्ञानकँवरजी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री विजय कुमारजी मुणोत- हैदराबाद * श्री भीखमचंदजी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री अखराजजी ओस्तवाल-भिलाई * श्री मुन्नालालजी पँवार-कानवन * श्री चेतन कुमारजी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभयकुमारजी भण्डारी-जावरा * श्री दिलीपजी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलालजी देशलहरा-गुण्डरदेही * श्री प्रकाशचंदजी श्री श्रीमाल-हैदराबाद * श्री निर्मलजी खिंवसरा-ब्यावर

महत्तम महोत्सव

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महा - महोत्सव

|| जय गुरु नाना || || जय जिनेन्द्र || || जय गुरु राम ||

ज्ञान अर्जन

रजिस्ट्रेशन फॉर्म – Offline Form

श्रुत आरोहक

1. नाम / Name : .....
2. पिता / पति का नाम / Husband's / Father's Name : .....
3. सरनेम / सुर्नामे : .....
4. उम्र / Age (Only Numbers) : .....
5. मोबाइल नंबर / Whatsapp No.) : .....
6. शहर / City : .....
7. State / राज्य : .....
8. Anchal / अंचल : .....
9. श्रुत आरोहक Classes में आप जुड़ना चाहते है ? हाँ ☐ नहीं ☐
10. आप पढ़ाई कैसे करना चाहते है Online ☐ Offline ☐
11. क्या आप श्रुत आरोहक - ऑनलाइन (online) क्लास में पढ़ना चाहेंगे ?
    a) सुबह / Morning ☐ दोपहर / Afternoon ☐ शाम / Evening ☐
12. जो course आप पढ़ना चाहते है, उसकी पुस्तक भिजवाने हेतु अपना पत्ता (Postal Address in detail) लिखे

Note : श्रुत आरोहक Registration की आखिरी तारीख 20th July 2022 | इस फार्म का प्रिंट निकालकर पूछी गई जानकारी को पूर्णतया भरकर मो. 7676650292 पर व्हाट्सप्प द्वारा भिजवायें।

दिनांक : ..... हस्ताक्षर : .....

(+91)7676650292 | mahattammahotsav@gmail.com | Mahattam Mahotsav

अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

।। जय गुरू नाना।। ।। जय महावीर।। ।। जय गुरू राम।।

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

कार्यक्रम विवरण

कार्यसमिति बैठक
सत्र - 1

16 जुलाई 2022
शनिवार
दोपहर 12.15 बजे से

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ
आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह संयोजक, संयोजन मण्डल सदस्य, आंचलिक प्रभारी, कार्यसमिति सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति
आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजिका, सह संयोजिका, कार्यसमिति सदस्या एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ
आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्यगण, स्थानीय शाखा प्रमुख, लीड मेंबर एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

विशेष आमसभा
16 जुलाई 2022, शनिवार
सायं 4 बजे से

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ
आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्यगण, स्थानीय शाखा प्रमुख, लीड मेंबर, विशेष आमंत्रित सदस्य एवं समस्त युवा संघ सदस्यगण

महत्तम महोत्सव
शुभारंभ एवं क्रियान्वयन प्रस्तुति
16 जुलाई 2022, शनिवार सायं 8 बजे से

आमंत्रित
श्रीसंघ, महिला समिति, युवा संघ पदाधिकारी, कार्यसमिति, सभी स्थानीय संघ अध्यक्ष/मंत्री एवं समस्त सदस्यगण
टीम महत्तम महोत्सव की
कोर टीम, प्रोजेक्ट लीड्स एवं उनकी कोर टीम, जोनल लीड, आँचल लीड व स्थानीय लीड सदस्य

संयुक्त बैठक
सत्र - 2

17 जुलाई 2022, रविवार
दोपहर 12.15 बजे से

संस्कार एवं संघ संवर्धन
क्यों और कैसे?

साधुमार्गी मोबाइल ऐप लाँचिंग

आमंत्रित : श्रीसंघ, महिला समिति व समता युवा संघ पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्य, सभी स्थानीय संघ अध्यक्ष/मंत्री एवं सदस्यगण

निवेदक
राष्ट्रीय महामंत्री
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति
श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु सुश्री सिद्धी नाहर, बोरझरा

नाम	:	मुमुक्षु सुश्री सिद्धी नाहर
जन्मतिथि	:	11 जनवरी 1997
जन्मस्थान	:	बोरझरा, धमतरी (म.प्र.)
शिक्षा	:	एम.कॉम., (PGDCA)
वैराग्यकाल	:	4 वर्ष
दीक्षा प्रदाता	:	परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.
धार्मिक अध्ययन	:	पुच्छिंसुणं, श्रीमद् उववाई 22 गाथा, आगम- श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र 23 अध्ययन, श्रीमद् आवश्यक सूत्र, भक्तामर, थोकड़े- बत्तीसी, 67 बोल, लघुदण्डक, गति-आगति, जीवधड़ा, श्री प्रज्ञापना सूत्र भाग 1-2 के थोकड़े।
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक परीक्षा	:	जैन संस्कार पाठ्यक्रम 1 से 5, जैन सिद्धान्त कोविद, आगम कंठस्थ भूषण
तपस्या	:	उपवास, बेला, तेला, 9, आयंबिल
पदयात्रा	:	लगभग 700 किमी.

पारिवारिक परिचय

परदादाजी-परदादीजी	:	स्व. करनीदानजी-स्व. हेमीबाई नाहर
दादाजी-दादीजी	:	स्व. जमनालालजी-तारादेवी नाहर
बड़े दादाजी-दादीजी	:	पुखराजजी-माडूबाई नाहर
छोटे दादाजी-दादीजी	:	मंगलचंदजी-तारादेवी नाहर मोहनलालजी-किरणदेवी नाहर
बड़े पापाजी-मम्मीजी	:	स्व. जीवनलालजी-रेखादेवी नाहर
पिताजी-माताजी	:	किशोरजी-ललिताजी नाहर
चाचाजी-चाचीजी	:	कपूरजी-किरणजी, मनोजजी-मंजूजी नाहर, सुनीलजी-कंचनजी नाहर, संतोषजी-दीपिकाजी नाहर
भाई	:	रौनक, प्रखर, धीरज, तुषार, सिद्धार्थ, युग, लक्ष्य, खुश, दर्शन, पुण्य
बहन-बहनोई	:	रिमझिमजी-भावेशजी मोदी-राजनांदगाँव, खुशबूजी-मनोजजी सुराणा-कोण्डागाँव, भाविकाजी-सौरभजी बाफना-गुण्डरदेही, दर्शनाजी-अर्हम्जी बरमेचा-नंदनी, मानसीजी, गुंजनजी, निकिता
बुआजी-फूफाजी	:	ममता-कुशलजी पारख, सौ. जतनबाई-स्व. लक्ष्मीलालजी रायसोनी, सीताबाई-स्व. बंशीलालजी रायसोनी, शकुनबाई-स्व.नीलमचन्दजी सांखला, सुरजबाई-कंवरलालजी पारख
भांजा-भांजी	:	पर्व, त्विषा, कृति, टिया
बड़े नाना-नानीजी	:	स्व. भंवरलालजी-स्व. तिजोबाई, स्व. केवलचंदजी-कमलादेवी सिसोदिया
नानाजी-नानीजी	:	पुखराजजी-स्व. भगवतीदेवी सिसोदिया
मामाजी-मामीजी	:	प्रदीपजी-कल्पनाजी, सिसोदिया, भाई- श्रेयांश सिसोदिया
मौसाजी-मौसीजी	:	स्व. ताराचंदजी-इंदरादेवी सुराना-देवकर, मानकलालजी-यशोदाजी सुराणा-जगदलपुर, जवरीलालजी-अमिताजी सुराना-जगदलपुर, भंवरलालजी-सुनीताजी गोलछा-जगदलपुर

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु सुश्री अनमोल जैन, टिटिलागढ़

नाम	:	मुमुक्षु सुश्री अनमोल जैन
जन्मतिथि	:	26 मार्च 1997 जन्मस्थान : टिटिलागढ़ (उड़ीसा)
व्यावहारिक शिक्षा	:	एम.कॉम फस्ट ईयर, बी.कॉम गोल्ड मेडलिस्ट, (PGDCA)
धार्मिक अध्ययन	:	आगम- पुच्छिसु णं, श्रीमद् उववाई की 22 गाथा, श्री दशवैकालिक सूत्र, श्री सुखविपाक सूत्र, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के 1-7, 10, 11, 31 अध्ययन। थोकड़े- 25 बोल, 67 बोल, 33 बोल, जैन सिद्धांत बत्तीसी लघुदण्डक, गति-आगति, जीवधड़ा, 98 बोल का बासठिया, 102 बोल का बासठिया, गुणस्थान स्वरूप, कर्म स्वरूप, कर्मविपाक, 5 समिति 3 गुप्ति, भिक्षा के 110 दोष, श्रीमद् प्रज्ञापना सूत्र के भाग-1, 2, 3 व भगवती सूत्र के कई थोकड़े। स्तोत्र- उवसग्गहरं, भक्तामर, चिन्तामणि पार्श्वनाथ
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक परीक्षा	:	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, विभाकर का तृतीय प्रश्नपत्र, आगम कंठस्थ भूषण, जैन स्तोक मंजूषा भूषण
तपस्या	:	उपवास, बेला, षट्रस तप, एकासना का मासखमण
वैराग्यकाल	:	लगभग 4 वर्ष
पदयात्रा	:	लगभग 1300 कि.मी.

पारिवारिक परिचय

परदादाजी-परदादीजी	:	स्व. संतलालजी-स्व. शर्पीदेवी जैन
दादाजी-दादीजी	:	चमरूलालजी-श्रीमती कृष्णादेवी जैन
बड़े दादाजी-दादीजी	:	स्व. जगमंदरजी-स्व. शांतिदेवी जैन, स्व. मंक्तुजी-स्व. शानादेवी जैन
छोटे दादाजी-दादीजी	:	स्व. तुलसीजी-गायत्रीदेवी जैन, स्व. भीमसेनजी-स्व. चाँदीदेवी जैन, देबुलालजी-संतोषदेवी जैन, स्व. नेकीरामजी-स्व. मिश्रीदेवी अग्रवाल
बड़े पापाजी-मम्मीजी	:	मांगेलालजी-संतोषीदेवी जैन
पिताजी-माताजी	:	सुरेशकुमारजी-कांतादेवी जैन
चाचाजी-चाचीजी	:	कमललालजी-मंजूदेवी जैन, सुनीलकुमारजी-मुनीदेवी जैन, गणेशलालजी-अचुकीदेवी जैन, स्व. अनिलकुमारजी-सुधादेवी जैन
भाई-भाभी	:	दुलीजी-उमादेवी, दीपेशजी-अंकितादेवी, राकेशजी-शिवानीदेवी, भूपेशजी-मुस्कानदेवी, साहिल, प्रेरित, अरमान, मोहित
बहन	:	मनीषा, मुस्कान, करिश्मा, उमा, पायल, गुनगुन, अंजली, ऐंजल
भतीजा	:	वेद, वंश
भुआजी-फुफाजी	:	किरणदेवी-महेशजी अग्रवाल (बरगढ़)
भाई-बहन	:	नंदकिशोरजी-ज्योतिदेवी
जीजी-जीजाजी	:	सौ. नीशु-हितेशजी जैन-बैंगलोर, सौ. नेहा-अंकितजी अग्रवाल-बैंगलोर, सौ. चंचल-धीरजजी गोयल-रायपुर
भांजा-भांजी	:	आरोही, यशस, समायरा, आरभ
नानाजी-नानीजी	:	स्व. नुनीयामलजी-स्व. शांतिदेवी जैन
छोटे नानाजी-नानीजी	:	स्व. रौनकलालजी-स्व. रेशमबाई जैन
मामाजी-मामीजी	:	सुदर्शनलालजी-शारदादेवी जैन, अशोककुमारजी-सावित्रीदेवी, विनोदकुमारजी-स्व. मंजूजी, आनंदकुमारजी-सवितादेवी जैन
मौसीजी-मौसाजी	:	सौ. इंदिरा-शंकरलालजी अग्रवाल, सौ. संतोष-प्रकाशजी जिंदल
परिवार से दीक्षित	:	शासन दीपिका साध्वी श्री रजतमणिजी म.सा. (संसारपक्षीय मौसीजी म.सा.)

संक्षिप्त परिचय

मुमुक्षु सुश्री यशस्वी (लाडो) ढेलड़िया

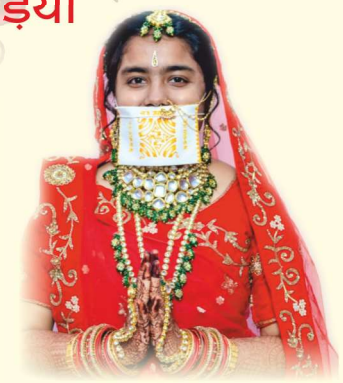

नाम	:	मुमुक्षु सुश्री यशस्वी (लाडो) ढेलड़िया
जन्मतिथि	:	18 सितम्बर 1999
जन्मस्थान	:	बालोद (छ.ग.) मूल निवासी– सोइन्तरा (राज.)
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.कॉम.
वैराग्यकाल	:	लगभग 4 वर्ष
दीक्षा प्रदाता	:	परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.
धार्मिक अध्ययन	:	पुच्छिसुणं, श्रीमद् उववाई 22 गाथा, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र, श्री दशवैकालिक सूत्र के 8 अध्ययन, श्री आवश्यक सूत्र, भक्तामर स्तोत्र, कल्याण मंदिर, रत्नाकर पच्चीसी आदि। थोकड़े- जैन सिद्धान्त बत्तीसी, 67 बोल, 5 समिति 3 गुप्ति, 33 बोल, लघुदण्डक, गति-आगति, जीवधड़ा, 98 बोल का बासठिया, 102 बोल का बासठिया, गुणस्थान स्वरूप, कर्म स्वरूप, कर्मविपाक, बंध, उदय, उदीरणा, सत्ता, 16 संज्ञा, बंधस्थान, गमक का थोकड़ा, छ: काय का थोकड़ा एवं अन्य कई थोकड़े
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक परीक्षा	:	जैन संस्कार पाठ्यक्रम 1 से 6, जैन सिद्धान्त भूषण,कोविद, विभाकर, मनीषी (1 परीक्षा)

पारिवारिक परिचय

परदादाजी-दादीजी	:	स्व. रानीदानजी-स्व. लुनीबाई ढेलड़िया
बड़े दादाजी-दादीजी	:	स्व. रामलालजी-मूलीबाई, स्व. मोतीलालजी-सीताबाई, स्व. हीरालालजी-आशीबाई ढेलड़िया
दादाजी-दादीजी	:	जवरीलालजी-सोनीबाई ढेलड़िया
छोटे दादाजी-दादीजी	:	स्व. रिखबचंदजी-बिदामीबाई ढेलड़िया
बुआदादी-दादोसा	:	खम्माबाई-स्व. रूपचंदजी सांखला-बालोद, स्व. कमलाबाई-स्व. खेमचंदजी सुराना-अतरिया, धापूबाई-पारसमलजी चोपड़ा-खैरागढ़, स्व. पुष्पादेवी-स्व. गौतमचंदजी चोपड़ा-खैरागढ़
बड़े पापाजी-मम्मीजी	:	गौतमचंदजी-शांतिदेवी, कांतिलालजी-तारादेवी, चेतनलालजी-संतोषजी, अशोककुमारजी-गीताजी ढेलड़िया-बालोद
पिताजी-माताजी	:	मांगीलालजी-अनिताजी ढेलड़िया
चाचाजी-चाचीजी	:	जयचंदजी-सीमाजी ढेलड़िया
भाई-भाभी	:	अंकितजी-रश्मिजी, रायपुर, राहुलजी-रानीजी ढेलड़िया-बालोद
बुआजी-फूफाजी	:	उष्माजी-स्व. इंदरचंदजी बाफना-राजनांदगाँव, दुर्गाजी-स्व. मनोजकुमारजी बाफना-जैपुर झाड़ी, सविताजी-महावीरजी गोलछा-राजनांदगाँव, भारतीजी- राजेशकुमारजी कोचर-दुर्ग
बहन-बहनोई	:	प्रियंकाजी-अर्पितजी रतनबोहरा-दुर्ग, खुशबूजी-हितेशजी कोटड़िया-मुढ़ीपार, निकिताजी-अभिषेकजी कोठारी-दुर्ग, मोनिकाजी-मयंकजी बैद-राजनांदगाँव
बहन	:	हितांशीजी ढेलड़िया, दीपिकाजी बाफना (भतीजी - आराध्या)
भाई	:	सौरभ, श्रेयांस, सिद्धार्थ, सजल, कुशल, हर्ष, मनन, रम्यक्, रोहन, मयंक, प्रतीक, हर्षित, पीयूष, आदित्य
नानाजी-नानीजी	:	रेखचंदजी-ताराबाई सांखला-खैरागढ़, गौतमचंदजी- कांतिबदेवी सांखला-दुर्ग, स्व. लक्ष्मीचंदजी-विमलाबाई सांखला-खैरागढ़, हरीशचंदजी-ऊषादेवी सांखला-राजनांदगाँव
मामाजी-मामीजी	:	संतोषजी-नीतूजी सांखला-राजनांदगाँव, शैलेन्द्रजी-सुनीताजी सांखला-खैरागढ़
मौसाजी-मौसीजी	:	महावीरजी-शोभाजी ओस्तवाल-धमतरी, खेमचंदजी-सुषमाजी देशलहरा-दुर्ग, राजेशजी-संगीताजी पारख, दल्लीराजहरा

श्रमणोपासक
।। जय गुरु नाना।।

।। जय महावीर।।

29-30 जून, 2022
।। जय गुरु राम।।

पंजीयन संख्या : आर. एन. 7387/63

श्रमणोपासक समाचार पाक्षिक

Visit us : www.sadhumargi.com

प्रकाशक
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

अध्यक्ष एवं प्रधान सम्पादक
गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह-संपादिका
श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

बैंक खाता विवरण
Scan & Pay

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner
Bank : State Bank of India
A/c No : 31264126681
IFSC Code: SBIN0003401
Branch : G.S. Road, Bikaner
email : accounts@sadhumargi.com
Mob. No. : 7073311108

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक समाचार	8955682153	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक	9799061990	
साहित्य	8209090748	publications@sadhumargi.com
महिला समिति	7231033008	ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	7073238777	yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	7976519363	
परिवारांजलि	7231933008	anjali@sadhumargi.com
विहार	8505053113	vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	9982990507	Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	7231833008	udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	6265311663	globalcard@sadhumargi.com

सुविचार

मैत्री-भावना

तेरा-मेरा घेरा टूटे,
ममकार भाव छूटे।
सर्व सुखी भावना ये,
मैत्री कहलाती है।।

मैत्री का विकास ही तो,
अहिंसा प्रकाश होता।
चार भावना में देखो,
मैत्री अग्र आती है।।

एतबार हो अटल,
मन से हो निष्कपट।
मैत्री-खेती भरपूर,
यों लहलहाती है।।

वीर कहे गौतम से,
मैत्री रख सब ही से।
मैत्री-वर पीछे आते,
गुण ज्यूं बराती है।।

साभार- वीर कहे गौतम से

सूचना- किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय- प्रात: 10.00 से सायं 6.30 बजे तक
लंच- दोपहर 1.00 से 1.45 बजे तक

अनुक्रमणिका

सफल जीवन का मंत्र
-परम पूज्य आचार्य

प्रवर 1008 श्री शमलालजी म.सा.	:	11
नमस्कार महामंत्र का शुद्ध लेखन	:	13
महत्तम महोत्सव	:	14
गुरुचरण विहार	:	16
विविध समाचार	:	28
विविध भेंट मार्फत	:	40
स्मृति शेष	:	46
शोक संदेश	:	48
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति	:	49
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ	:	54
विहार सूची	:	56

श्रमणोपासक

राम चमकते भानु समाना

प्रधान कार्यालय/ईमेल आईडी

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

मार्ग तो एक ही है

मार्ग तो एक ही है। मार्ग एक ही है, यह बात कैसे समझें? क्योंकि भिन्न-भिन्न मार्ग प्रत्यक्ष है। नेशनल हाईवे, स्टेट हाईवे, एक्सप्रेस हाईवे आदि अनेक प्रकार के मार्ग हैं, तो यह कैसे समझें कि मार्ग एक ही है? जिन हाईवे आदि को मार्ग कहा जा रहा है वे एक अपेक्षा से तो मार्ग हैं, पर यथार्थ में वे मार्ग नहीं हैं। मार्ग किसे कहा जाए? सीमेन्ट या डामर से बनी हुई रोड मार्ग नहीं है। मार्ग उसे समझना चाहिए जो मंजिल तक ले जाने वाला हो। मंजिल एक मात्र मोक्ष ही है। संसार के स्थान मंजिल नहीं, पड़ाव हैं। पड़ाव का उपयोग तभी तक सुखद होता है जब तक मंजिल मिले नहीं। यदि पड़ाव को ही कोई मंजिल मान ले तो वह उसकी भ्रान्ति ही होगी। संसार मात्र पड़ाव है, मंजिल नहीं। **मार्ग वही है जो मोक्ष तक ले जाता है।** ऐसा मार्ग ज्ञानी भगवन्त बताते हैं। वर्तमान समय में उस मार्ग का ज्ञान, उस मार्ग की जानकारी भगवान महावीर ने दी। उन्होंने उस मार्ग को देखा, जाना, उसके बाद भव्यों को बताया कि मार्ग क्या है?

कषाय मार्ग नहीं है। हिंसा, झूठ आदि मार्ग नहीं हैं। ये सभी उन्मार्ग हैं। लोग उन्हें मार्ग मान लेते हैं, पर यथार्थ में ये मार्ग नहीं हैं। इन पर चलकर आज तक कोई भी मंजिल नहीं पा सका। **ये भूल-भुलैया जन्मों-जन्मों से जाने हुए हैं।** अभ्यस्त होने से इन्हीं भूल-भुलैया में जीव भटकता रहता है। नेशनल हाईवे आदि व्यावहारिक-उपचरित पथ है। व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर इनसे जाता-आता है, इसलिए इन्हें मार्ग मान लिया गया है। ये उपलक्षण से मार्ग हैं। यथार्थ में तो मार्ग वही है जो मंजिल तक पहुँचाए। सम्यग्ज्ञान, सम्यक्दर्शन, सम्यक्चारित्र ही मार्ग है। उसी से व्यक्ति मंजिल पाता रहा है और पा रहा है। जो इस पथ को सुव्यवस्थित रखता है, वह तीर्थ की भक्ति करने वाला, तीर्थ की शान्ति को बहाल कराने वाला माना जाता है। इससे विपरीत चाहे कोई कितना ही चले, कितना ही परिश्रम करे वह सारा का सारा व्यर्थ है। उसका मंजिल पाने में कोई उपयोग होने वाला नहीं है। मार्ग भी एक है, मंजिल भी एक है।

15.02.2017 फा. कृ. 5 बुधवार
साभार- उपांशु

श्रमणोपासक सदस्यता

आजीवन (अर्द्ध मूल्य)	
(केवल भारत में)	500/-
(विदेश हेतु)	10,000/-
वार्षिक	
(केवल भारत में)	60/-
(विदेश हेतु)	1,000/-
वाचनालय वार्षिक	
(केवल भारत में)	50/-
प्रस्तुत अंक मूल्य	10/-

साहित्य सदस्यता
15 वर्ष (केवल भारत में)
3,000/-

संघ सदस्यता
साधारण सदस्यता
500/-
आजीवन सदस्यता
5,000/-

सफल जीवन का मंत्र

-पटम पूज्य आचार्य प्रवट 1008 श्री टामलालजी म.सा.

जीवन सफल बनाना, प्रभु वीर जिनराज जी।
मन मंदिर में घुप्प अंधेरा, ज्ञान की ज्योति जगाना जी।।

हम प्रभु से जीवन सफल बनाने की कामना करते हैं और स्वीकार करते हैं कि हमारे मन में घोर अंधकार अर्थात् अज्ञान है। जब मन में घोर अंधकार है तो जीवन सफल कैसे बन सकता है? और जीवन को सफल बनाने के लिए प्रतीक्षा भी कब तक की जा सकती है, क्योंकि समय तो अबाध गति से बहता चला जा रहा है, वह न रुकता है, न उसे कोई रोक सकता है। जीवन सफल नहीं बन पा रहा है तो वह रुकेगा थोड़े ही। तब फिर जीवन सफल बनाने के लिए बिना अधिक समय खोए तुरन्त ही प्रयत्नशील हो जाना चाहिए। इस हेतु प्रभु की कृपा भी आवश्यक है। प्रभु की कृपा हो और मनुष्य प्रयासरत हो तो क्या प्राप्त नहीं किया जा सकता? जीवन सफलता की ओर ले जाने का इससे अच्छा और कोई मार्ग नहीं है। परन्तु प्रभु की कृपा तब फलवती होती है जब प्रयास किए जाएँ, पुरुषार्थ किया जाए, क्योंकि सोए हुए सिंह के मुँह में हिरण स्वयं तो घुस नहीं जाता। सामने परोसे गए व्यंजन भी तृप्ति तभी प्रदान करते हैं जब उन्हें हाथ से उठाकर मुँह में रखने का उपक्रम किया जाए।

जीवन की सफलता अथवा फल की प्राप्ति के लिए भगवान महावीर ने श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र में एक सूत्र दिया है- **'असंखयं जीवियं मा पमायए'**। वे कहते हैं कि प्रमाद मत करो, क्योंकि तुम्हारा जीवन असंस्कारित है। संसार में महिमा केवल संस्कारित की है। असंस्कारित धान यदि पेट में चला जाए तो वह शरीर को पुष्ट करने की अपेक्षा रोग उत्पन्न कर देता है। स्वर्ण जैसी मूल्यवान धातु का मान, मूल्य और सौंदर्य तभी बढ़ते हैं जब वह आग में तपाकर संस्कारित किया जाता है। इस हेतु उसे तप, छेद और कस, इन तीन अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है।

संस्कार जब इतने महत्त्वपूर्ण हैं तब हम देखें कि हमारा जीवन कैसा है, हम कैसे संस्कारों में जी रहे हैं। क्या हम स्वयं संस्कारित होने की दिशा में प्रयत्नशील हैं और क्या हमें संस्कारित बनने की चिन्ता भी है?

हम स्वयं को सभ्य नागरिक समझते हैं और ग्रामों अथवा जंगल में निवास करने वालों को असभ्य अथवा असंस्कारित कह देते हैं। आखिर ऐसा हम क्यों कह देते हैं? केवल बाहर से उन्हें देखकर। उनमें शिक्षा नहीं है, वे अंधविश्वासी हैं, उनकी रुचियाँ-आदतें परिष्कृत नहीं हैं और वे शिष्ट और मिष्ट भाषा का प्रयोग करना नहीं जानते, जैसा मन में आता है बोल देते हैं। ये सब तो उनको असंस्कृत कह देने का आधार नहीं हैं, क्योंकि इस दृष्टि से नगरों में रहने वाले तथाकथित प्रगतिशील लोग कहीं अधिक असंस्कारित हैं। हम देखें कि उनमें विद्या के साथ विनय आता है? क्या नया वैज्ञानिक चिन्तन उन्हें मानवतावादी बनाता है? क्या अच्छी, सुन्दर, उपयोगी और मूल्यवान वस्तुएँ रखकर वे व्यवहार में भी वैसे ही सुन्दर, दयालु और संवेदनशील बन पाते हैं? ऐसा तो कहीं नहीं है कि- 'स्वर्ण की जंजीर पहने श्वान फिर भी श्वान है'। कहीं शिष्ट और मिष्ट भाषा के पीछे उनके मन की कुरुचि, स्वार्थपरता, छल और चालाकी तो नहीं झांक रही है? ये सब सोचने की बाते हैं, क्योंकि पाखण्ड कभी संस्कृति नहीं बनता और सरलता एवं सहजता सदा संस्कारहीनता के चिह्न नहीं होते।

एक छोटे से उदाहरण द्वारा इस स्थिति को स्पष्ट किया जा सकता है। आप टी.वी. के कार्यक्रम देख रहे हैं, क्या आप या आपके बच्चे या आपके बुजुर्ग या घर स्त्रियाँ इस बात की चिन्ता करती हैं कि कैसे कार्यक्रम वे सभी एक साथ बैठकर देख रहे हैं? कार्यक्रम चाहे फूहड़ हो, चाहे अश्लील, चाहे दम्भ, पाखण्ड, हिंसा और व्यसनों को प्रदर्शित करने वाले हों, सब एक साथ बैठकर देखते हैं। क्या आँखों की लज्जा, उचित-अनुचित का विवेक और मन का संकोच, उनमें से किसी को कचोटता है कि वैसे कार्यक्रम या विज्ञापन साथ में बैठकर देखना उचित नहीं है। क्या हम बच्चों पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव और नारियों के शील को प्रभावित करने वाली स्थितियों को रोक सकते हैं? फिर यदि अपराध, व्यसन, निर्लज्जता और अशिष्टता का समाज में प्रसार हो तो उसके लिए दोषी कौन हुआ? प्रचार-प्रसार माध्यमों को अत्यन्त संस्कारित होना चाहिए, परन्तु जब उनके द्वारा परोसी गई असंस्कारित सामग्री का समाज उपभोग करेगा तब उसका स्वास्थ्य चौपट हो तो आश्चर्य कैसा? समाज में बढ़ते अपराध, व्यसन, असुरक्षा-भाव, अनैतिकता, अशांति और असंतोष अस्वस्थकर सामग्री को बिना विचार उदरस्थ कर जाने का ही परिणाम है।

हमें अपने संस्कारों की ओर देखना है। एक पिता बड़ी-बड़ी अभिलाषाएँ संजोता है कि मेरा पुत्र बड़ा होकर शिक्षित, विद्वान्, उदार, त्यागी बने अथवा अफसर, व्यापारी, नेता बने, परन्तु क्या वह यह देखता है कि उसकी स्वयं की मानसिकता अथवा चरित्र कैसा है? व्यसनी, अपराधी अथवा भ्रष्ट पिता अपने पुत्र में कभी अच्छे संस्कार डाल ही नहीं सकता। बालक में अनुकरण की प्रवृत्ति तो होती है, अपने आस-पास का वातावरण भी उसे गंभीरता से प्रभावित करता है। इसलिए यदि हम चाहते हैं कि उनका 'जीवन सफल' बने, संस्कारित बने, तो पहले हमें भी अपना जीवन संस्कारित करना होगा।

आज एक आम प्रवृत्ति बन गई है- परिस्थितियों को दोष देने की। हम कह देते हैं कि हम क्या करें, कुँए में ही भांग पड़ी हुई है, सारा वातावरण ही दूषित है। परन्तु यह न समस्या का समाधान है, न हमारी सदाशयता की सीमा। यदि एक-एक व्यक्ति यह विचार कर ले कि मुझे गलत काम नहीं करना है, व्यसनों के निकट नहीं जाना है, अपनी आदतें नहीं बिगाड़नी हैं, तो निश्चित है कि इसका प्रभाव हमारे आस-पास भी पड़ेगा। यह याद रखने की बात है कि सद्वृत्तियाँ भी संक्रामक होती हैं। चूंकि मनुष्य के पास हृदय होता है, जिसमें भावनाएँ पनपती हैं। आत्मा होती है, जिसमें कचोट होती है। जो सद्-असद् का विवेक करने की शक्ति देती है और चूंकि वह संवेदनहीन पशु नहीं होता इसलिए वह सद्वृत्तियों को अपनाना चाहता है। यह दूसरी बात है कि अनेक कारणों से वह भटक जाता हो। इस भटकन का इलाज है-प्रेरणा। हमें ज्ञात है कि प्रेरणा मनुष्य की वृत्तियों में आमूलचूल परिवर्तन ला सकती है। इस दृष्टि से परिवार में पिता अथवा मुखिया का बहुत बड़ा दायित्व होता है। उसके लिए आवश्यक है कि वह स्वयं न भटके, अपनी वृत्तियों को संस्कारित करे और अन्य सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बने। बड़ों में धार्मिक आस्था प्राथमिक आवश्यकता हैं। वे स्वयं स्वाध्याय करें और ज्ञान-सम्पन्न हों। परिवार के अन्य जन स्वत: ही उनका अनुकरण एवं अनुसरण करेंगे। हमारे समाज में स्वाध्याय की परम्परा लुप्त होती जा रही है, उसे पुनर्जीवित करना आवश्यक है। सत्-साहित्य का प्रचार सद्वृत्तियों के निर्माण में योग देता है। आजकल जो सस्ता साहित्य चल पड़ा है वह सुरुचि उत्पन्न करने वाला नहीं होता। व्यापक प्रचार के लिए उसे हल्का बनाया जाता है। इस प्रकार मनोरजंन के स्तर में भी गिरावट आई है। इस स्थिति के प्रति भी सतर्क रहने की आवश्यकता है।

तो बात जीवन को सफल बनाने की थी, जिसके लिए प्रभु के आशीर्वाद और उसकी कृपा की आवश्यकता भी बताई गई थी। प्रभु तो परमदयालु हैं ही, उनकी कृपा तो सदा, सर्वत्र, सभी पर रहती है, परन्तु उस पर सच्ची श्रद्धा भी तो होनी चाहिए। क्योंकि

कहते हैं- **'श्रद्धावान लभते ज्ञानं विश्वास फलदायकं'**, श्रद्धावान को ज्ञान प्राप्त होता है और विश्वास का फल प्राप्त होता है। परन्तु श्रद्धा और विश्वास के लिए मन का निर्मल होना अतिआवश्यक है। मन निर्मल होता है सुसंस्कारों से, सद्विचारों से और सद्-अभिलाषाओं से। इन तीनों का ध्यान रखें तो प्रभु की कृपा तो स्वत: प्रवाहित होगी ही साथ ही ज्ञान भी मिलेगा जो मन-मंदिर में व्याप्त घुप्प अंधकार को दूर करेगा और जब प्रकाश अबाध गति से जीवन में प्रवाहित होने लगेगा तब जीवन निश्चय ही सफल बन जाएगा। यही तो हमारी कामना है।

साभार-मंथन का नवनीत

नमस्कार महामंत्र का शुद्ध लेखन

(एकरूपता आवश्यक)

पंच परमेष्ठी नवकार महामंत्र अद्वितीय व अप्रतिम महामंत्र है। यह सर्वकालिक, सार्वदैशिक तथा सार्वभौमिक मंत्र है। नवकार महामंत्र के जप-ध्यान से अधमाधम प्राणी भी उत्तम बन जाते हैं। नवकार महामंत्र न सिर्फ मंत्र है अपितु अद्भुत जीवन्त प्रेरणा-स्रोत भी है। नवकार को अहोभाव से चिंतन व मनन करना पड़ता है। नवकार के साथ बर्फ ज्यों पिघल कर बहना पड़ता है। नवकार में डूबना पड़ता है तब जाकर आप और हम आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ तीर्थंकरों, भगवंतों के सान्निध्य में अपने कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ प्रतिज्ञ हो गतिमान है। आचार्य प्रवर के एक इशारे पर सम्पूर्ण संघ इंगित दिशा में गतिमान हो जाता है, जो हमारी संघ एवं गुरु के प्रति समर्पणा को प्रदर्शित करता है। इसी कड़ी में संघ द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि देशभर में स्थापित समता भवनों, स्थानकों एवं अन्य धर्मस्थलों में नवकार महामंत्र नीचे उल्लेखित प्रारूप में शुद्ध स्वरूप में अंकित किया जाए, जिससे सब जगह एकरूपता नजर आए। यदि धर्मस्थल पर नवकार महामंत्र पूर्व में ही अंकित है तो उसे यहाँ उल्लेखित नवकार महामंत्र से मिलान कर पूर्ण शुद्ध करने का लक्ष्य रखें।

अनेक स्थानों पर नवकार महामंत्र में अशुद्धियाँ परिलक्षित हुई हैं, जिनमें कुछ प्रमुख हैं-

अशुद्ध	शुद्ध
सव्व साहूणं	सव्वसाहूणं
पंच नमोक्कारो	पंचनमोक्कारो
सव्व पावप्पणासणो	सव्वपावप्पणासणो
पढ़मं	पढमं
हवई	हवइ
मंगलम्	मंगलं

विशेष- इस सम्बन्ध में श्रमणोपासक जून 2021 (संयुक्तांक) अंक के पेज नं. 36 पर प्रकाशित आलेख ''एसो पंचनमोक्कारो'' विशेष पठनीय है।

नमस्कार महामंत्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंचनमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

कुल शब्द संख्या = बीस (20)

साभार- जैन सिद्धान्त मंजूषा

निश्चल कांकरिया
राष्ट्रीय महामंत्री
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

महत्तम महोत्सव

(13 जुलाई 2022-9 फरवरी 2025)

टीम महत्तम महोत्सव,
श्री अ.भा.सा. जैन संघ

रत्नत्रय के महान आराधक, युगनिर्माता, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक **परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.** के संयमी जीवन को 50 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं, जो कि एक स्वर्णिम इतिहास का परिचायक है।

परम पूज्य आचार्य भगवन् ने अपना सम्पूर्ण जीवन संयम की उत्कृष्ट पालना करते हुए जन-जन के आत्मकल्याण हेतु समर्पित किया है। हम सभी का परम सौभाग्य है कि हमें ऐसे परम प्रतापी आचार्य भगवन् का 50वाँ दीक्षा दिवस **'महत्तम महोत्सव'** के रूप में मनाने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ आचार्य श्री रामेश के 50वें दीक्षा दिवस को ''**आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव**'' के रूप में मनाने जा रहा है। यह महामहोत्सव आषाढ़ी पूर्णिमा संवत् 2079 तदनुसार दिनांक 13 जुलाई 2022 से प्रारंभ होकर माघ सुदी 12 संवत् 2081 तदनुसार दिनांक 09 फरवरी 2025 तक लगभग 31 माह तक तप-त्याग, ज्ञान-आराधना करते हुए मनाया जाएगा।

अत: हम सभी का यह कर्त्तव्य है कि हम स्वयं तो इस महा महोत्सव के साक्षी बनें ही परन्तु इसे और भव्य बनाने हेतु सकल समाज को इससे जोड़ें, जैन-जैनेत्तर सभी को इस महा-महोत्सव का अंग बनाएँ, जिससे यह महा-महोत्सव इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो।

महत्तम महोत्सव के विभिन्न प्रकल्पों को नौ मुख्य भागों में विभक्त किया गया है-

1. ज्ञानार्जन, 2. स्वाध्याय, 3. तप-त्याग, 4. व्रत विवेक, 5. संस्कार (18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों हेतु), 6. जन-जन में राम, 7. संघ विस्तार एवं सशक्तिकरण, 8. सामाजिक, 9. गुदड़ी के लाल : (छुपी हुई प्रतिभाओं को सामने आने का अवसर देना)

नोट : 'महत्तम महोत्सव' के अंतर्गत आने वाले सभी प्रकल्पों की विशेष जानकारी समय-समय पर मुखपत्र द्वारा अवगत करा दी जाएगी। (विस्तृत जानकारी के लिए 7676650292 पर सम्पर्क करें।)

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव (महत्तम महोत्सव) का शुभारंभ आषाढ़ सुदी 15 संवत् 2079 तदनुसार दिनांक 13 जुलाई 2022, बुधवार को सभी स्थानीय संघों एवं पूरे राष्ट्र में एकरूपता के साथ होगा, जिसकी विस्तृत जानकारी शीघ्र ही सभी स्थानीय अध्यक्ष, मंत्री तक संघ के माध्यम से पहुँचा दी जाएगी।

महत्तम महोत्सव के अंतर्गत अभी तक शुरू किए गए प्रकल्प

1. **कर्मतत्त्वज्ञ :** कर्मग्रंथ भाग-6 तक के ज्ञान को समाहित किए हुए कर्मप्रज्ञप्ति पर आधारित यह कोर्स सिर्फ पुरुष वर्ग के लिए है, जिसका लक्ष्य 50 जानकार श्रावक तैयार करना है।
2. **श्रुत आरोहक :** श्रुत की आराधना करके श्रुत आरोहक बनना। आगम, थोकड़े, कर्म, सामान्यज्ञान से सुसज्जित ज्ञानवर्द्धक 3 वर्षीय पाठ्यक्रम सभी उम्र के श्रावक-श्राविका वर्ग के लिए है।

विशेष : 1. रजिस्ट्रेशन फॉर्म भरने पर कोर्स की पुस्तक आपके दिए गए पते पर भिजवा दी जाएगी।

2. अनन्य महोत्सव के अंतर्गत हुई श्रुत आराधक के परीक्षार्थी भी यह परीक्षा दे सकते हैं। उनके लिए स्पेशल रिविजन सेक्शन तैयार किया गया है।
3. 16 अक्टूबर 2022 (प्री-टेस्ट), 12 मार्च 2023 (प्री टेस्ट), 25 जून 2023 (फाईनल एग्जाम)
4. इस परीक्षा से जुड़ने के लिए ऑनलाईन/ऑफलाईन फॉर्म भर सकते हैं।
5. गूगल लिंक व फोटोकॉपी दोनो प्रतियाँ मान्य होगी।

आईए मनाएँ मिलकर महोत्सव महत्तम! यही होगी गुरुचरणों में भेंट सर्वोत्तम!!

श्रमणोपासक हैडलाईन्स

(1) बापजी महाराज शासन प्रभावक श्री सेवन्तमुनिजी म.सा. का संथारा सहित महाप्रयाण, तीनों मनोरथ पूर्ण किए। जन-जन शोक संतप्त।

(2) साध्वी श्री कल्पमणिजी म.सा. के संथारा सहित महाप्रयाण पर भावभीनी श्रद्धांजलि।

(3) वीर बाला मुमुक्षु आयुषीजी मेहता की जैन भागवती दीक्षा सादगीपूर्ण तरीके से सम्पन्न। नवीन नामकरण साध्वी श्री आगमश्रीजी म.सा. हुआ।

(4) आचार्य प्रवर सहित महापुरुषों के पावन चरण बढ़ रहे झीलों की नगरी की ओर। पलक-पावड़े बिछाए बैठी है धर्मप्रेमी जनता।

(5) अपने गुरु की जन्मभूमि दांता को अध्यात्म के रंग में रंगने पहुँचे नानेश पट्टधर।

(6) साधुमार्गी संघ धार्मिक ही नहीं, सामाजिक स्तर पर भी ऊँचाइयां छू रहा है -लहरसिंहजी सिरोया, मनोनीत राज्यसभा सदस्य। राजेन्द्रजी ढ़ोलकियाजी बने कैबिनेट मंत्री।

(7) अभिनवजी जैन ने आईएएस परीक्षा में 14वीं रैंक प्राप्त कर संघ को किया गौरवान्वित।

(8) श्रमणोपासक मुखपत्र कर रहा है विशेषांक का आगाज, ''श्रावकाचार व सम्यक्त्व'' रहेगा विषय।

(9) नवकार महामंत्र का शुद्ध उच्चारण व लेखनी के लिए जन-जन से अपील, कृपया अपने आस-पास के धर्मस्थानों में शीघ्रातिशीघ्र शुद्ध लेखन करवाएँ।

(10) जैन अल्पसंख्यक इकाई द्वारा सरकारी योजना ''पढ़ो परदेश योजना'' के बारे में विस्तृत जानकारी मोटिवेशनल फोरम देगा ।

(11) महिला समिति अपनी विभिन्न प्रवृत्तियों द्वारा महिलाओं में ज्ञान-ध्यान व संघ समर्पणा का बीज अंकुरित कर रही है। नई बहुओं को जोड़ने का है लक्ष्य।

(12) समता युवा संघ बन रहा संघ स्तम्भ। समता शाखा, अन्नदानम् आदि कार्यक्रमों द्वारा जन-जन में उत्साह व जागरुकता का हो रहा संचार।

(13) 13 जुलाई को होगा ''महत्तम महोत्सव'' का आगाज। सभी स्थानीय संघ एकरूपता से करेंगे शुभारंभ।

(14) महत्तम महोत्सव के अन्तर्गत प्रथम पाठ्यक्रम 'श्रुत आरोहक' का रजिस्ट्रेशन प्रारंभ। स्वयं भी जुड़ें, औरों को भी जोड़ें।

युगनिर्माता, परमागम रहस्य ज्ञाता आचार्य श्री रामेश एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर द्वारा मेवाड़ क्षेत्र की वीर भूमि पर जिनशासन की अद्भुत प्रभावना से जन-जन प्रभावित : दीक्षार्थी बहिन आयुषी मेहता की आडम्बर रहित दीक्षा सम्पन्न : शासन प्रभावक श्री सेवन्तमुनिजी म.सा. एवं साध्वी श्री कल्पमणिजी म.सा. को भावभीनी श्रद्धांजलि

हिंसा से अहिंसा की यात्रा दीक्षा है -आचार्य श्री रामेश

कपासन, रडियारड़ी, नानेशनगर (दांता), उमण्ड, करूंकड़ा, आकोला, भोपालसागर।

गुरु शम दम उपकारी हैं, चरण इनके मंगलकारी हैं।

युगनिर्माता, आगमज्ञाता, नानेश पट्टधर आराध्यदेव आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा का मेवाड़ की पावन भूमि को अपने चरणकमलों से निरन्तर पावन-पवित्र कर रहे हैं। जिनशासन से प्रभावित होकर जैन-जैनेत्तर जनता नतमस्तक हो रही है।

आचार्यदेव एवं सहवर्ती चारित्रात्माओं के पावन चरण वर्ष 2022 चातुर्मास हेतु उदयपुर की ओर शनैः-शनैः गतिमान हैं। उदयपुर की धर्मप्रेमी जनता पलक पांवड़े बिछाई हुई है।

01 जून 2022, कपासन (चित्तौड़गढ़)। प्रातः मंगलमय प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। ओसवाल पंचायती नोहरा में आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए नानेश पट्टधर, युगपुरुष आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**समस्या जहाँ है, वहाँ समाधान भी है। कहा गया है कि अच्छे कार्य में विघ्न आते हैं। जो कठिनाई को कठिनाई मानकर रुक जाता है वह मंजिल को प्राप्त नहीं कर सकता है। नाना गुरु ने जब दीक्षा से पूर्व कन्हैयालालजी पोखरना के साथ साझे का व्यापार प्रारंभ किया तब उन्होंने चिन्तन रूप में कहा कि जिस समय मुझे गुस्सा आ जाए उस समय तुम मौन रहना और जब तुझे गुस्सा आएगा तब मैं मौन रहूँगा। घर-परिवार, समाज अगर नाना गुरु के इस चिन्तन व सूत्र को स्वीकार कर लेते हैं तो अशान्ति नहीं आएगी। दूसरा कोई गुस्सा करे तो हम मौन रह जाएँ।**'' आचार्य भगवन् के प्रभावी वचनों से तत्काल उसी समय कई भाई-बहिनों ने एक माह के लिए, एक सप्ताह के लिए गुस्सा नहीं करने का नियम लिया।

भगवन् ने आगे फरमाया कि **जहाँ भोजन बनता है और जहाँ भोजन करते हैं वहाँ कभी भी गुस्सा नहीं करना। हमारे मन की कमजोरी के कारण विघ्न आ जाता है। 'आत्मबल' सब बलों का सरदार है। आत्मबल मजबूत है तो सारे विघ्न दूर होते जाएंगे। नाना गुरु को भी बहुत सारी कठिनाइयाँ आईं। घर वाले दीक्षा के लिए तैयार नहीं हुए, पिताजी का स्वर्गवास हो गया, छोटी उम्र में जिम्मेदारी का निर्वहन करना पड़ा। फिर दीक्षा ग्रहण की और निरंतर आगे बढ़ते चले गए। मनोबल दृढ़ होने से सफलता चरण चूमती है। सफलता के लिए एक लक्ष्य होना बहुत जरूरी है।**

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने जैसे ही **''नाना गुरु दर्श दिखा जाओ, भक्तों का दिल यह बोल रहा।''** गीत प्रस्तुत किया पूरा माहौल नानामय हो गया।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि छठे आरे का वर्णन सुनकर 'नाना गुरु' को वैराग्य आया था। आज जीवों के प्रति हमारी संवेदना शून्य हो रही है। दया-करुणा सूख रही है। पाप की प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही है। छह काय के जीवों के प्रति हमारा दया भाव, करुणा होनी चाहिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री समताश्रीजी म.सा. ने गुरुभक्ति गीत का संगान किया। संघ मंत्रीजी ने महापुरुषों के सान्निध्य का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाने की अपील की। माह में एक दिन मोबाइल का त्याग कई लोगों ने किया।

महासती श्री किरणप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा का गुरुचरणों में पधारना हुआ। मेवाड़ व देश के अनेक क्षेत्रों से श्रद्धालु धर्मप्रेमी भाई-बहिनों ने गुरुदर्शन, सेवा का लाभ लिया। दोपहर में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

इसी बीच मंदसौर में महासती श्री कल्पमणिजी म.सा. के देवलोकगमन के समाचार प्राप्त हुए।

रात्रि में प्रतिक्रमण में लोगों की उपस्थिति देखते ही बनती थी। श्री गुणीशमुनिजी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी की समझाइश दी।

महान् साधिका श्री कल्पमणिजी म.सा. को श्रद्धांजलि अर्पित

महासतीजी के देवलोक गमन पर आचार्य प्रवर का उद्‌बोधन

फूल मुरझाने के बाद खुशबू रह जाती है। व्यक्ति के चले जाने के बाद स्मृतिशेष रह जाती है।।

2 जून 2022, कपासन। युगनिर्माता आचार्य श्री रामलालजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महान् संयम साधिका साध्वी श्री कल्पमणिजी म.सा. के मंदसौर में देवलोकगमन के समाचार प्राप्त होने पर श्री साधुमार्गी जैन संघ, सकल जैन समाज द्वारा समता भवन में उनके गुणों का स्मरण करते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इस अवसर पर गंभीर मुद्रा में आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य वाणी में फरमाया कि ''**ग्रभादेवी-सुंदरलालजी कच्छारा-पियलियामंडी की वीर बाला साध्वी श्री कल्पमणिजी म.सा. ने संयम साधना को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। तलवार की धार पर चलना, लोहे के चने चबाना दुष्कर है, किन्तु भावों से साधु जीवन की आराधना करते हुए तीर्थंकरों की आज्ञा पर चलना महादुष्कर है। नाना गुरु के सान्निध्य में 25 दीक्षाओं के प्रसंग पर उन्होंने दीक्षा ग्रहण की। किरण कच्छारा को नया नाम दिया गया 'साध्वी श्री कल्पमणिजी म.सा.' 38 वर्ष उत्कृष्ट संयम साधना की। नहीं लग रहा था कि इतने जल्दी चले जाएँगे। यह हमारी सोच है, दृष्टि है किन्तु यथासमय मौत अपना शिकार ढूंढ ही लेती है। यह तो होना ही था, यह समय सबका आने वाला है। महासती श्री कल्पमणिजी म.सा. का व्यक्तित्व अद्‌भुत था। सेवा का समय है तो सेवा के लिए तैयार, व्याख्यान का समय है तो व्याख्यान देने के लिए तैयार, ज्ञान-ध्यान सिखाना हो तो उसके लिए तैयार, गोचरी-पानी लाना हो तो उसके लिए तैयार। व्यक्ति को ऐसा होना चाहिए कि उसके मुँह से 'ना' नहीं निकलें। हर काम के लिए तैयार रहे। ''यह तो मेरे से नहीं हो सकता, यह होना मुश्किल है'' यदि ये चीजें हमारे लिए मुश्किल हैं तो मोक्ष कैसे होगा? साधु हो या साध्वी-श्रावक हो या श्राविका परिवार का, घर का, समाज का, किसी का भी काम हो तो हमारे मुँह से यह नहीं निकले कि हमारे लिए यह मुश्किल है। जो कठिनाई के रास्ते पर चलने के लिए तैयार नहीं होगा, उसको कभी भी किसी कार्य में सफल होने की अभिलाषा नहीं रखनी चाहिए। एक भी गुण, एक भी प्रेरणा आज के इस प्रसंग से अगर हम लेते हैं तो हमारे जीवन के लिए पाथेय बनेगा।**''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने अपने भावोद्‌गार में फरमाया कि **''हर क्षण हम मौत के मुँह में जा रहे हैं। हर रोज हम मर रहे हैं। जो अच्छा कर रहे हैं, निर्भय हैं और जो बुरा कर रहे हैं, वे भयभीत हैं। जो चिपक रहा है वह भयभीत है, जो बिछड़ रहा है वह निर्भय है। शिष्य कह रहा है- गुरुदेव बड़ी कृपा की आपने। मैं कल मर रहा था, मैं मर रहा हूँ, मैं कल मरूंगा किन्तु मैं परसों अमर बन जाऊँगा।''**

श्री आदित्य मुनिजी म.सा. ने **''भक्ति करता म्हारा प्राण प्रभु एवो मांगू छू रहे जन्मों-जन्म थारो साथ''** भाव गीतिका प्रस्तुत करते हुए साध्वीजी की उत्कृष्ट संयम आराधना, सेवा, सरलता, सहनशीलता आदि गुणों को सभी के लिए प्रेरणास्रोत बताया।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि यह जीवन कर्मों को बांधने के लिए नहीं, कर्मों को तोड़ने के लिए मिला है। साध्वी श्री मर्यादाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री प्रसिद्धिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुरिद्धिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री भावनाश्रीजी म.सा. आदि ने साध्वीजी को संयम, सजगता, उत्कृष्ट सेवा भावना, विनय, माधुर्यता, सरलता आदि गुणों का पूँज बताया।

महेश नाहटा सहित अनेक संघ प्रमुखों ने साध्वीजी के देवलोकगमन को शासन की अपूर्ण क्षति बताया। चार-चार लोगस्स का ध्यान किया गया। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में ज्ञानचर्चा हुई।

03 जून 22 कपासन। समता भवन में प्रात: मंगल प्रार्थना श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। ओसवाल पंचायती नोहरा में धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**धर्म 'चर्चा' का विषय नहीं अपितु धर्म 'चर्या' का विषय है। जो धर्म में जीना सीख जाए तो धर्म सच्चा सुख देने वाला है। धर्म सत्य है। सत्य पर विश्वास है, भरोसा है। 'सत्यमेव जयते' भारत का शाश्वत सिद्धांत रहा है। शील, सत्य साथ हैं तो किस चीज की जरूरत है? जो असत्य में जीएगा उसके मन में भय रहेगा। मन की सुदृढ़ता सत्य से होती है। फिर इहलोक, परलोक, आजाविका लोक किसी का भी भय नहीं होगा। धर्म में जीएंगे तो शांति, समाधि मिलेगी और अधर्म में जीएंगे तो अशांति-तनाव रहेगा।**''

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य श्री रामेश द्वारा **'आध्यात्मिक आरोग्यम्'** के नौ बिन्दु में प्रथम बिन्दु-गुणमय दृष्टि का विकास, दूसरा बिन्दु छिद्रांवेषण का त्याग करें। न किसी का दोष देखें, न किसी के दोषों का प्रचार करें। छिद्रान्वेषी हमेशा बुराई देखता है, बुराई करता है। छिद्रान्वेषी दूसरे के राई जितने दोष को पहाड़ बना देता है। दोष और गुण किसमें नहीं हैं? हम अपनी आदत बदलें और सदैव अच्छाई की ओर देखें। एक सप्ताह तक किसी की बुराई नहीं करना, बुराई नहीं देखने का संकल्प सभा में उपस्थित लोगों ने लिया।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि ईर्ष्यालु व्यक्ति दूसरे की बढ़ती को नहीं देख पाता है। हमें स्नेह, प्रेम, सद्‌भाव की भावना को विस्तार रूप देना है।

शासन दीपिका साध्वी श्री समताश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। दर्शनार्थियों का आवागमन दिनभर जारी रहा। परम गुरुभक्त रोड़ीलालजी भंसाली-आवरीमाता के निधन पर परिवारिकजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति प्राप्त की।

दोपहर में गुरु-भगवंतों के पावन सान्निध्य में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए। कमलाबाई भंसाली-आसावरा ने तेले तप का प्रत्याख्यान लिया।

अनुपम दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री रामेश के मुखारविंद से मुमुक्षु आयुषी मेहता की आडम्बर रहित सादगी पूर्ण दीक्षा सौल्लास सम्पन्न

नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री आगमश्रीजी म.सा.

दीक्षा आत्मा को जगाने का प्रसंग है -आचार्य श्री रामेश

4 जून 2022, कपासन। समता विभूति 1008 आचार्य श्री नानालालजी म.सा. की दीक्षा स्थली कपासन के ओसवाल पंचायती नोहरा में चौबीस वर्षीय वीरबाला सांसारिक सुखों-भोगों व टी.वी., मोबाइल, लेपटॉप को दरकिनार कर कठोर संयम साधना के पथ पर आगे बढ़ गई।

नानेश पट्टधर, अनुपम दीक्षा प्रदाता, युगनिर्माता, निर्लिप्त आध्यात्म योगी, आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में बालाघाट (मध्यप्रदेश) की बी.बी.ए. योगा डिप्लोमाधारी 24 वर्षीय वीरबाला कुमारी आयुषी मेहता (मूथा) सुपुत्री श्री कुशलचन्द्रजी-नीतादेवी मेहता-बालाघाट की जैन भागवती दीक्षा अपार जनमैदिनी की उपस्थिति में अत्यंत सादगीपूर्ण रूप से सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर परम प्रतापी आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि ''**आज का प्रसंग आत्मा को जगाने का प्रसंग है, हिंसा से अहिंसा की ओर जाने का प्रसंग है। धर्म हिंसा में नहीं, अहिंसा में होता है। हिंसा से जो हमारी आत्मा मलिन हुई है, आत्मा पर जो कर्मों का लेप लगा है उसको धोना पड़ेगा। इसलिए धर्म का मर्म बताया है- ''अहिंसा संजमो तवो''। बिना संयम अहिंसा नहीं हो पाएगी और संयम के लिए तप की आवश्यकता होगी। जब तक हमारा स्वयं पर नियंत्रण नहीं होगा तब तक धर्म और संयम की आराधना नहीं हो पाएगी। संयम की आराधना करने के लिए अपने आप पर नियंत्रण होना जरूरी है। अपने आप पर नियंत्रण का मतलब है पाँचों इंद्रियों पर नियंत्रण, अपने मन पर नियंत्रण। अभी बहिनें बता गई कि मोबाइल के युग में, सेल्फी के युग में इन्होंने सेल्फ धर्म अपना लिया। यही है मन की जीत, स्वयं पर नियंत्रण।**''

आचार्य भगवन् ने नाना गुरु की दीक्षा स्थली पर आज के प्रसंग से दीक्षा के भाव भीतर से जगाने की प्रेरणा देते हुए फरमाया कि **''वह दिन धन्य होगा जब हमारे जीवन में यह अवसर आएगा।''**

आचार्य भगवन् ने 10:10 बजे पर दीक्षा विधि प्रारम्भ की। सर्वप्रथम दीक्षार्थी बहिन ने जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिए क्षमायाचना की। तत्पश्चात् भगवन् ने दीक्षा हेतु दीक्षार्थी परिजनों, श्रीसंघ कपासन, श्री अ.भा.सा. जैन संघ एवं उपस्थित जनता से स्वीकृति मांगी। सभी ने हाथ उठाकर स्वीकृति प्रदान कर दीक्षा अनुमोदना की। आचार्य भगवन् ने 10:20 बजे करेमि भंते के पाठ से सम्पूर्ण पापों एवं सावद्य क्रिया का त्याग कराकर नवकार महामंत्र के पाँचवें पद ''नमो लोए सव्वसाहूणं'' पद पर आरूढ़ किया। नए नामकरण **नवदीक्षिता साध्वी श्री आगमश्रीजी म.सा.** के नाम की जैसे ही घोषणा हुई पूरी सभा हर्ष-हर्ष जय-जय की ध्वनि से गूंज उठी। साध्वी मंडल ने **''बधाई हो बधाई रामगुरु को बधाई हो'' ''शासन गरिमा बढ़ाई है, बढ़ाई है''** गीतिका प्रस्तुत कर माहौल सरस बना दिया। केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका महासती श्री समताश्रीजी म.सा. ने सम्पन्न किया। वीरमाता नीताजी मेहता एवं वीर भाभी सिद्धीजी मेहता ने सुंदर भावाभिव्यक्ति में संयम गीत प्रस्तुत किया। संघ अध्यक्षजी, मंत्रीजी एवं महेश नाहटा ने इस दीक्षा प्रसंग को ऐतिहासिक, अलौकिक, अविस्मरणीय निरूपित किया।

मुमुक्षु आयुषी मेहता ने **'बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन'** की डिग्री लेने के बाद ऋषिकेश से योगा में डिप्लोमा किया। बतौर योग ट्रेनर काम करते वह योग सिखाने विदेश भी जाना चाहती थी। इस हेतु उनका पासपोर्ट भी बन गया और चीन से जॉब ऑफर भी आ गया था। लॉकडाऊन के दौरान बालाघाट में आचार्य श्री रामेश की आज्ञानुवर्तिनी शासन दीपिका साध्वी श्री सुजाताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री पल्लवीश्रीजी म.सा. के सम्पर्क में रहने से आपको वैराग्य उत्पन्न हो गया। दो साल वैराग्य जीवन व्यतीत किया। **'आरुग्गबोहिलाभं'** में रहकर आपने अपने ज्ञान-ध्यान व प्रतिभा को आगे बढ़ाया।

आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर की उत्कृष्ट संयम साधना से प्रभावित होकर वीतराग पथ पर आगे बढ़ने हेतु अपना संकल्प मजबूत किया। परिजनों ने सहज स्वीकृति प्रदान की। दीक्षा कार्यक्रम बिना किसी अभिनंदन समारोह, वरघोड़ा, बिंदोली आदि रस्मों व प्रचार से दूर आडम्बर रहित सादगीपूर्ण रूप से सम्पन्न हुआ।

आचार्य भगवन् के श्रीमुख से मुमुक्षु प्रियंका ललितकुमारजी भटेवरा-पुणे की दीक्षा 11 अक्टूबर को उदयपुर के लिए घोषित होते ही चहुंओर जय-जयकार व केसरिया-केसरिया की गूंज लहलहाने लगी।

दीक्षा से पूर्व साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् हमें विभाव से स्वभाव में लाने की प्रेरणा निरंतर दे रहे हैं। साध्वी श्री निखारश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य भगवन् के प्रवचनों में यह बात कहीं न कहीं स्पष्ट हो जाती है कि हम इच्छाओं से ऊपर उठने का प्रयत्न करें तभी हमें शांति और समाधि मिलेगी।

साध्वी श्री प्रसिद्धिश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि फूल की बात करें तो बैंगलोर की याद आती है। डायमण्ड की बात करें तो सूरत की याद आती है। झीलों की बात करें तो उदयपुर की याद आती है। ज्ञान, क्रिया, तप-त्याग संयम और अनुशासन की बात करें तो 'गुरु राम' की याद आती है।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने दुर्लभ मानव जीवन में संयम, तप, स्वाध्याय, ज्ञान-ध्यान की ज्योति जलाने की अद्भुत प्रेरणा दी। शासन दीपिका महासती श्री समताश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने **''कितना सुंदर है शासन प्रभु महावीर का शासन''** भाव गीतिका प्रस्तुत की।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षाजी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षजी सहित कपासन, मेवाड़ व देश के अनेक स्थानों के धर्मप्रेमी भाई-बहिनों ने दीक्षा साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। यह अनूठी दीक्षा कपासन व संघ के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गई।

श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता युवा संघ, समता महिला मंडल एवं श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा दोपहर में 2 बजे दीक्षार्थी परिजनों का शानदार अभिनंदन एवं स्वागत माहेश्वरी पंचायत भवन में संघ राष्ट्रीय अध्यक्षजी, महिला समिति राष्ट्रीय अध्यक्षजी एवं अनेक गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में हुआ।

प्रारम्भ में महिला मण्डल ने मंगलाचरण व स्वागत गीत प्रस्तुत किया। स्वागत भाषण स्थानीय संघ अध्यक्षजी ने दिया। दीक्षार्थी पारिवारिकजनों का सम्मान शॉल ओढ़ाकर, माला पहनाकर संघ पदाधिकारियों द्वारा अभिनंदन किया गया। अतिथियों ने अपने उद्बोधन में दीक्षार्थी बहिन के साहसिक निर्णय की सराहना करते हुए आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के उपकारों के प्रति अहोभाव व्यक्त किया।

05 जून। रडियारडी में आचार्य भगवन् उपाध्याय प्रवर आदि का मंगल पदार्पण जय-जयकारों के साथ हुआ। राष्ट्रीय संघ, युवा संघ व महिला समिति के पदाधिकारियों ने गुरु भगवन् सहित समस्त चारित्रात्माओं का सान्निध्य प्राप्त किया। छोटे से गाँव के ग्रामीण भाईयों की सेवा सराहनीय थी। आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर छोटे-छोटे क्षेत्रों में भी

धर्म की प्रभावना कर धर्म का बीज अंकुरित कर रहे हैं।

06 जून, नानेशनगर (दांता)। समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, धर्मपाल प्रतिबोधक, आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा. की पावन जन्मभूमि नानेशनगर (दांता) में उन्हीं के पट्टधर, युगपुरुष आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. का **''नाना गुरु ने क्या दिया राम दिया भई राम दिया! संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं! संकट मेटे दो ये नाम, जय गुरु नाना! जय गुरु राम!''** आदि गगनभेदी जयघोषों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट, नानेशनगर के आराधना भवन में श्री मयंकमुनिजी म.सा. ने मंगलमय प्रार्थना कराई। आराध्यदेव ने आशीर्वाद स्वरूप मंगल पाठ प्रदान किया।

इस अवसर पर संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी एवं द्वय पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षों सहित अनेक गणमान्यजन काफी संख्या में उपस्थित थे। संघ के गणमान्य सदस्यों ने आचार्य भगवन् के प्रति अपने अहोभाव प्रकट किया। मेवाड़ के अनेक क्षेत्रों से श्रद्धालु उपस्थित हुए।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री आदर्शमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि सुखी बनना चाहते हैं तो भीतर में जितनी भी प्रतिक्रियाएँ उठ रही हैं उन्हें शांत करना सीखो। दूसरों को बदलने के पहले स्वयं को बदलो। सामने वाला झुके या ना झुके हम झुक जाएँ। दुनिया में किसी का अभिमान नहीं रहा। 'रावण जैसे चले गए, फिर तेरी भला कौन हस्ती।' आचार्य नानेश ने समता का सिर्फ उपदेश नहीं दिया अपितु समतामय जीवन जीया। आचार्य श्री नानेश के जीवन में आत्मिक शांति की धारा बहती थी। आचार्य श्री नानेश के समता दर्शन को घर, परिवार, समाज, देश अपना ले तो सभी का कल्याण हो जाएगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री समताश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने भजन **''नाना गुरु की जन्मभूमि में रामगुरु पधारे हैं''** प्रस्तुत कर पूरे वातावरण को 'राम गुरुमय' कर दिया।

महासती श्री प्रसिद्धिश्रीजी म.सा के **''ओ मेरे नाना प्रीति बढ़ाना है, हर पल साथ निभाना है''** गीतिका प्रस्तुत की। महेश नाहटा ने आचार्य श्री नानेश-रामेश की महिमा का बखान किया। गाँव में रहते हुए एक बार धर्म स्थानक में आने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया। प्रतिदिन धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने की घोषणा की गई।

दोपहर में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तर आदि हुए। राष्ट्रीय पदाधिकारियों सहित आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट के ट्रस्टीगणों, सदस्यों एवं कर्मचारियों ने गुरु सेवा का लाभ लिया। गुणशील के संकल्प हुए।

07 जून, उमंड। आराध्यदेव आचार्य भगवन् का शिष्य मंडली सहित दांता से उमंड में जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। जैन स्थानक में धर्मसभा को संबोधित करते हुए परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि **''आत्मबल अगर मजबूत है, सुदृढ़ है तो सारे विघ्न टल जाते हैं। साथ ही कार्य शीघ्र ही पूर्ण हो जाते हैं। धुन का धनी ही अपनी मंजिल को प्राप्त कर सकता है। आत्मबल ही हर कार्य को सफलता दिलाने में समर्थ है।''**

श्री मयंकमुनिजी म.सा. ने देव-गुरु-धर्म की महिमा की व्याख्या की। स्थानीय गुरुभक्त ने आचार्य भगवन् के आगमन पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि आज भक्तों के भगवान पधारे हैं। घर में रहते धोवन पानी पीने का नियम कई अनेक जनों ने लिया। बाहर से दर्शनार्थियों का तांता लगा रहा। दोपहर में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी हुए।

समता विभूति आचार्य श्री नानेश के प्रथम शिष्य शासन प्रभावक श्री सेवंतमुनिजी म.सा. को श्रद्धांजलि अर्पित

श्री सेवंतमुनिजी म.सा. अप्रमत्त साधक थे -आचार्य श्री रामेश

नाना गुरु के शिष्य प्रथम हो, शासन को चमकाया। विनय, सरलता और साधना से जीवन को सजाया।।
सरसब्ज किया अपने ज्ञान से नाना-राम गुरु की बगिया को। आज अलविदा हुए इससे उदासी सब मन छाई।।

करूंकड़ा। समता विभूति आचार्य श्री नानेश के प्रथम शिष्य शासन प्रभावक श्री सेवंतमुनिजी म.सा. (बापजी महाराज) के ब्यावर में संथारापूर्वक महाप्रयाण के समाचार प्राप्त होने पर श्रीसंघ द्वारा चतुर्विध संघ की उपस्थिति में उनके दिव्य गुणों का स्मरण करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इस अवसर पर गंभीर मुद्रा में आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य वाणी में फरमाया कि ''**शासन प्रभावक श्री सेवंतमुनिजी म.सा. को हमने कई रूपों में देखा। नाना गुरु की कृपा प्राप्त करते हुए, उनकी सेवा करते हुए, अप्रमत्त साधना करते हुए। तीन संत जिन्हें नाना गुरु देवता कहते थे। पहले श्री सेवंतमुनिजी म.सा., दूसरे श्री रमेशमुनिजी म.सा. और तीसरे श्री प्रशममुनिजी म.सा.। देवता यानी सरल आत्मा। श्री सेवंतमुनिजी म.सा. बहुत ही सरल और भद्रिक थे। वे शासन गौरव थे। उन्होंने शासन की खूब प्रभावना की। आप महान् क्रांतिकारी श्री गणेशलालजी म.सा. के सान्निध्य में तत्कालीन युवाचार्य श्री नानालालजी म.सा. से दीक्षित थे। आस्था, समर्पणा, भक्ति ये तीनों गुण आप में समाहित थे। आपका श्री विनयमुनिजी म.सा. की दीक्षा में काफी योगदान रहा। श्री सेवंतमुनिजी म.सा. ने अपने तीनों मनोरथ पूर्ण कर जीवन को सफल और सार्थक किया। हमारी जितनी इच्छा प्रबल होती है उतना ही मन चंचल होता जाता है। संलेखना-संथारा करने वाला आशाओं पर विजय प्राप्त करता है। श्रुतज्ञान, विनय, आचार, तपस्या इन चार के माध्यम से हम अपनी समाधि प्राप्त कर सकते हैं। हमें अमूल्य मनुष्य जन्म मिला है। कषायों का शमन कर हम भी समाधि प्राप्त करें।**''

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि 'नाना गुरु' को श्री सेवंतमुनिजी म.सा. पर बहुत भरोसा था। कभी गोचरी में आहार बढ़ जाता तो नाना गुरु कहते तो वे ले लेते थे। वे अनेक गुणों के धनी थे। तपस्या से भी उन्होंने अपनी आत्मा को भावित किया। उदयपुर में आचार्य श्री नानेश के प्रथम शिष्य के रूप में वे प्रतिष्ठित हुए और साधना में निरंतर आगे बढ़ते गए। उन्होंने शासन की खूब प्रभावना की।

श्री मयंकमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि शासन प्रभावक श्री सेवंतमुनिजी म.सा. सरलता, सहजता व सजगता की प्रतिमूर्ति थे। साध्वी मण्डल ने गुरु स्मरण भाव गीत प्रस्तुत किया। चार-चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धाजंलि अर्पित की गई।

महासती श्री प्रसिद्धिश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि मन में उत्पन्न होने वाले विचार हमें विरक्त बना सकते हैं। अपने मन पर नियंत्रण है तो मन भटकने वाला नहीं है। ये साधन जब तक देह है तब तक साथ देते हैं। साधक जिस दिन दीक्षा ग्रहण करता है वह यही भावना भाता है कि मेरा वह दिन धन्य होगा जिस दिन मैं पंडितमरण स्वीकार करूंगा। श्री सेवंतमुनिजी म.सा. ने तीनों मनोरथ पूरे किए।

कुछ सालों से उनके शरीर में बहुत वेदना थी, फिर भी हर समय बैठकर साधना में लीन रहते थे। जितनी भक्ति नाना गुरु के प्रति थी उतनी भक्ति राम गुरु के प्रति रही है। जैसे राम गुरु साधना में रहते, वे चुपके से चरणस्पर्श करते थे।

समुद्र को नापा नहीं जा सकता वैसे ही महापुरुषों के गुण शब्दों में कहे नहीं जा सकते। जब श्री सेवंतमुनिजी म.सा. से कहते कि आपका शरीर क्षीण हो रहा है, आप इतनी तपस्या मत करो। तब बापजी म.सा. कहते कि ''गुरु राम की कृपा से सारी तपस्या हो जाती है और जल्दी मोक्ष में भी जाना है।''

09 जून, आकोला (चित्तौड़गढ़)। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का जय-जयकारों के साथ आकोला में भव्य मंगल पदार्पण हुआ। जैन पौषधशाला में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री मयंकमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि इस संसार में सम्यक् पराक्रम क्या है? कौन-सा ऐसा पुरुषार्थ है जो जीव को सही दिशा में ले जा सकता है? एक मात्र संयम का मार्ग ही सम्यक् पराक्रम है। जो पुरुषार्थ कर रहे हैं वो सही हैं या गलत, इस पर आत्मचिंतन करें। संयम में जो सुख है वह और किसी में नहीं है।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मन, वचन, काया की सम्यक् कार्यों में लगी प्रवृत्ति सुप्रणिधान है। अन्य कार्यों में लगी प्रवृत्ति दुष्प्रणिधान है। धर्म कषाय मुक्ति में है। जहाँ कषाय नहीं है वही साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका के लिए मोक्ष मार्ग है। साधुता के प्रति प्रमोद भाव होना चाहिए। किसी भी जीव की असातना नहीं करनी चाहिए। अरिहंतों की स्तुति करते हुए उत्कृष्ट रसायन आए तो तीर्थंकर गौत्र बंधता है।

राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने दर्शन सेवा का लाभ लिया। स्थानीय गुरुभक्तों ने अपने भावोद्गार में कहा कि आचार्य भगवन् का आगमन परम सौभाग्य है।

10 जून, आकोला (चित्तौड़गढ़)। परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**हम अपने मन की पहचान करें कि मेरा मन बगुले की तरह है या हंस की तरह है। बगुला हंस के पास खड़ा भी हो जाएगा तो ऊपर से सफेद नजर आएगा किन्तु हकीकत छिपी नहीं रहेगी। आर्य क्षेत्र, मनुष्य जन्म एक दुर्लभ अवसर है। यह हाथ से निकल गया तो फिर पछताने के अलावा कुछ नहीं रहेगा। हर ग्रंथ में मनुष्य जन्म की महिमा गाई गई है। मनुष्य जन्म से ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। मनुष्य जन्म, उसके बाद वीतराग वाणी श्रवण, उस पर श्रद्धा और संयम में पुरुषार्थ का जो अवसर मिला है उसको सार्थक करें।**''

श्री आदित्यमुनिजी ने फरमाया कि संसार की कोई भी समस्याएँ नहीं होगी, कब? जब भगवान की महिमा में मन लग जाएगा तब। भगवान की महिमा से जुड़ो और जोड़ो।

श्री आदर्शमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि नेह-मोह व्यक्ति विशेष के प्रति होता है। जो व्यक्ति हर आदमी के प्रति एक समान वात्सल्य का भाव रखता है। उसके मन की गहराई में यह सोच होती है कि दूसरों को सुख पहुँचाना मेरा कर्तव्य है। इस अवसर पर विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

11 जून, पारी का खेड़ा (चित्तौड़गढ़)। पारी का खेड़ा के स्कूल में आचार्यदेव का मंगलमय पदार्पण जय-जयकारों के साथ हुआ। ग्रामीणों की सेवा-भक्ति अनुपम रही। अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी एवं दर्शन-सेवा का लाभ लिया। राष्ट्रीय उपाध्यक्षजी, युवा राष्ट्रीय महामंत्रीजी ने गुरुदर्शन का लाभ लिया। सुश्रावक रामलालजी लोढ़ा-जावरा के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। आचार्य भगवन् ने जीवन की नश्वरता का बोध कराया।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा उदयखेड़ा, इटाली, रूंडेड़ा आदि कई क्षेत्रों को पावन-पवित्र करते हुए जिनशासन की भव्य प्रभावना कर रहे हैं।

मन के जीते जीत है, मन के हारे हार।

12 जून, भूपालसागर (चित्तौड़गढ़)। पारी का खेड़ा से आचार्य भगवन् आदि ठाणा-4 का छह किलोमीटर विहार कर धर्मनगरी भूपालसागर जैन पौषधशाला में पधारना हुआ। में **''भले पधारो आगम ज्ञाता, हम सब पूछे सुख-साता'', ''यही है तीर्थ यही है धाम, जय गुरु नाना जय गुरु राम'', कठिन क्रिया की जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार''** आदि जयघोषों के साथ सभी संप्रदाय के भाई-बहनों ने आचार्य भगवन् की अगवानी की।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि ''**बाधा, विघ्न, अंतराय सब हमारे मन की कमजोरियाँ हैं। मन ने सोच लिया तो बाधा हो गई और मन ने सोच लिया तो कार्य निर्विघ्न हो गया। मन के जीते जीत है, मन के हारे हार। हमने जहाँ मन को जिस रूप में रोका वैसा हमें परिणाम मिल गया। हमारे मन में संशय पैदा हुआ वहीं अटक गए और जहाँ हमारे मन में आर-पार की बात सोच ली वहीं हम उस विघ्न और बाधा से बाहर हो गए। ये वही भूपालसागर है जहाँ किशोर नानालालजी पोखरना ने पहली बार रेलगाड़ी को देखा और ऊँची उड़ान, ऊँचा विकल्प मन में आया कि मैं भी बड़ा होकर इंजन जैसा बनकर सभी को मोक्ष की राह दिखाऊँगा। आकाश में पक्षियों को ऊँचा उड़ते हुए देखकर बालक नानालाल की रुचि बनी कि मैं भी आकाश में उड़ जाऊँ। कैसे उड़ेंगे? बोलो कैसे उड़ेंगे? अभी हम जानते ही नहीं तो कैसे उड़ेंगे, बोलो कैसे उड़ेंगे? अनासक्ति, निःस्वार्थ ये दो बल हैं, जो ऊँचाईयों की ओर ले जाने वाले हैं। आचार्य भगवन् ने स्वार्थ त्याग को सबसे कठिन तपस्या निरूपित किया।**''

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने **''ये अवसर मिला है मिलेगा कहाँ, ऐसे गुरुवर का शरणा मिलेगा कहाँ''** गीतिका प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जिनशासन की, प्रभु की गुरु की महिमा गाने का हमें यह शानदार अवसर कोरोना काल के बाद मिला है। हम जीवन की हर श्वास को सार्थक कर डालें। जिनशासन की शान के खिलाफ न कोई कार्य करें और न मुख से व्यर्थ शब्द उच्चारित करें।

श्री मयंकमुनिजी म.सा. ने **''राम-राम जय गुरुवर राम, राम-राम नाना के राम''** गीतिका प्रस्तुत करते हुए आचार्य भगवन् के सत्य पर डटे रहने के गुण की व्याख्या की। शासन दीपिका महासती श्री किरणप्रभाजी म.सा. आदि साध्वीवृन्द ने **''आगम ने जब आकार लिया, गुरु राम उसे तब नाम दिया''** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

स्थानीय श्राविकाओं ने गुरुभक्ति गीत का संगान किया। श्रावकों ने आचार्य भगवन् के आगमन को महान् पुण्यकारी निरूपित करते हुए अधिक से अधिक विराजने की विनती प्रस्तुत की।

कई भाई-बहिनों ने वर्ष में 12 एकासन, 12 आयम्बिल, 12 उपवास, 12 संवर का प्रत्याख्यान लिया। दोपहर में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए। शासन प्रभावक श्री सेवंतमुनिजी म.सा. के देवलोकगमन पश्चात् उनके सांसारिक पारिवारिकजन ढाबरिया परिवार से बड़े भ्राता रामपालजी, मनीषजी, अरुणजी, नरेशजी आदि ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक संदेश प्राप्त किया।

नवदीक्षिता महासती श्री आगमश्रीजी म.सा. की बड़ी दीक्षा सौल्लास सम्पन्न

वीतरागता की ओर बढ़ रहे ये चरण। धन्य-धन्य कह रहा है सबका मन।।

13 जून, भूपालसागर (चित्तौड़गढ़)। आचार्य भगवन् उपाध्याय भगवन् के पावन सान्निध्य में कपासन में नवदीक्षिता महासती श्री आगमश्रीजी म.सा. की बड़ी दीक्षा भूपालसागर के कन्या स्कूल में अनुपम दीक्षा प्रदाता

आचार्य भगवन् के मुखारविंद से चतुर्विध संघ की उपस्थिति में उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुई। प्रारम्भ में नवकार महामंत्र का जाप एवं **''शुभ मंगल हो शुभ मंगल हो, जीवन का हर क्षण मंगल हो''** भाव गीतिका का उच्चारण श्री आदित्यमुनिजी म.सा. आदि ने सामूहिक रूप से करवाया।

साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना कि शुरुआत ''**महावीर भगवान देना सद्ज्ञान जी, मैं तो नादान प्रभु तेरी ही संतान जी**'' गीत से करते हुए फरमाया कि ''**तीर्थंकर देवों का शासन हमें प्राप्त हुआ है। प्रत्येक आराधना मुक्ति के लिए होती है। प्रत्येक तीर्थंकर का धर्म-शासन लगभग एक समान होता है, पर कुछ भिन्नताएँ होती हैं। 22 तीर्थंकरों के समय सामायिक चारित्र का भी विधान है। प्रथम एवं अंतिम तीर्थंकर के शासन में सामायिक चारित्र ग्रहण करने के बाद छेदोपस्थापनीय चारित्र की व्यवस्था है। सामायिक चारित्र में सम्पूर्ण हिंसाजनित कार्य सावद्य योग का त्याग कराया जाता है। मानसिक, वाचिक व कायिक हिंसा का त्याग कराया जाता है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य आदि महाव्रतों का निरूपण छेदोपस्थापनीय चारित्र में किया जाता है और रात्रिभोजन के त्याग का नियम रहता है। साधक जीवन में चौविहार अनिवार्य है। साधु महाव्रतों को किसी दबाव में देखा-देखी धारण नहीं करते अपितु आत्महित के लिए स्वीकार करते हैं। साधु जीवन में आगमानुसार चलना होता है। आगम प्रमाण सत्य है, नि:शंक है पर आगम से कितना सम्मत है, इस पर विचार करें। कोई भी कार्य करें आत्महित सर्वोपरि हो। समिति गुप्ति का पालन ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना के लिए हो। हर क्रिया-प्रवृत्ति में सोच आत्महित के लिए हो। आगम जो बोल रहा है वही करना है। मैं क्या कर रहा था, क्या कर रहा हूँ और क्या करना चाहिए, आत्महित या स्वार्थसिद्ध? आत्महित में कर्तव्य पालन और स्वार्थसिद्ध में यश, नाम, प्रसिद्धि के भाव आ जाते हैं। हम अपनी दृष्टि परखें। कषायों का शमन करें।**''

आचार्य भगवन् ने 8 बजकर 45 मिनिट पर बड़ी दीक्षा की विधि प्रारम्भ की। दशवैकालिक सूत्र के चार अध्ययन का पठन करते हुए नवदीक्षिता साध्वीश्रीजी को पंच महाव्रत ग्रहण व रात्रिभोजन त्याग का संकल्प दिलाया।

नवदीक्षिता साध्वी श्री आगमश्रीजी म.सा. ने अपने भावोद्गार में फरमाया कि आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर का महान् उपकार रहा कि मुझे संयम व्रत प्रदान किया। मैं महाव्रतों का शुद्ध पालन व पाँच समिति तीन गुप्ति की शुद्ध आराधना के भाव रखती हूँ। सेवा-पर्युपासना मेरे संयमी जीवन की प्राथमिकता होगी। गुरु आज्ञा में रहकर अपनी परम मंजिल को प्राप्त करूं, यही मेरी मंगल प्रार्थना है।

शासन दीपिका महासती श्री किरणप्रभाजी म.सा., साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अनुरागश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने **''नाता तोड़ दिया''** गीत प्रस्तुत किया। केसरिया-केसरिया गीत से माहौल गूंज रहा था। महिला मंडल भूपालसागर, फतेहनगर ने संयम गीत प्रस्तुत किया। महेश नाहटा ने आचार्य भगवन् के अतिशय व त्यागी आत्माओं के आदर्श त्यागमय जीवन से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। संघ ने अधिक से अधिक विराजने की विनती की। बड़ी दीक्षा के प्रसंग पर एक मिठाई छोड़ने एवं माह में एक दिन मोबाइल का त्याग कई लोगों ने लिया। अन्य कई त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

बड़ी दीक्षा के पावन प्रसंग पर संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षजी सहित अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। दोपहर में आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में ज्ञानचर्या, प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में जिज्ञासुओं ने अपनी जिज्ञासाओं का सुंदर समाधान प्राप्त किया। धर्मपरायणा सुश्राविका पारसबाई पोखरना धर्मसहायिका मांगीलालजी पोखरना-करुंकड़ा के संथारापूर्वक देवलोकगमन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति प्राप्त की।

14 जून, कांकरवा (चित्तौड़गढ़)। परम प्रतापी आचार्य भगवन् आदि ठाणा-5 का भोपालसागर से 7 किमी. विहार कर जय-जयकारों के साथ जैन स्थानक में पधारना हुआ। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हजारों योद्धाओं को जीतने वाले से बढ़कर मन को जीतने वाला वीर कहलाता है और अपने आप को जीतने वाला महावीर कहलाता है। सच्चा वीर वह है जो क्रोध, मान, माया, लोभ और पाँच इन्द्रिय एवं मन को जीत लेता है। मन ही बंधन और मोक्ष का कारण है। मन से पुण्य और पाप होता है। सभी को साता पहुँचाने के भाव हमारे मन में होने चाहिए। सबसे हिल-मिल के रहें। खुद जीएँ ओर सबको जीना सीखाएँ।

दोपहर में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तर आदि हुए। मादरेचा एवं 2 जैन घरों सहित ग्रामीणों की सेवा सराहनीय रही। प्रत्येक पूनम को आचार्य भगवन् के पावन दर्शन का लाभ लेने वाले महानुभाव विभिन्न क्षेत्रों से गुरुचरणों में उपस्थित हुए।

15 जून, फतेहनगर। धर्मनगरी फतेहनगर के समता भवन में जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र नानेश पट्टधर आचार्य श्री रामलालजी म.सा. आदि ठाणा-5 का जयनादों के साथ नयनाभिराम पदार्पण हुआ। सभी सम्प्रदाय के लोग इस अवसर पर उपस्थित थे। मेवाड़ व देशभर से पधारे श्रद्धालुओं ने अगवानी की।

विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। हम हर क्षण मौत के कगार की ओर जा रहे हैं। जिन्दगी जी रहे हैं, पर शान्ति, समाधि व आनन्द कितना है? चिन्तन करें। हम जैसा बीज बो रहे हैं, वैसा ही फल प्राप्त होगा। कई बार अशान्त मन में अच्छी बात को अच्छे रूप में स्वीकार नहीं कर पाते हैं। हमारा मन कृष्ण है या कंस, राम है या रावण, महावीर है या गौशालक? चिंतन करें। हमारा मन शिकायत व प्रतिक्रिया में कितना जाता है? बहुत कठिन है शिकायत और प्रतिक्रिया से बचना। महावीर बनना है तो हमारे भीतर शिकायत और प्रतिक्रिया के भाव न हो। कोई प्रशंसा-स्तुति या निन्दा करे, कोई अच्छा या बुरा बर्ताव करे तो शिकायत या प्रतिक्रिया के भाव पैदा न हो।**'' आचार्य भगवन् ने आज प्रतिक्रिया से बचने हेतु शुभ संकल्प दिलाए।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने अपने भावोद्गार में फरमाया कि क्रोध और अहंकार के कारण घर, परिवार व समाज में झगड़े होते हैं। हमें वाद-विवाद से दूर रहकर संवाद स्थापित करना है। शासन दीपिका साध्वी श्री किरणप्रभाजी म.सा. ने, साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुरुचिश्रीजी म.सा. आदि ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। समता महिला मण्डल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। स्थानीय गुरुभक्तों ने कहा कि अनन्त पुण्यवानी के उदय से तारण-तिरण के जहाज पधारे हैं। आचार्य भगवन् के पावन दर्शनार्थ संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, नगरपालिका अध्यक्ष सहित अनेक स्थानों के गुरुभक्त उपस्थित हुए।

151 सामूहिक एकासना में लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। माह में एक दिन मोबाइल का त्याग अनेक लोगों ने लिया। फतेहनगर में पर्युषण/चातुर्मास जैसा ठाठ देखने को मिला। दोपहर में ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी एवं जिज्ञासा समाधान आदि कार्यक्रमों में श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। पूरे मेवाड़ में देव-गुरु-धर्म के प्रति अपूर्व श्रद्धा, भक्ति, समर्पणा देखने को मिल रही है। आचार्य भगवन् के पावन चरणकमल 2022 के चातुर्मास हेतु उदयपुर की ओर निरन्तर बढ़ रहे हैं। रतलाम, कानोड़, चैन्नई, करुकड़ा, दांता, कपासन, निम्बाहेड़ा, बालाघाट, बैंगलोर, उदयपुर, जावरा, मुम्बई, बीकानेर, बड़ीसादड़ी, निकुम्भ, भोपालसागर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, फतेहनगर, आकोला, इंदौर, सूरत, गंगाशहर-भीनासर, उमंड, जोधपुर, नाथद्वारा, ब्यावर, देवरिया, गंगापुर, गिलुंड, अहमदाबाद, भीलवाड़ा, कोलकाता, दांता, गुवाहाटी आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरु दर्शन सेवा का लाभ लिया। **-महेश नाहटा**

क्र.स.	प्रत्याख्यान के नाम	आचार्य प्रवर के विचरण दौरान प्रत्याख्यान ग्रहण करने वाले श्रावक–श्राविकाओं के नाम	
1	आजीवन भीलव्रत	रूपलालजी चंडालिया, अशोकजी–प्रेमबाई सांखला, लादूलालजी रेखादेवी सिंघवी, सम्पत्तलालजी–सरलादेवी हिंगड़, माधवराजजी साहू, रत्नदेवी लोढ़ा, सुश्रावक जवाहरलालजी मुन्नीदेवी लोढ़ा–मुम्बई, लादूलालजी प्रेमबाई पोखरणा, फतेहलालजी शांतादेवी खेरोदिया, पारसमलजी जैन, रामकरणजी चौधरी–जेठाना, तहसीलदार प्रभुलालजी प्रेमदेवी बोहरा, मोहनलालजी प्रकाशबाई लोढ़ा	
2	रात्रिभोजन का त्याग	लताजी वया–चैन्नई, चन्द्रप्रकाशजी चण्डालिया, सुशीलाबाई पोखरना, विजयसिंहजी नलवाया, नरेन्द्रजी रांका–बड़ीसादड़ी	
3	टी.वी. का त्याग	शुभकरणजी–अलीगढ़, कमलादेवी चंडालिया, मिश्रीलालजी मारू, माधवलालजी खोजला, प्रेमबाई पोखरना, मनोहरबाई बाफना, सुमनजी चौरड़िया, मंजूजी डांगी, शान्तिलालजी चंडालिया–भादसोड़ा	
4	उपवास	**वर्ष में 36 उपवास**	उल्लासबाई कावड़िया
		वर्ष में 24 उपवास	भैरूलालजी रातड़िया, महावीरजी–अंजूजी कावड़िया, लाड़बाई बाफना
5	पोरसी	**एक वर्ष पक्की पोरसी**	बंशीलालजी बोहरा
		100 पक्की पोरसी	लक्ष्मीलालजी बाफना
6	बड़े स्नान का त्याग	**वर्ष में 300 दिन**	लताजी वया–चैन्नई, राजेन्द्रजी सिरोया
		वर्ष में 150 दिन	सुनिताजी सिरोदा, पवनजी सियाल–रतलाम
		वर्ष में 100 दिन	कमलेशजी मालू–प्रतापगढ़, मदनजी कामरिया, भावनाजी छाजेड़, मंजूजी मारू, प्रमिलाजी मेहता, अक्षयजी सिरोया, निर्मलाजी बागरेचा, अनिताजी चपलोत, मुन्नीदेवी बाफना, हस्तीमलजी पोखरना, प्रेमलताजी छाजेड़– निम्बाहेड़ा
7	पक्की नवकारसी	**आजीवन पक्की नवकारसी**	सरलाजी पोखरना–चित्तौड़गढ़, मायाजी मारू
		200 पक्की नवकारसी	ललितजी बागमार, पवनदेवी गांग
		50 पक्की नवकारसी	पुष्पाजी डांगी, लीलाजी दसोरिया–बड़ीसादड़ी, चंदनबालाजी मेहता, विमलाजी बाफना
8	मिठाई का त्याग	अखिलेशजी चंण्डालिया	
		बाजार की मिठाई का त्याग	मनीषजी चौपड़ा–इंदौर, कुसुमजी सूर्या
9	जमीकंद का त्याग	जतनबाई चण्डालिया, कुशलजी मेहता, निताजी मूथा, सिद्धीजी मूथा, विद्याजी नलवाया, प्रकाशजी हिंगड़, मनोहरजी हिंगड़	
10	संवर	**100 संवर**	हरिसिंहजी भण्डारी
11	आजीवन बिस्तर पर सोने का त्याग	अशोक जी तातेड़–डिडोली	
12	रोज एक विगय त्याग	मनोहरजी कावड़िया	
13	गुटखा–व्यसन का त्याग	पारसमलजी पोखरणा	
14	प्रतिक्रमण	**300 प्रतिक्रमण**	लताजी वया–चैन्नई
15	वर्ष में 1 लाख गाथा का स्वाध्याय	चंदाजी खुर्दिया–मुम्बई, प्रणिता चौपड़ा–इंदौर, पानाबाई सेठिया–हावड़ा, हस्तीमलजी पोखरना–चित्तौड़गढ़, कमलजी मारू	
16	मोबाइल का त्याग	**आजीवन**	शांतिलालजी चंडालिया–भादसोड़ा
		माह में एक दिन	निर्मलजी बागमार, महेन्द्रजी जैन–जावरा, मधुबालाजी विनायकिया, हस्तीमलजी चंडालिया–मंदसौर, अनीलजी चंडालिया, उदयलालजी गुर्जर, नंदलालजी सिरोया, जयंतीजी मेहता, सूरजबाई रांका, रतनबाई सांवला, संजयजी मादरेचा

विविध समाचार

मेवाड़ अंचल

बड़ीसादड़ी। श्री साधुमार्गी जैन संघ के सत्र 2022-2024 के लिए स्थानीय पदाधिकारियों का निम्न प्रकार मनोनयन किया गया- अध्यक्ष प्रकाशचन्दजी मेहता, महामंत्री विमलजी दलाल, कोषाध्यक्ष पारसजी मोगरा।

श्रद्धांजलि :- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती एवं आचार्य श्री नानेश के प्रथम शिष्य शासन प्रभावक श्री सेवंतमुनिजी म.सा. के संथारापूर्वक देवलोकगमन पर समता प्रवचन हॉल में गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। संघ संरक्षकजी ने संथारा साधक मुनिश्री के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह जैन समाज के लिए बहुत बड़ी क्षति है। जैन धर्म में संयम व संथारे का संगम मृत्यु को महोत्सव बना देता है। अंत में चार-चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

शिविर सम्पन्न :- श्री साधुमार्गी जैन संघ की चारों शाखाओं के संयुक्त तत्वावधान में 9 दिवसीय समता संस्कार शिविर के आयोजन में 142 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। इतनी भीषण गर्मी में भी बच्चों का उत्साह अनुकरणीय था। शिविर में बच्चों ने सामायिक, प्रतिक्रमण, कर्मबन्ध और हमारा जीवन, सचित्त-अचित्त, भक्तामर, गणधर, 24 तीर्थंकर, 16 सतियाँ आदि के विषय में अध्ययन करवाया गया।

शिविर समापन से पूर्व शिविरार्थियों की परीक्षा ली गई, जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले बच्चों को पारितोषिक देकर उत्साहवर्द्धन किया गया।

शिविर का समापन समारोह समता प्रवचन हॉल में सम्पन्न हुआ। युवा संघ की ओर से अतिथियों का स्वागत किया गया। स्थानीय संघ अध्यक्ष ने मुख्य अतिथि के रूप में कहा कि बच्चे बचपन में सुसंस्कारित होंगे तो जीवन में आगे बढ़कर परिवार, समाज का नाम रोशन करेंगे। समस्त पदाधिकारियों आदि ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। **-धनपाल मेहता, प्रकाशचन्द मेहता**

भीण्डर। शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 सुख-सातापूर्वक समता भवन में विराज रहे हैं। प्रतिदिन प्रात: प्रार्थना के साथ स्वाध्याय एवं ज्ञान-ध्यान, प्रवचन आदि होते हैं। इन्हीं दिनों में महिलाओं एवं बालकों का शिविर लगाया गया।

इसी बीच शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-5 का समता भवन में पधारना हुआ। भीण्डर में धर्म-ध्यान का ठाठ लग गया। आपश्रीजी का 27 मई को वाणीया तलाई की ओर विहार हुआ। आगे आपश्रीजी का बम्बोरा की ओर विहार संभावित है।

1 जून को समता भवन में आचार्य श्री नानेश की जन्म-जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शनाश्रीजी म.सा. ने गुरु गुणगान करते हुए उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इस अवसर को आराधना, मौन, ध्यान एवं स्वाध्याय दिवस के रूप में मनाया गया। धर्मसभा में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने नानेश चालीसा, रामेश चालीसा, नवकार मंत्र जाप, एकासन, आयंबिल, उपवास आदि तपाराधना की। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने अपने भाव रखे। बालिका मण्डली ने भक्ति गीत प्रस्तुत किया। समता युवा संघ द्वारा हॉस्पिटल में बीमारों को फल-फ्रूट वितरण किया गया।

शासन प्रभावक श्री सेवंतमुनिजी म.सा. के देवलोकगमन पर समता भवन में शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शनाश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया, जिसमें साध्वीश्रीजी ने

स्मृतिशेष मुनिश्रीजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनकी शासन सेवाओं के बारे में विस्तार से बताया एवं सभी से गुरु आज्ञा का पालन करते हुए बापजी म.सा. के गुणों को अपनाने का आह्वान किया। सभा में स्थानीय गुरुभक्त संघ सदस्य उपस्थित रहे। **-प्रकाशचन्द कुदाल**

उदयपुर। स्मृतिशेष आचार्य श्री नानेश की जन्म-जयन्ती पर सेक्टर 4 स्थित जैन स्थानक में गुणानुवाद सभा आयोजित की गई, जिसमें शासन दीपक श्री राजनमुनिजी म.सा. ने नाना गुरु के विभिन्न गुणों की विवेचना की। इससे पूर्व श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि दो तरह के व्यक्ति होते हैं- एक अनुरागी व दूसरे वैरागी। अधिकांश लोग अनुराग की तरफ आकर्षित होते हैं, जबकि असल सुख तो वैराग्य में है। आचार्य श्री नानेश कम बोलते थे, पर जब बोलते तो सटीक वचन फरमाते थे।

साध्वी श्री मृगांकश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि कर्मशील पुरुषों की ही जन्मदिवस मनाया जाता है और वे ही महापुरुष कहलाते हैं। साध्वी श्री प्रीतिश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि आलस्य व प्रमाद त्यागकर ही जागृत बना जा सकता है। साध्वी श्री मुदितप्रज्ञाजी म.सा. ने सम्बोधित करते हुए फरमाया कि आचार्य श्री नानेश ने समता का सन्देश दिया। इस अवसर पर एकासन तप की आराधना हुई।

शासन प्रभावक श्री सेवन्तमुनिजी म.सा. के संथारे सहित महाप्रयाण पर 8 जून को सेक्टर 4 स्थित जैन स्थानक में गुणानुवाद सभा रखी गई। सभा में श्री राजनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि किसी की आँख बन्द होना और किसी की खुलना जन्म-मरण का खेल है, परन्तु संयम अवस्था में संथारे सहित पण्डितमरण महत्त्वपूर्ण है।

श्री लाघवमुनि म.सा. ने फरमाया कि संयमी की मृत्यु 'महोत्सव' है, क्योंकि एक आत्मा संसार से गई है, परन्तु उस आत्मा ने देवलोक में जन्म लिया है। शासन प्रभावकजी बड़े सरल स्वभावी एवं छोटे संतों के प्रति वात्सल्य रखते थे।

सभा को साध्वीश्री मृगांक श्रीजी म.सा. ने भी सम्बोधित किया। **-अल्पेश धाकड़**

बीकानेर मारवाड़ अंचल

जोधपुर। 2 जून को श्री साधुमार्गी जैन संघ एवं श्री समता युवा संघ के संयुक्त तत्वावधान में आचार्य श्री नानेश जन्मदिवस एवं दीक्षार्थी अभिनन्दन समारोह का आयोजन प्रात: 10.30 बजे कमला नेहरू नगर स्थित समता भवन में जोधपुर शहर, सहायक पुलिस आयुक्त श्रीमती अंशु जैन के मुख्य आतिथ्य में किया गया। आयोजन से पूर्व समता भवन में विराजित साध्वी श्री वैभवप्रभाजी म.सा. ने आचार्य श्री नानेश के गुणों का वर्णन करते हुए फरमाया कि उन्होंने बाल्यकाल से ही परेशानी और तनाव का सामना धैर्य और समता के साथ किया। उनका जीवन राग-द्वेष से परे था। सांसारिक जीवन में भी लोगों की मदद करना, पशु, पक्षी आदि प्राणियों का भला करना ही उनका उद्देश्य रहा। साध्वीश्रीजी ने सभा में उपस्थित मुमुक्षु बहिन यशस्वीजी ढेलड़िया को दृढ़ता, सजगता तथा समर्पित भाव के साथ संयम के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

एक अलग कार्यक्रम में इस अवसर पर विशेष रूप से आमन्त्रित सोइंतरा प्रवासी हाल बालोद निवासी मुमुक्षु बहिन यशस्वीजी ढेलड़िया सुपुश्री श्री मांगीलालजी अनिताजी ढेलड़िया का बहुमान एवं अभिनन्दन किया गया। स्थानीय संघ अध्यक्षजी ने पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, पूर्व संघ अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष आदि द्वारा मुख्य अतिथि का स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया।

इसी कड़ी में मुमुक्षु बहिन एवं उनके माता-पिता का तिलक, माला एवं शॉल ओढ़ाकर महिला मण्डल अध्यक्ष, बहुमण्डल अध्यक्ष सहित अन्य पदाधिकारियों ने स्वागत एवं अभिनन्दन किया।

मुमुक्षु यशस्वी ढेलड़िया ने सदन को सम्बोधित करते हुए कहा कि 5 वर्ष पहले सूरत चातुर्मास के दौरान आचार्य श्री रामेश के शान्त, सौम्य, सरल, सहज व्यवहार से प्रेरित होकर उनके सान्निध्य में दीक्षित होने

का मानस बना लिया। उनसे पहले उनके परिवार से 12 सदस्यों ने गृहस्थ जीवन त्यागकर संयम जीवन अपनाया। मुमुक्षु बहिन ने अपने सम्मान के लिए कृतज्ञता व्यक्त की। उनके माता-पिता ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि बचपन से ही यशस्वी धार्मिक संस्कारों से ओत-प्रोत रही और इसी का परिणाम है कि वह आज संयम पथ पर अग्रसर होने जा रही है।

मुख्य अतिथि श्रीमती अंशु जैन ने बताया कि संसार को त्याग कर संयम मार्ग अपनाना बहुत ही कठिन कार्य है और इस छोटी-सी उम्र में दीक्षा लेना अपूर्व साहसिक कदम है। उन्होंने उनके सफल और सुखमय संयम जीवन की कामना की। समता युवा संघ अध्यक्ष ने बताया कि आचार्य श्री नानेश के बताए मार्ग पर चलकर समाज ने समय-समय पर धर्म के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति की है। **-सुरेश सांखला**

बीकानेर। शासन दीपक श्री वीरेन्द्रमुनिजी म.सा., श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-10 सेठिया कोटड़ी में एवं पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री पारसकँवरजी म.सा., साध्वी श्री कमलप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-19 समता साधना भवन (मालू कोटड़ी) में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

2 जून को सेठिया कोटड़ी में संथारा साधिका साध्वी श्री कल्पमणिजी म.सा. के महाप्रयाण के समाचार मिलने पर गुणगान सभा का आयोजन किया गया। सभा में श्री हिमांशुमुनिजी म.सा. ने **''जीवन है पानी की बूंद, कब मिट जाए रे''** भजन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि जन्म और मृत्यु के बीच जो जीवन है उसे संयम धारण कर सार्थक करें।

साध्वी श्री शर्मिलाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि महासतीजी का जीवन सेवा गुण से परिपूर्ण था। आपश्रीजी श्रेष्ठ गति का वरण करें।

श्री प्रसन्नमुनिजी म.सा. ने संथारा साधिकाजी का परिचय फरमाते हुए कहा कि कच्चे धागे के समान जीवन क्षणभंगुर है। महासतीजी ने अपने संयम जीवन को तप, त्याग, जप, स्वाध्याय से सजाया था। अन्त में चार-चार लोगस्स का ध्यान कर सभा सम्पन्न हुई। **-कन्हैयालाल बैद**

गंगाशहर-भीनासर। श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के तत्वावधान में श्री चम्पालालजी बाँठिया परिवार द्वारा प्रदत्त आनन्द सागर स्थित भूमि पर जनसेवा हेतु आनन्दकंवर, तारादेवी, चम्पालालजी बांठिया स्मृति प्याऊ निर्माण के लिए नींव रखने का कार्यक्रम 22 जून 2022 को संघ के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जयचन्दलालजी डागा के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ नवकार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण एवं 24 तीर्थंकरों के पुण्यस्मरण से हुआ। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने कहा कि श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ अपने विभिन्न सेवा प्रकल्पों के माध्यम से जनसेवा कार्यों से जुड़ा हुआ है। यह हमारे नौ आचार्यों द्वारा प्रदत्त संस्कार ही हैं कि हम सभी सेवा कार्यों से सदैव जुड़े रहते हैं। बाँठिया परिवार भी अपने व्यक्तिगत ट्रस्ट एवं संघ के माध्यम से हमेशा सेवा कार्यों को ही सर्वोपरि रखता है यह हमारे लिए गौरव का विषय है।

इस अवसर पर भूमि प्रदाता परिवार सहित राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, मंत्री, कार्यकारिणी सदस्य एवं गंगाशहर-भीनासर तथा बीकानेर संघ के गणमान्य सदस्यों व पदाधिकारियों की उपस्थिति रही। सभी ने मुक्तकंठ से जनसेवा के इस कार्य की सराहना की।

श्री रमेशमुनिजी म.सा. एवं साध्वी श्री लक्ष्यप्रभाजी म.सा. के सान्निध्य में प्रवचन का ठाठ लगा हुआ है। जेठ बदी 14 पक्खी पर्व पर समता स्वाध्याय आरोग्य में शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धिश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में लगभग 40 भाई-बहिनों ने 5-5 सामायिक एवं प्रतिक्रमण का लाभ लिया। जेठ सुदी 2 को रामेश रत्नम् में साध्वी श्री लक्ष्यप्रभाजी म.सा. के सान्निध्य में लगभग 55 भाई-बहिनों ने 2-2 सामायिक एवं शिवा बस्ती में समता महिला भवन में श्री रमेशमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में

लगभग 40 भाई-बहिनों ने प्रवचन में 2-2 सामायिक का लाभ लिया। बाहर से दर्शनार्थियों का आवागमन निरन्तर हो रहा है। **-महेन्द्र सोनावत, विमलकुमार सेठिया**

जयपुर ब्यावर अंचल

ब्यावर। साध्वी श्री कल्पमणिजी म.सा. के देवलोकगमन पर शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा. के सानिध्य में स्मृतिसभा आयोजित की गई, जिसमें म.सा.श्रीजी ने फरमाया कि साध्वीश्रीजी ने रतलाम में आचार्य नानेश के मुखारविंद से दीक्षा ग्रहण कर जिनशासन को गौरवान्वित किया।

म.सा.श्रीजी ने आगे फरमाया कि जीवन के दो छोर हैं- पहला जन्म और दूसरा मृत्यु। महत्त्व जीवन के केवल बीच के पड़ाव का है। साध्वीश्रीजी ने अपनी जीवनशैली को संस्कारित बनाकर मृत्यु को महोत्सव बना दिया। गत कुछ दिनों से सिरदर्द हो रहा था इसलिए साध्वीश्री को मंदसौर ले जाया गया, लेकिन 1 जून को आपका देवलोकगमन हो गया। अंत में चार-चार लोग्गस का ध्यान कर श्रद्धांजली दी गई।

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती एवं आचार्य श्री नानेश के प्रथम शिष्य शासन प्रभावक श्री सेवंतमुनिजी म.सा. का संथारा सहित 7 जून 2022 को सायं 6:31 बजे देवलोकगमन हो जाने पर 8 जून 2022 को प्रात: 7:15 बजे समता भवन से डोल यात्रा प्रारंभ होकर मुक्तिधाम पहुँची। मुक्तिधाम में म.सा. के संसारपक्षीय भतीजे नरेशजी ढ़ाबरिया, रामपालजी ढ़ाबरिया, संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी, समता युवा संघ के राष्ट्रीय महामंत्रीजी, स्थानीय संघ अध्यक्षजी, महामंत्रीजी एवं अन्य अनेक स्थानों से पधारे गुरुभक्त महानुभावों की उपस्थिति में मुखाग्नि दी गई।

इस अवसर पर नोखा निवासी दीर्घ तपस्विनी हेमलताजी प्रदीप बांठिया ने कहा कि म.सा.की कृपा से ही मैं बड़ी तपस्या करने में सफल हुई। वीर संघ अध्यक्षजी, समता युवा संघ महामंत्रीजी रत्नवंश, प्राज्ञ सम्प्रदाय आदि के सुश्रावकगण सहित अनेक वक्ताओं ने कहा कि संथारा साधकजी ने जीवन के मूल्यों को समझकर अपने नाम को सार्थक कर लिया और अंतिम समय में संथारा धारण कर मृत्यु को महोत्सव बना दिया।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने कहा कि बापजी म.सा. ने लगभग साठ वर्षों से अपने जीवन को संयम साधना में तपाते हुए हम सबको मार्गदर्शन दिया। हम सभी उनके परम मोक्ष की कामना करते हैं। इस अवसर पर ब्यावर संघ की तीनों शाखाओं, स्थानीय विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों व सदस्यों के साथ रतलाम, जोधपुर, नोखा, नीमच, बीकानेर, मुम्बई, जयपुर, कानोड़, बनेड़ा, भीलवाड़ा, सारोठ, जेठाना, डूंगला सहित आस-पास के अनेक स्थानों के महानुभाव उपस्थित थे।

शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं शासन दीपिका साध्वी श्री रोशनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा के सानिध्य में शासन प्रभावक श्री सेवंतमुनिजी म.सा. के देवलोकगमन होने के पश्चात 09 जून 2022 को समता भवन में गुणानुवाद व स्मृतिसभा रखी गई।

सभा में शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मुझ पर शासन-प्रभावकजी का बहुत बड़ा उपकार रहा, जो उनकी सेवा करने का अवसर मिला। श्री सेवंतमुनिजी म.सा. का सम्पूर्ण जिनशासन पर उपकार रहा। उनकी वफादारी, जिम्मेदारी, समर्पण भावना व प्रेरणा हमें युगों-युगों तक याद दिलाती रहेगी। मुनिश्री को आचार्य श्री नानेश का प्रथम शिष्य बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। आप अन्तिम समय तक तपस्या के माध्यम से कर्मनिर्जरा करने में लगे रहे। भीषण गर्मी में भी आपने 36 की तपस्या की।

श्री अनन्तमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि शासन प्रभावकजी सदैव खूब ज्ञान-ध्यान-तप में लगे रहते थे। श्री मधुरमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संथारा साधकजी ने अपने अंत को सुधार कर अनन्त-अनन्त भव को सुधार लिया।

श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने भजन **''जीवन पानी की बूंद कब मिट जाये रे''** गीतिका के माध्यम से

फरमाया कि म.सा. ने अपने जीवन के अंतिम समय को जानकर पण्डितमरण स्वीकार किया।

श्री गगनमुनिजी म.सा. ने गीतिका **''कहाँ खो गए देखो प्रभावक महान्''** प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि उन्होंने रसनेन्द्रिय पर विजय प्राप्त कर ली थी।

महासती श्री परागश्रीजी ने फरमाया कि शासन प्रभावकजी ने अपनी मृत्यु को महोत्सव बना दिया। साध्वी श्री सुरक्षाश्रीजी म.सा. ने **''राम गुरु को छोड़कर, संघ से नाता तोड़कर, कहाँ कर गए प्रस्थान''** भजन प्रस्तुत किया। स्थानीय अध्यक्षजी, महामंत्री सहित अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। अंत मे चार-चार लोगस्स के ध्यान सहित श्रद्धांजली दी गई।

लोगस्स साधना शिविर :- शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा. के सानिध्य में 15-16 जून को दो दिवसीय लोग्गस साधना शिविर समता भवन में प्रात: 6:45 से 7:45 बजे तक हुआ। म.सा.श्रीजी ने शिविर में फरमाया कि जैन परम्परा में लोगस्स का पाठ बहुत प्रचलित है। इसमें 24 तीर्थंकरों की स्तुति होती है। पाठ अपने आप में शक्तिशाली मंत्र है। इस मंत्र के उच्चारण से एक सुरक्षा कवच हमारे आस-पास तैयार हो जाता है। **-नोरतमल बाबेल**

मध्यप्रदेश अंचल

बदनावर। आठ दिवसीय संस्कार शिविर के समापन अवसर पर शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि शिविर हमें शिक्षा के साथ-साथ विवेक में रमण करना सिखाता है। घर के प्रत्येक सदस्य के साथ आदर का व्यवहार करना चाहिए। हम ज्ञान अपनी दैनिकचर्या के साथ भी प्राप्त कर सकते हैं। हमे सत्संग के माध्यम से गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान को जीवन में उतारना होगा। भगवान महावीर ने हमें **'जीओ और जीने दो'** का सिद्धांत दिया है, उसे व्यवहार में लाना चाहिए।

राष्ट्रीय मंत्रीजी ने कहा की शिविर के माध्यम से बच्चो में बचपन से जो संस्कार विकसित हुए वे ही जीवन का आधार होंगे। समता संस्कार पाठशाला समिति के पूर्व संयोजकजी ने भी अपने विचार रखे। समापन के बाद आयोजित परीक्षा में सीनियर एवं जूनियर ग्रुप के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय विजेताओं को श्री साधुमार्गी संघ द्वारा-बेगूं व श्री साधुमार्गी जैन संघ-बदनावर की ओर से शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया गया। मध्यप्रदेश अंचल द्वारा भी प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया गया। **-अनिल लुणिया**

इन्दौर। संथारा साधिका साध्वी श्री कल्पमणिजी म.सा. के देवलोकगमन पर शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में म.सा.श्रीजी ने फरमाया कि पुरुषार्थी, सेवाभावी, जागरुक महासतीजी के निधन से संघ में बहुत बड़ी क्षति हुई है। जीवन पानी की एक बूंद है, कब उड़ जाए पता नहीं। इसलिए हमेशा धर्म में जागृत रहते हुए जीना चाहिए। स्थानीय श्री साधुमार्गी जैन संघ अध्यक्ष एवं महिला समिति अध्यक्ष सहित अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने अपने भावसुमन अर्पित किए। **-तेजकुमार तातेड़**

खिरकिया। आचार्य श्री नानालालजी म.सा. की जन्म-जयन्ती समता भवन में धर्म-ध्यान, तप-त्यागपूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर विभिन्न धार्मिक आयोजन किए गए। प्रात: 4:50 बजे से रायसी प्रतिक्रमण, 6 बजे से विश्वशांति नवकार महामंत्र जाप, नानेश चालीसा एवं चिंतन मणियाँ, रामेश चालीसा आदि का पठन व धर्म-ध्यान किया गया। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने गद्य-पद्य में अपने भावों से गुणानुवाद करते हुए कहा कि हम बडे.ही सौभाग्यशाली हैं कि हमें इस कलिकाल में ऐसे पंच महाव्रतधारी गुरुजनों का सान्निध्य प्राप्त हो रहा है। नाना गुरु ने दुर्व्यसनों में लिप्त समाज के लोगों को धर्मबोध देकर उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ा एवं 360 लगभग मुमुक्षु आत्माओं को दीक्षा प्रदान की। इस अवसर पर कई श्रावक-श्राविकाओं ने नवकारसी, पोरसी एवं एकासन आदि के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। शाम को समता भवन

में महिलाओं ने प्रतिक्रमण एवं आराधना का लाभ लिया।

शासन प्रभावक श्री सेवंतमुनिजी म.सा. के संथारा सहित देवलोकगमन होने पर समता भवन में गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। सभा में श्रावक-श्राविकाओं ने कहा कि मुनिश्री ने संथारा साधना कर अपना तीसरा मनोरथ पूर्ण कर मोक्ष की राह चुनी। इस अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं, गुरुभक्तों के अलावा बालक-बालिकाएँ भी उपस्थित रहे। भाव सहित चार-चार लोगस्स का ध्यान किया गया एवं सामूहिक मंगलपाठ के साथ सभा सम्पन्न हुई।

शिविर सम्पन्न :- श्री श्वेतांबर जैन श्रीसंघ द्वारा समता भवन में 8 दिवसीय ग्रीष्मकालीन समता संस्कार शिविर का समापन 14 जून को किया गया। मंगलाचरण समता संस्कार पाठशाला की बालिकाओं द्वारा किया गया। शिविर में 30 बच्चों को ज्ञानार्जन के अनुसार तीन कक्षाओं में विभक्त कर अध्ययन करवाया गया। केन्द्रीय संघ एवं गुरुभक्तों द्वारा सभी शिविरार्थियों को बैग प्रदान किए गए। अंचल द्वारा बच्चों की फाइनल परीक्षा में तीनों कक्षाओं के प्रथम, द्वितीय, तृतीय को पारितोषिक प्रदान किया गया।

प्रतिदिन की प्रतियोगिता में प्रथम एवं द्वितीय तथा प्रोजेक्ट में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहे बच्चों को पारितोषिक दिया गया। अनेक वक्ताओं ने अपनी भावाभिव्यक्ति में बच्चों का उत्साहवर्द्धन किया। बच्चों को ज्ञानार्जन, प्रतियोगिता आदि में नारी शक्ति का विशेष सहयोग रहा। प्रतिदिन स्वल्पाहार एवं अन्य व्यवस्थाओं में अनेक महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ। **-आशीष समदड़िया**

मंदसौर। श्री साधुमार्गी जैन संघ के तत्वावधान में सात दिवसीय समता संस्कार ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 145 बच्चों ने भाग लेकर ज्ञान-ध्यान अर्जित किया। शिविर का समापन 12 जून को मध्यप्रदेश अंचल एवं स्थानीय संघ के पदाधिकारियों के करकमलों से हुआ। मंदसौर संघ अध्यक्ष, मंत्री एवं सदस्यों तथा महिला मण्डल, समता युवा संघ की उपस्थिति में बच्चों को पुरस्कार वितरित किए गए। आगत अतिथिगणों ने उद्‌बोधन देकर शिविरार्थियों का उत्साहवर्द्धन किया। समता युवा संघ अध्यक्ष ने आभार ज्ञापन किया। **-बाबुलाल पितलिया**

जावरा। तीन दिवसीय बालक-बालिका शिविर का समापन 14 जून को हुआ, जिसमें शिविरार्थियों ने शिविर में किए गए ज्ञानार्जन पर सुन्दर प्रस्तुति दी।

शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमाश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में साध्वी श्री सुविराजश्रीजी म.सा. ने बच्चों को कर्मबंधन आदि विषयों पर **'भावी जीवन में कर्मबंधन से कैसे बचा जाए'** इस पर बहुत ही गंभीरता के साथ चिंतन-मनन करने की प्रेरणा दी।

शासन दीपिकाजी ने शिविर में सीखे हुए ज्ञान को अपने जीवन में उतार कर जीवन सफल बनाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर संघ अध्यक्ष, समता महिला मण्डल, समता युवा संघ, बहूमण्डल ने भावाभिव्यक्ति देते हुए आभार व्यक्त किया। **-पुखराज पटवा**

छत्तीसगढ़ उड़ीसा अंचल

मनेन्द्रगढ़। श्री जैन श्वेताम्बर संघ के तत्वावधान में समता संस्कार शिविर का आयोजन ओसवाल भवन में किया जा रहा है। जैसे ही संथारा साधक श्री सेवंतमुनिजी म.सा. के पण्डितमरण का समाचार ज्ञात हुआ शिविर अध्यापिकाओं के सान्निध्य में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। पुष्पाजी ने मुनिश्रीजी के जीवन परिचय एवं संथारे के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए गुणानुवाद किया। श्रावक-श्राविकाओं एवं बच्चों द्वारा 1 घंटे का जाप एवं चार-चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि दी गई। **-अध्यक्ष, श्री जैन श्वे. संघ**

कर्नाटक आन्ध्रप्रदेश अंचल

विजयपुरा। शासन दीपिका साध्वी श्री दिव्यदेशनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री नवकारश्रीजी म.सा., साध्वी श्री भाविताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री शुभंकराश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 का 23 मई को स्थानक में पधारना हुआ। 24 मई को श्री साधुमार्गी जैन

संघ-बैंगलोर के अध्यक्ष, मंत्री सहित शिष्ट मंडल ने पधारकर जिनवाणी श्रवण का लाभ लिया। वीर पिता अशोकजी नागौरी आदि के पदार्पण पर संघ की ओर से स्वागत किया गया। **-रजत सेठिया**

मुम्बई गुजरात अंचल

सूरत। श्री साधुमार्गी जैन संघ के तत्वावधान में 22 से 29 मई तक 10 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के बालक-बालिकाओं का आठ दिवसीय आवासीय शिविर आयोजित किया गया। शिविर में 37 बच्चों ने आठ दिन समता भवन में रहकर ज्ञानार्जन, योग, मोटीवेशन कक्षा, अंताक्षरी एवं खेलकूद आदि में भाग लिया। शिविर में कुछ बच्चे पक्की नवकारसी, कच्ची नवकारसी, संवर, सामायिक, प्रतिक्रमण, बड़े स्नान का त्याग आदि में से कुछ न कुछ नियमित करते थे। शिविर में समता युवा संघ, महिला मंडल एवं बहू मंडल का प्रशंसनीय योगदान रहा।

29 मई को शिविर समापन पर सभी बच्चों को श्री सागरजी बाघमार (सूरत पुलिस डीसीपी रैंज तृतीय) के करकमलों से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री बाघमारजी का सूरत संघ द्वारा अभिनन्दन किया गया। आपने अपने वक्तव्य में कहा कि व्यक्ति कितने ही ऊँचे पद पर पहुँच जाए, लेकिन कभी भी धर्म का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। अंत में संघ मंत्री ने सभी का आभार प्रकट किया। युवा संघ के आग्रह पर डीसीपी महोदय ने समता युवा संघ सूरत की सदस्यता ग्रहण की। **-प्रेमचन्द पारख**

पूर्वोत्तर अंचल

बिलासीपाड़ा। 1 जून को श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा. का जन्म दिवस धर्माराधना के साथ मनाया गया। समता महिला मंडल अध्यक्ष के निवास पर सायं 6 से 8 बजे तक गुरुदेव के गुणगान, नवकार मंत्र जाप, सामायिक कर श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। संघ मंत्रीजी सहित अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने गद्य-पद्य में भाव व्यक्त किए। अन्त में **''सदा स्वस्थ रहे गुरु हमारे''** सामूहिक वंदना की गई। विमलादेवी धारीवाल ने मंगलपाठ सुनाया तत्पश्चात आचार्य भगवन् की जय-जयकारों के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आचार्य श्री नानालालजी म.सा. के प्रथम शिष्य शासन प्रभावक श्री सेवंतमुनिजी म.सा. के देवलोकगमन पर समता महिला मण्डल अध्यक्ष के निवास पर गुणानुवाद सभा का आयोजन कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। अनेक गणमान्य जनों ने गुणानुवाद किया। तत्पश्चात् नवकार महामंत्र जाप एवं चार-चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि दी गई। **-चांद जैन (लुणावत), सुरेश चौरड़िया**

सिलचर। श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा 1 जून को पूज्य आचार्य श्री नानालालजी म.सा. का जन्मदिवस जैन भवन में सामायिक, प्रार्थना एवं गुणानुवाद के साथ मनाया गया। गुणानुवाद सभा में स्थानीय संघ अध्यक्ष ने आचार्यश्रीजी की जीवनी पर प्रकाश डाला। संघ मंत्री ने आचार्यश्रीजी का जन्मदिवस अगले साल और भव्य रूप से मनाने का आह्वान किया। अंत में सम्मिलित स्वरों में नानेश चालीसा पाठ के साथ पहले चरण की समाप्ति हुई। रात में अहेली कॉम्प्लेक्स स्थित समता कुंज में समता युवा संघ द्वारा भजन संध्या का आयोजन किया गया, जिसमे काफी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। **-विजयकुमार सांड**

गुवाहाटी। श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ के तत्वावधान में आचार्य श्री नानेश के प्रथम शिष्य सेवन्तमुनिजी म.सा. के संथारा सहित पण्डितमरण पर 7 जून को समता भवन में नवकार महामंत्र का जाप एवं 8 जून को प्रात: स्मृतिसभा का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में श्री संघ, महिला समिति, समता युवा संघ के सदस्यों द्वारा मुनिश्री का गुणानुवाद किया। संघ अध्यक्ष ने मुनिवर के सांसारिक जीवन का परिचय दिया। अन्य अनेक पदाधिकारियों व सदस्यों ने श्रद्धासुमन अर्पित किए। अंत में चार-चार लोगस्स का ध्यान किया गया। रामेश चालीसा व गुरु वन्दना के पश्चात् सभा सम्पन्न हुई। **-राजेन्द्र दस्साणी**

तत्त्व बोध

तत्त्व बोध-1

कुछ लोग मिथ्यादृष्टि अथवा अभवी का ज्ञान नवम् पूर्व की तीसरी आचार वस्तु तक ही मानते हैं, लेकिन यह मान्यता ठीक नहीं है। श्री नन्दीसूत्र में बताया गया है कि **''चोद्दसपुव्विस्स सम्मसुयं, अभिण्णदसपुव्विस्स सम्मसुयं, तेण परं भिण्णेसु भयणा''** इसका तात्पर्य यह है कि ''दस पूर्वों से कुछ कम (देशोन दस पूर्व) का ज्ञान मिथ्यादृष्टि में हो सकता है।''

तत्त्व बोध-2

आगामी आयुष्य का बंध करने के पश्चात् कैसा भी कष्ट आए, वर्तमान आयुष्य की अपवर्तना संभव नहीं है। अपवर्तनीय आयुष्य वाला प्राणी भी आयु के बंध के पूर्व ही आयुष्य की अपवर्तना करता है।

तत्त्व बोध-3

विकलेन्द्रिय जीवों में अस्थि, मांस, रक्त होते हैं।

-श्री स्थानांग सूत्र, स्था. 2, उ. 1

तत्त्व बोध-4

कार्मण काययोग केवल बाटे बहता (विग्रह गति) के एक अथवा दो समयों में या केवलिसमुद्घात के तीसरे, चौथे, पाँचवे समय में ही होता है, ऐसी बात नहीं है। जब तक कोई भी जीव चौदहवें गुणस्थान को प्राप्त नहीं करता, तब तक निरन्तर कार्मण काययोग रहता है। किसी भी काययोग से उस काया के पुद्गलों का ग्रहण होता है। सम्बन्धित शरीर नामकर्म का भी उस समय उदय रहता है, यथा- औदारिक शरीर नामकर्म के उदय एवं औदारिक काययोग के समय जीव औदारिक वर्गणा के पुद्गल ग्रहण करता है। इसी प्रकार कार्मण शरीर नामकर्म के उदय तथा कार्मण काययोग के समय जीव कार्मण वर्गणा के पुद्गल ग्रहण करता है। कार्मण शरीर नामकर्म ध्रुवोदया प्रकृति है तथा इसका उदय चौदहवें गुणस्थान में प्रवेश करने पर्यंत निरन्तर रहता है। अत: कार्मण वर्गणा के पुद्गलों का तब तक निरन्तर ग्रहण होता है। कार्मण काययोग भी तब तक निरन्तर होता है। श्रीमद् भगवतीसूत्र, शतक 8, उद्देशक 1 में श्रीमद् प्रज्ञापनासूत्र के इक्कीसवें पद का अतिदेश (भोलावण) करके यह स्पष्ट बताया है कि सभी जीवों के पर्याप्त में भी कार्मण काययोग होता है। इस आगमिक कथन से यह स्पष्ट होता है कि कार्मण काययोग मात्र विग्रह गति एवं केवलि समुद्घात के समय ही नहीं होता, अन्य समय में भी होता है।

जीवधड़ा आदि में विग्रहगति एवं केवलि समुद्घात की अपेक्षा से ही कार्मण काययोग के भेद लिए हैं। वह प्रधानता की अपेक्षा समझना चाहिए।

तत्त्व बोध-5

श्रीमद् नंदीसूत्र के सादिसपर्यवसित अनादि अपर्यवसित श्रुतज्ञान प्रकरण में कहा है-

''सव्वजीवाणं पि य णं अक्खरस्स
अणंतभागो णिच्चुग्घाडियओ''

इसकी व्याख्या करते हुए चूर्णिकार जिनदास महत्तर ने एक महत्त्वपूर्ण बात बताई है कि अक्षर (ज्ञान) की सबसे कम मात्रा पृथ्वीकायिक जीवों में होती है। उससे अप्कायिक जीवों में अनन्तवाँ भाग अधिक, उससे तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक जीवों में क्रमश: अनन्तवाँ भाग ज्ञान अधिक होता है। चूर्णि का यह उल्लेख इस बात को स्पष्ट करता है कि पृथ्वीकायिक आदि पाँच स्थावर जीवों का नाम इसी क्रम में क्यों बताया गया है। सम्बन्धित चूर्णि पाठ इस प्रकार है-

''सव्वजहन्नो अणंतभागो निच्चुग्घाडो
पुढविक्काइए..... ततो य से अव्वत्तं
नाणमक्खरं सव्वजहण्णं भवति। ततो
पुढविकाइतेहिंतो आउक्कातियाण अणंतभागेण
विसुद्धतरं नाणमक्खरं, एवं कमेणं तेउ-वाउ-
वणस्सति-बेइंदिय-तेइंदिय-चतुरिंदिय-
असण्णिपंचेंदिय-सण्णिपंचेंदियाण
य विसुद्धतरं भवतीव्यर्थ:''

-श्रीमद् नंदीसूत्र, सूत्र 75 पर श्री जिनदासगणि महत्तर

कृत 'चूर्णि', पृष्ठ 56, संपादक- मुनि श्री पुण्यविजयजी

श्री विशेषावश्यक भाष्य की स्वोपज्ञ टीका में यह बात विशेष कही है कि स्त्यानर्द्धि निद्रा एवं उत्कृष्ट ज्ञानावरण कर्म के उदय वाले एकेन्द्रिय जीवों में अत्यन्त अव्यक्त चैतन्य होता है।

तत्त्व बोध-6

आगमों में साधु व साध्वियों के आहार का प्रमाण बत्तीस कवल प्रमाण बताया है। प्रमाण से अधिक आहार करने पर ''अप्रमाण'' नामक परिभोगैषणा का दोष बताया है। कवल के विभिन्न अर्थ होते हैं, यथा-

1. जिसका उदर जितने आहार से पूर्ण होता है, उसका बत्तीसवाँ हिस्सा एक कवल प्रमाण है।
2. मुख को विकृत किए बिना जितना आहार मुँह में एक बार में जाता है, उतना एक कवल का परिमाण है।
3. दो हजार चावलों जितना एक कवल का परिमाण है।
4. टेबल टेनिस की गेंद का जितना परिमाण होता है, उतना एक कवल का परिमाण है।

उपर्युक्त विभिन्न अर्थों में से अपनी धारणा प्रथम अर्थ सम्बन्धी है। इसका कारण यह है कि श्रीमद् भगवतीसूत्र शतक 7, उद्देशक 1 में प्रमाणातिक्रांत पान भोजन का वर्णन करते हुए ऊनोदरी के अनेक प्रमाण बताए हैं, जिनमें कहा है कि सोलह कवल प्रमाण आहार करने पर आधा आहार होता है। इस कथन का फलितार्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के स्वयं के पूर्ण आहार को 32 कवल जितना माना है एवं तदनुसार प्रत्येक साधु अथवा साध्वी द्वारा सोलह कवल आहार करने पर आधा आहार होना बतलाया गया है। अत: कवल का अर्थ स्वयं की भूख का बत्तीसवाँ भाग माना जाना चाहिए।

ज्ञातव्य है कि पिण्डनिर्युक्ति आदि में पुरुष का आहार प्रमाण 32 कवल एवं स्त्री का 28 कवल माना है, किन्तु श्रीमद् भगवतीसूत्र में निर्ग्रन्थ एवं निर्ग्रन्थी दोनों द्वारा बत्तीस कवल से अधिक खाए जाने पर ही प्रमाणातिक्रांत नामक दोष बताया है।

तत्त्व बोध-7

रत्नप्रभा पृथ्वी के बारह आंतरे हैं। कहीं-कहीं इस प्रकार की अवधारणा भी चल रही है कि इनमें से नीचे के दस आंतरों में ही भवनपति देव हैं एवं एक-एक आंतरे में एक-एक प्रकार के भवनपति देव हैं। आगमिक दृष्टिकोण से यह मान्यता सम्यक् नहीं है। आगमकारों ने कहीं भी उपर्युक्त प्रकार से वर्णन नहीं किया है। श्रीमद् प्रज्ञापनासूत्र के दूसरे स्थानपद में आगत प्रासंगिक वर्णन इस प्रकार है-

मूल- **''कहि णं भंते! भवणवासीणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता?**

कहि णं भंते! भवणवासी देवा परिवसंति?

गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसतसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्तामज्झिमअट्ठहत्तरे जोयणसतसहस्से, एत्थ णं भवणवासीणं देवाणं सत्त भवकोडीओ बावत्तरिं च भवणवाससतसहस्सा भवंतीति मक्खातं।'' (सूत्र- 177)

अर्थ- भगवन्! पर्याप्त और अपर्याप्त भवनवासी देवों के स्थान कहाँ कहे गए हैं? भवनवासी देव कहाँ निवास करते हैं?

गौतम! एक लाख अस्सी हजार योजन मोटी इस रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर एक हजार योजन (प्रदेश) अवगाहन (पार) करके और नीचे भी एक हजार योजन छोड़कर बीच में एक लाख अठहत्तर हजार योजन में भवनवासी देवों के सात करोड़, बहत्तर लाख भवनावास हैं, ऐसा कहा गया है।

तदनुसार यह धारणा है कि भवनपति देव बारह ही आंतरों में निवास करते हैं। साथ ही यह भी अवधार्य है कि प्रत्येक आंतरे में दसों प्रकार के भवनपति देवों के निवास में भी कोई आपत्ति नहीं है।

तत्त्व बोध-8

जीव के आठ मध्यप्रदेशों को रुचक प्रदेश नहीं कहना चाहिए। श्री भगवती सूत्र के तेरहवें शतक के चौथे उद्देशक में दिशाओं की उत्पत्ति रुचक से कही है। वहाँ यह भी कहा है कि तिर्यक् लोक के मध्य में अष्ट प्रादेशिक रुचक हैं। ध्यान देने योग्य है कि आठों प्रदेशों

के समुदाय को एक रुचक कहा है अर्थात् रुचक आठ हैं, ऐसा नहीं कहना चाहिए। यह भी ध्यातव्य है कि रुचक के साथ प्रदेश शब्द नहीं जोड़ा गया है, बल्कि आठों प्रदेशों को रुचक शब्द के द्वारा कहा गया है। श्री स्थानांग सूत्र के आठवें स्थान में जीव के आठ मध्य प्रदेशों का उल्लेख है। जीव के मध्य प्रदेशों को आगम में रुचक शब्द से अभिहित नहीं किया गया है।

जीव के आठ मध्य प्रदेशों में भी कर्मबन्ध होता है। यद्यपि श्री आचारांग सूत्र की शीलांकाचार्य कृत टीका में उन प्रदेशों में कर्मबन्ध नहीं माना है किन्तु आगम वचन **''सव्वेणं सव्वे कडे''** (श्री भग.श. 13.3) के अनुसार सभी जीव प्रदेशों में कर्मबन्ध माना गया है।

केवलिसमुद्घात के समय केवली के मध्य प्रदेश रुचक के स्थान पर रहते हैं, ऐसी अपनी धारणा नहीं है। अपनी धारणा के अनुसार आठ मध्य प्रदेश केवली के औदारिक शरीर के मध्य में ही रहते हैं ताकि आत्मप्रदेशों के संकोच के समय सम्पूर्ण आत्मा पुन: उसी स्थान पर आए। यह अवधेय है कि केवलिसमुद्घात के समय केवली के मध्यप्रदेश अवस्थान सम्बन्धी उपर्युक्त दोनों धारणाओं का स्पष्ट आगमिक प्रमाण नहीं है।

तत्त्व बोध-9

'पृथक्' का अर्थ है अलग, पृथक्त्व यानी अलगाव। अलगाव कम से कम दो में ही हो सकता है। 0 और 1 में पृथक्त्व (अलगाव) संभव नहीं है। दो तथा दो से अधिक किसी भी संख्या में अलगाव संभव होने से पृथक्त्व नौ तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि पृथक्त्व का अर्थ अनेक होता है। दो से लेकर नौ तक को पृथक्त्व मानने की परम्परा का कारण यह समझा जा सकता है कि 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 ये नौ ही अंक होते हैं। इनमें से 1 अपृथक्त्व है एवं 2 से 9 तक पृथक्त्व संभव होने से वे पृथक्त्व संख्याएँ हैं। किन्तु यह सतत् स्मरणीय है कि आगमोक्त 'पुहुत्त' (पृथक्त्व) शब्द का अर्थ मात्र 2 से 9 तक सीमित नहीं है अपितु इसका अर्थ अनेक यानी एक से अधिक सारी संख्याएँ हैं, चाहे वे इकाई, दहाई, सैकड़ा आदि सम्बन्धी संख्याएँ भी क्यों न हो।

तत्त्व बोध-10

प्रचलित खाद्य केलों की अचित्तता के सन्दर्भ में आगम, सम्मेलन निर्णय, विज्ञान इत्यादि आधारों से पर्याप्त प्रामाणिक सामग्री पूर्व में जैन सिद्धान्त मंजूषा के माध्यम से ज्ञात हो ही चुकी है। इसी सन्दर्भ में यह तत्त्व भी ज्ञातव्य है कि केले को वनस्पति के 'मूलबीया' के अन्तर्गत ग्रहण किया गया है एवं तदनुसार केले के मूल को बीज रूप माना है। केले (कदली) को मूल बीज बताने वाले स्थान ये हैं-

(1) मूलं बीजं येवां ते मूल बीजा उत्पलकन्द कल्यादय:

-जीवसमास गाथा 34 की मलधारी हेमचन्द्राचार्य कृत वृत्ति में

(2) 'कदल्यादयो मूल बीजा:'

-श्री आचारांग सूत्र 1/1/5 निर्युक्ति गाथा 130 की शीलांकसूरी कृति वृत्ति

इसी सन्दर्भ में सोजत में हुए मंत्रिमण्डल सम्मेलन की लिखित कार्यवाही की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं- ''मैं इसका सदस्य नहीं हूँ, मंत्री भी नहीं हूँ, व्याकरण, टीका, भाष्य भी पढ़ा हुआ नहीं है। इतना ही जानता हूँ कि पहले अचित्त मानते थे, मैं भी खाता था और ये (समर्थमलजी म.सा. के प्रति अंगुलि निर्देश करते हुए) भी खाते थे। लगभग दो वर्ष कम-ज्यादा से छोड़ा है। अब कविजी म.सा. के आगम और भाष्य के प्रमाण सुने हैं, अब जैसा उपाचार्यश्री और मंत्री लोग निर्णय करेंगे वहीं मैं मानूंगा।''

तत्त्व बोध-11

देव के संदर्भ में श्री आवश्यक सूत्र में कहा है- 'अरिहंतो मह देवो'। श्री भगवती सूत्र में भी पाँच प्रकार के देवों का वर्णन करते हुए श.12, उ. 9 में तीर्थंकर भगवान को ही देवाधिदेव कहा है।

पिछले कुछ समय से कुछ स्थानकवासी परम्पराओं में अरिहंतों के साथ सिद्धों को भी कुछ देव कहा जाने लगा है। सिद्धों को देव कहने का कोई प्रामाणिक आधार ज्ञात नहीं हो पा रहा है। श्री भगवती सूत्र के उपर्युक्त स्थल पर भी पाँचों प्रकार के देवों में सिद्धों को ग्रहण नहीं किया है। प्रतिक्रमण में दूसरे पद की भाव वन्दना में सिद्धों को 'तिक्खुत्तो' के पाठ से वन्दन करते हुए (देवयं) से

वंदना की जाती है किन्तु आगमों में कहीं भी सिद्धों को तिक्खुत्तो के पाठ से वन्दन किए जाने का उल्लेख नहीं है। वैसे भी सिद्धों का विराजना अप्रत्यक्ष एवं अतिदूर होने से साक्षात् प्रदक्षिणा, पर्युपासना एवं मस्तक से वंदना संभव भी नहीं है। अत: प्रतिक्रमण में सिद्धों के लिए 'देवयं' का उच्चारण किए जाने मात्र से सिद्धों को देव मानना उपयुक्त नहीं है। श्री आवश्यक सूत्र का मूल पाठ एवं श्री भगवती सूत्र का मूल पाठ यह स्पष्टत: निर्देश करता है कि अरिहंतों को देव माना जाना चाहिए। तदनुसार अरिहंतों को ही देव मानना उपयुक्त लगता है।

तत्त्व बोध-12 (ए)

दो प्रकार के धर्म कहे हैं- आगार धर्म और अणगार धर्म। वर्तमान में अनेक बार अगार धर्म को आगार धर्म कह दिया जाता है एवं अणगार धर्म की व्याख्या इस प्रकार की जाती है कि जिनके कोई आगार (छूट) नहीं है, वे अनगार हैं। वस्तुत: ऐसी व्याख्या सही नहीं है। अगार का अर्थ वस्तुत: घर है। जो घर से रहित है, वह अनगार है। घर वालों का अर्थात् गृहस्थ का जो धर्म है, वह अगार धर्म है एवं अणगार अर्थात् अन्+अगार = घर-बार रहित मुनि का धर्म अणगार धर्म है।

तत्त्व बोध-12 (बी)

कुछ समय पूर्व श्री दशवैकालिक सूत्र की एक हस्तलिखित प्रति का प्रथम व अन्तिम पत्र दृष्टिगोचर हुआ, जिसमें उल्लेखित लेखन काल व नामों से ज्ञात होता है कि यह प्रति पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म.सा. के समय की है। ज्ञातव्य है कि इस प्रति में भी 'धम्मो मंगलमुक्कट्ठं'' ऐसा ही उल्लेख प्राप्त होता है, जो यह निर्दिष्ट करता है कि अपनी परम्परा भी 'मुक्कट्ठं' पाठ की ही रही है।

प्रति के अन्त में प्रदत्त पुष्पिका इस प्रकार है-

''इति श्री दशवैकालिक सूत्र सम्मतं ।। संवत् 1881 को साल जेठ सुद 10 वार दीतवार। लखतं सुरजमल वुदी मंदे। हुकमचंदजी का पठणा अरथ।''

साभार- जैन सिद्धांत मंजूषा ●●●

जैन संस्कार पाठ्यक्रम के सिलेबस में निम्न परिवर्तन किया गया है। परीक्षार्थी ध्यान में लेने का कष्ट करें-

* भाग 2 व 3 तत्व विभाग के पाठ्यक्रम में 25 बोल के स्थान पर जैन सिद्धांत बत्तीसी सम्मिलित किया गया है। * भाग 2 में जैन सिद्धांत बत्तीसी 1 से 16 सिद्धांत तक (प्रश्न उत्तर सहित) अध्ययन करे। * भाग 3 में जैन सिद्धांत 17 से 32 सम्पूर्ण सिद्धांत आएंगे (प्रश्न उत्तर सहित) अध्ययन करे।

भाग-9

1. **सूत्र विभाग:** सूत्र: असंस्कृत नामक चौथा अध्ययन (मूल अर्थ), मोक्ष मार्ग (मूल अर्थ)	35
2. **तत्व विभाग:** लघु दण्डक, 33 बोल का थोकड़ा	30
3. **कथा विभाग:** सत्यवादी राजा हरिशचन्द्र, महासती सुभद्रा, महावीर के प्रथम गणधर 'इन्द्रभूति गौतम'	10
4. **काव्य विभाग:** वे गुरु मेरे उर बसो (समता सुमन पुस्तक)	10
5. **सामान्य ज्ञान विभाग:** ज्ञान-फुलवारी, कालचक्र : एक अनुशीलन, आशातना, साधु संतों से बात करते समय ध्यान रखने योग्य बातें	15

भाग-10

1. **सूत्र विभाग:** सूत्र: श्री दशवैकालिक सूत्र के 9वें अध्ययन का प्रथम व चतुर्थ उद्देशक, उत्तर 16वें अध्ययन ब्रह्मचर्य, (मूल अर्थ)।	35
2. **तत्त्व विभाग:** गर्भ का थोकड़ा, 8 कर्म की 148 प्रकृतियाँ	30
3. **कथा विभाग:** आत्मबली और दृढ़धर्मी महासती श्री रंगूजी म.सा., रोहिणेय चोर (सत्संग का महत्व), वीर लोकाशाह	10
4. **काव्य विभाग:** पालो दृढ़ आचार, अमूल्य तत्व विचार	10
5. **सामान्य ज्ञान विभाग:** साधक एक परिचय, सचित्त-अचित्त विवेक, सम्मूर्च्छिम	15

यह परिवर्तित पाठ्यक्रम आगामी परीक्षा 2022 से लागू किया जाएगा।

-राष्ट्रीय संयोजिका

संघ गौरव

श्री लहरसिंह सिरोया राज्यसभा सदस्य मनोनीत

आचार्य प्रवर की महती अनुकम्पा से श्री लहरसिंहजी सिरोया का कर्नाटक से भारतीय जनता पार्टी के राज्यसभा सदस्य के रूप में चयन किया गया है। यह जैन समाज के लिए गौरव की बात है। इसके लिए श्री सिरोयाजी को श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। आपका चयन आपकी उत्कृष्ट कार्यशैली, मृदुभाषिता, कुशल नेतृत्व क्षमता एवं जनकल्याण भावना का प्रतीक है। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

श्री राजूभाई ढ़ोलकिया केबिनेट मंत्री मनोनीत

आचार्य प्रवर की महती अनुकम्पा से श्री राजू भाई ढ़ोलकिया का उड़ीसा से केबिनेट मंत्री के रूप में चयन पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। आप सदैव ही समाजकल्याण, जनसेवा एवं सहयोग के क्षेत्र में अग्रणी रहे हैं। शीर्ष स्तर पर आपके चयन से जैन समुदाय में खुशी की लहर छाई हुई है। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

श्री अभिनव जैन की आईएएस में 14वीं रैंक

कर्मठ, दृढ़निश्चयी अभिनवजी जैन, दिल्ली ने अपने कठोर परिश्रम एवं गुरुजनों के आशीर्वाद से भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा में 14वीं रैंक प्राप्त कर अपूर्व सफलता का परचम लहराया है। आपकी इस गौरवमयी सफलता हेतु हम आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हैं। आपकी सफलता समाज के अन्य युवाओं के लिए प्रेरणास्पद है। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष राष्ट्रीय महामंत्री
एवं समस्त पदाधिकारीगण व सदस्यगण
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आज हम अपने अंतर को टटोलें, देखें कि क्या प्रक्रियाएँ होती हैं? हम भी उपदेश में कह देते हैं, जैसे मैं भी कह रहा हूँ। इसमें जोर नहीं लगता, पर जब आचरण की स्थिति बनती है तब देखें कि भीतर कहीं कोई भाव प्रकम्पित तो नहीं होता, तर्क-वितर्क तो नहीं उभरता! तभी जान सकते हैं कि विनय के क्षेत्र में चरण-न्यास हुआ या नहीं। कहना बहुत सरल है, परन्तु विनय-व्यवहार करना उतना सरल नहीं है।

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

विविध भेंट मार्फत

01 मई 2022 से 31 मई 2022

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट प्रदान की जाती है जिससे विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहे इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में निम्न उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है।

संघ महाप्रभावक सदस्यता भेंट

2,20,000/- निर्मलजी खिंवसरा-ब्यावर

2,20,000/- सुभद्रादेवीजी पगारिया-सूरत

समता भवन निर्माण प्रवृत्ति

(लूणकरणसर हेतु)

3,00,000/- कुलदीपजी उमरावसिंहजी ओस्तवाल-मुम्बई

2,50,000/- सुरेन्द्रकुमारजी दस्साणी एवं समस्त परिवार-मुम्बई

1,25,000/- बलवन्तरावजी जैन-टोंक

(शिंदखेड़ा हेतु)

25,000/- मनोहरीदेवी झंवरलालजी भूरा-जलगाँव

1,25,000/- बलवन्तरावजी जैन-टोंक

(कांकरोली हेतु)

1,25,000/- बलवन्तरावजी जैन-टोंक

(भदेसर हेतु)

1,25,000/- बलवन्तरावजी जैन-टोंक

साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग

5,000/- मनोहरलालजी झेलावत-नगरी

500/- किरणदेवीजी झाबक-कोलकाता

इदं न मम्

1,26,000/- चाँदरतनजी संतोषकुमारजी राकेशकुमारजी बुच्चा-कोलकाता

33,000/- चन्दनमलजी सिंघवी-नागदा जंक्शन

21,000/- शान्तिलालजी रोहितकुमारजी बैद-नागपुर

15,500/- निर्मलकुमारजी सेठिया-हावड़ा

12,000/- किशोरजी बंसन्तीलालजी ललवानी-नासिक

10,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त विजयचन्दजी बरड़िया-गंगाशहर, गोविन्दराम बद्रीनारायण-कोलकाता, पुलकितजी जैन-चित्तौड़गढ़, पलकजी जैन-चित्तौड़गढ़

8,400/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त सुशीलकुमारजी गेलड़ा-हावड़ा, विशालजी चौरड़िया-हावड़ा, बी.डी सेठिया-कोलकाता/उदासर

6,300/- प्रदीपकुमारजी भूरा-हावड़ा

5,500/- विनोदकुमार मगनलालजी मेहता -रतलाम

5,400/- शौकिनजी मुणोत-नीमच

5,100/- किशनजी जैन (सांड)-हावड़ा

5,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त कंचनदेवीजी दुग्गड़-भीनासर /नागपुर, शुभकरणजी डागा-नोखा

2,121/- मोतीलालजी अरिहन्तजी भूरा-बीकानेर

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त ममोलदेवी भंसाली-बीकानेर, किरणदेवी झाबक-कोलकाता

1,111/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त निर्मलजी अभिषेकजी भूरा-बीकानेर, कमलाबाई पुखराजजी चौपड़ा-सेलम्बा

1,100/- जितेन्द्रजी जसराजजी झाबक-अक्कलकुआ

1,000/- प्रतीकजी दुग्गड़-अहमदाबाद

1,200/- राजेशकुमारजी सेठिया-फारबिसगंज

जीवदया

5,100/- अरूणकुमारजी प्रफुल्लजी सेठिया-बीकानेर (स्व. मगनादेवी सेठिया की प्रथम पुण्य स्मृति में)

3,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त संजयकुमारजी योगेशकुमारजी दुग्गड़-सोमेसर, हेमन्तकुमारजी गोयमजी जैन-चौथ का बरवाड़ा (स्व. सुरेशकुमारजी जैन की प्रथम पुण्य स्मृति में)

2,100/- भंवरीदेवीजी सेठिया-कोलकाता

1,500/- राजेशकुमारजी कोठारी-कोलकाता

1,100/- भंवरीदेवीजी सेठिया-उदासर (स्व. गिरधारीमलजी सेठिया की पुण्य स्मृति में), जयकुमारजी शाह-राजनांदगाँव (स्व. विजयकुमारजी शाह की प्रथम पुण्य स्मृति में), जयप्रकाशजी आंचलिया-नासिक

600/- कैलाशचदजी जैन-सवाईमाधोपुर

501/- कमलकिशोरजी शकुन्तलाजी बोथरा-दिल्ली (पौत्र रिद्धम बोथरा के जन्मदिवस पर)

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त गुप्तदान-देशनोक (स्व. लख्मीचन्दजी सांड की पुण्य स्मृति में), किरणदेवीजी झाबक-कोलकाता, भोपालसिंहजी बाफना-कनेरा

दानपेटी योजना

21,000/-सुन्दरबाईजी कोटड़िया-कोंडागाँव

11,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त उत्तमचंदजी कोटड़िया-कोंडागाँव, हुलासचंदजी संतोषदेवीजी ललवानी-बैंगलोर

7,700/- प्रदीपकुमारजी सेठिया-कोलकाता

7,100/- राजमलजी मनोजजी ओस्तवाल-कोंडागाँव

6,180/- अरविन्दजी विवेकजी मुकीम-रायपुर

6,000/- त्रिलोकचंद अंशुलजी चौपड़ा-रायपुर

5,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त नवीनजी कोटड़िया -कोंडागाँव, जवरीलाल अभिषेकजी कोटड़िया-पंदः, माणिकचंदजी डागा-बैंगलोर, इन्द्रचन्दजी महेन्द्रजी जितेन्द्रजी सिपानी-बैंगलोर

5,000/- गुप्तदान-अहमदाबाद, पारसमलजी अंजनादेवीजी सुखलेचा-बैंगलोर

4,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त विजयलालजी कोटड़िया -कोंडागाँव, गौतमकुमारजी, मनीषकुमारजी कोठारी-बीकानेर

3,500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त गौतमचन्दजी श्रेयाशंकुमारजी संचेती-कोंडागाँव, प्रमोदजी धाड़ीवाल-रायपुर

3,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त संजयकुमारजी योगेशकुमारजी दुग्गड़-सोमेसर, अशोकचंदजी सुयशजी लोढ़ा -डोगरगांव, किशोर विकासजी संचेती-कोंडागाँव, अंकुशजी संचेती-कोंडागाँव, राजकुमारजी संचेती-कोंडागाँव, शान्तिलालजी सुराणा -कोंडागाँव, बसन्तकुमारजी सुराणा -कोंडागाँव

3,011/- गुलाबचंदजी भाविकजी बैद-रायपुर

2,550/- छगनलालजी सिपानी-दिल्ली

2,508/- अशोकजी अंशुलजी धारीवाल-रायपुर

2,500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त शेषमलजी सुराणा-कोंडागाँव, मोहनलालजी कोटड़िया-कोंडागाँव, प्रसन्नजी तुषारजी धारीवाल-रायपुर

2,000/- सुरेशजी बच्छावत-बीकानेर

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त अगरचन्दजी इन्द्रचन्दजी लोढ़ा -डोगरगाँव, संघीलालजी संचेती-कोंडागाँव, महेन्द्रजी मोहितजी सुराणा -कोंडागाँव, भंवरलालजी संचेती-कोंडागाँव, खेतमलजी ओस्तवाल -कोंडागाँव, दिलीपजी ओस्तवाल -कोंडागाँव, राजुजी सांखला-कोंडागाँव, अशोक सिद्धार्थजी मुकीम -रायपुर, अनिलकुमारजी सांखला-रायपुर, गीरीशकुमारजी यातिशकुमारजी बुरड़-रायपुर

1,850/- विजयकुमारजी मुथा-रायपुर

1,800/- पन्नालालजी अशोकजी कोटड़िया -मुढीपार

1,700/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त ललितजी संचेती -कोंडागाँव, नेमीचन्दजी नवीनजी सुराणा-कोंडागाँव, भंवरलालजी भंसाली -कोंडागाँव

1,500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त स्वरूपचंद नवीनजी चौरड़िया-खैरागढ, कोमलचंद भावेशजी

चौरड़िया-खैरागढ, सरलाजी सांखला-खैरागढ, शान्तिलालजी संचेती-कोंडागाँव, जीतमलजी सुराणा-कोंडागाँव, नीलमचंदजी सुराणा-कोंडागाँव, शान्तिलालजी धारीवाल-रायपुर, भंवरलालजी लालचंदजी चौरड़िया-मुढीपार, गौतमचंदजी रितेशजी कोटड़िया-मुढीपार, गौतमचंदजी भावेशजी कोटड़िया-मुढीपार, सुनिलजी कितिनजी कोटड़िया-मुढीपार, जेठमलजी कोमलजी बोथरा-मुढीपार, राजेन्द्रकुमारजी कविजी गोलछा-बीकानेर

1,300/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त सुरेशचन्दजी गौरवजी संचेती -कोंडागाँव, मुकेशजी महावीरजी सुराणा-कोंडागाँव, शुभकरणजी डागा-नोखा

1,200/- वर्धमानजी सुराणा-रायपुर

1,151/- सुन्दरलालजी नरेशजी सिपानी-बैंगलोर

1,131/- सुदर्शनजी आछा-रायपुर

1,111/- जीवनचंदजी ताराचंदजी नाहटा -राणाखुज्जी

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त हिरालालजी राखेचा-रायपुर, शान्तिलालजी बाफना-अछोली, प्रेमचन्दजी श्रीश्रीमाल-मांगचुवा, खेतमलजी सोनी-मांगचुवा, रमेशचंदजी रविजी गुणधर -चिकलाकसा, किरणदेवीजी बाफना -मानपुर, केशरीचंदजी चौरड़िया-अम्बागढ़ चौकी, टिकमचंदजी गौतमचंदजी सालेचा-खैरागढ, पुनमचंदजी कोटड़िया -खैरागढ, अमृतलाल ललितजी सांखला-खैरागढ, गौतमचंद संजीवजी चौपड़ा -खैरागढ, हीरालालजी सिंघवी-खैरागढ, रानीदानजी श्रीश्रीमाल-डोगरगांव, संदीपजी जिनेशजी लोढ़ा-डोगरगांव, राकेशकुमारजी सौरभजी लोढ़ा-डोगरगांव, शीतलजी लोढ़ा-डोगरगांव, प्रकाशचंदजी अजयजी बोहरा-डोगरगांव, नितिनजी संचेती-कोंडागाँव, डोगरमलजी सुराणा -कोंडागाँव, जितेन्द्रजी सुराणा-कोंडागाँव, तनसुखजी सुराणा -कोंडागाँव, रानुलालजी सुराणा-कोंडागाँव, मनीषजी सुराणा-कोंडागाँव, ज्ञानचंदजी सुराणा-कोंडागाँव, भीकमचंदजी लूंकड़-कोंडागाँव, विजयजी बोथरा-रायपुर, जीवनलालजी झामड़-रायपुर, गौमतचंदजी गादिया-रायपुर, महेन्द्रकुमारजी लोकेशजी बुरड़-रायपुर, नवरतनजी कोटड़िया-रायपुर, लक्ष्मीचंदजी हरखचंदजी कोटड़िया-रायपुर, अंकुरमलजी सौरभजी बाघमार-रायपुर, शान्तिलालजी यशजी बाफना-रायपुर, पानमलजी डागा -रायपुर, धर्मेन्द्रजी कुशालजी सेठिया-रायपुर, उत्तमचन्दजी सेठिया-रायपुर, शान्तिलालजी तरूणजी बेगानी-रायपुर, ललितकुमारजी यशजी चौपड़ा-रायपुर, कमलादेवीजी चौपड़ा-रायपुर, कमलजी कटारिया-रायपुर, विजेन्द्रकुमारजी दुर्गेशजी नाहटा-रायपुर, गौतमचंदजी नयनजी कोटड़िया-रायपुर, धर्मचन्दजी श्रीश्रीमाल-मोहल्ला, संजयजी श्रीश्रीमाल-मोहल्ला, गुलाबचंदजी डोशी-भेड़ी, कैलाशचंदजी गुरलिया-बैंगलोर, डुंगरमलजी गुरलिया-बैंगलोर, कन्हैयालालजी भरतजी सेठिया-बैंगलोर, शान्तिलालजी सेठिया-बैंगलोर, लिलमचंदजी प्रवीणजी ललवानी-बैंगलोर, अशोककुमारजी मुणोत-बैंगलोर, अभयजी अशोकजी ललवानी-बैंगलोर, मोतीलालजी भूरा-बीकानेर, सुरेशकुमारजी गोलछा-बीकानेर, राजेन्द्रजी तरूणजी मुणोत -बीकानेर, कमलचंदजी तातेड़ -बीकानेर

1,041/- मनोजकुमारजी बोथरा-रायपुर

1,001/- अजयकुमारजी पारख-रायपुर

1,000/- भीकमचंदजी कोटड़िया -खैरागढ, मोतीचन्द सौरभजी बाफना-रायपुर, बंशीलाल कमलेशजी नाहटा-रायपुर, रमेशकुमार नमनजी खटोड़-रायपुर, मनोहरमल रिषभजी सुराणा-रायपुर, मोहनलाल अभिषेकजी संचेती-रायपुर, खेमचन्द उत्तमचंदजी गोलछा-रायपुर, महावीरजी गोलछा-रायपुर, आलोकजी गोलछा-बीकानेर, खुबचंदजी भंवरलालजी सुराणा-बीकानेर, सुशीलजी रिषभजी बच्छावत-बीकानेर

969/- स्वरूपबाईजी बाफना-रायपुर

851/- महेन्द्रजी सौरभजी चौरड़िया-रायपुर,

नानालालजी नन्दावत-बैंगलोर

751/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त महेन्द्रकुमारजी गोलछा-रायपुर, घेवरचंद अशोकजी गोलछा-रायपुर

700/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त भागचन्दजी ललवानी-मांगचुवा, प्रकाशचन्दजी लुणिया-मांगचुवा, शिवचंदजी प्रफुल्लजी सुराणा-अम्बागढ़ चौकी, उत्तमचंदजी सिंगी-अम्बागढ़ चौकी, विकासजी धारीवाल-रायपुर, राजेन्द्रकुमारजी अभयजी खटोड़-रायपुर, विनयकुमारजी दुग्गड़-रायपुर

610/- सरदारबाईजी बोथरा-रायपुर

600/- चौपचंदजी बाघमार-चिकलाकसा

580/- मनीषकुमारजी गोलछा-बीकानेर

534/- किशोरकुमारजी सांखला-रायपुर

501/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त कुशालचंदजी श्रेयाशंकुमारजी नाहटा -रायपुर, सुरेशकुमारजी मुथा - रायपुर, ओमप्रकाशजी बरलोता -रायपुर, दानमलजी कात्रेला -रायपुर, देवराजजी कैलाशजी दक-बैंगलोर, विमलादेवी धैर्याजी भव्याजी कोठारी-बीकानेर

550/- शान्तिलालजी गोलछा-बीकानेर

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त दुलीचन्द रिषभकुमारजी बाफना -अछोली, प्रकाशचंदजी बाफना-अछोली, सुरेन्द्रकुमारजी चौरड़िया -अछोली, धर्मचन्दजी चौरड़िया -अछोली, शंकरलालजी राखेचा-अछोली, सुभाषजी लुणिया-मांगचुवा, पुनमचन्दजी लुणिया-मांगचुवा, लक्ष्मीचंदजी सांखला-उमरवाही, जीवनलालजी अमनजी सांखला-उमरवाही, मोहनलालजी नाहटा-उमरवाही, उत्तमचंदजी नाहटा - उमरवाही, सोहनलालजी नाहटा-उमरवाही, ताराचंदजी प्राणेशजी बाघमार -चिकलाकसा, संतोषकुमारजी संचेती-चिकलाकसा, राजेन्द्रकुमारजी गुणधर - चिकलाकसा, अगरचन्दजी गौरवजी ढेलड़िया -मानपुर, उत्तमचंद प्रकाशचंदजी लोढ़ा -मानपुर, दिपेशजी जैन - मानपुर, राजेन्द्रजी पारख -मानपुर, लक्ष्मीचंद मनीषजी चौरड़िया-मानपुर, प्रेमचंदजी चौरड़िया-मानपुर, दिनेशजी चौरड़िया-मानपुर, रमेशचंदजी नाहटा-अम्बागढ़ चौकी, आकाशजी लोढ़ा -अम्बागढ़ चौकी, दिनेशजी लोकेशजी नाहटा-अम्बागढ़ चौकी, मोहनलालजी उत्तमचंदजी नाहटा -अम्बागढ़ चौकी, ललितजी नाहटा -अम्बागढ़ चौकी, दिलीप अभिषेकजी सांखला -खैरागढ, अशोक रिषभजी चौरड़िया -खैरागढ, गुप्त -खैरागढ, राजेश स्वरूपजी बोथरा -डोगरगाँव, संतोषजी श्रीश्रीमाल -डोगरगाँव, रविजी रमनजी नाहटा -डोगरगांव, प्रेमचन्दजी संचेती-कोंडागाँव, संजयजी चौरड़िया-कोंडागाँव, शेषकरण जितेन्द्रजी बरलोता-रायपुर, विवेकजी कमलेशजी गादिया-रायपुर, प्रमोदजी सम्पतलालजी सेठिया-रायपुर, प्रवीणकुमारजी डाकलिया-रायपुर, संतोषजी राहुलजी बरड़िया -रायपुर, रूपेशकुमारजी बैद-रायपुर, सुरेशकुमारजी जयन्तकुमारजी बाफना-रायपुर, मोहनलालजी किशनजी गोलछा-रायपुर, अमनकुमारजी बाफना-रायपुर, टिकमचंदजी पारख-रायपुर, विकासकुमारजी तन्मयजी बाफना-रायपुर, विपुलकुमारजी सावेदजी पींचा-रायपुर, अतुलकुमारजी चौपड़ा-रायपुर, सुरेशकुमारजी मानसजी बुरड़-रायपुर, कस्तुरचंदजी कपिलजी सांखला-रायपुर, यशकुमारजी गोलछा-रायपुर, सुनिलकुमारजी कोठारी-रायपुर, मोहनलालजी मोदी-रायपुर, शान्तिलालजी बोथरा-रायपुर, धर्मचन्दजी चौरड़िया-रायपुर, सुरेशजी अनिलजी खटोड़-रायपुर, मांगीलालजी संजयजी खटोड़-रायपुर, विजयकुमारजी कविजी मुकिम-रायपुर, राजेन्द्रजी नाहटा-रायपुर, उमेदजी बैद-रायपुर, प्रफुलजी बरड़िया-रायपुर, उत्तमचंदजी चिरागजी बाघमार-रायपुर, धर्मचंदजी निलेशजी गोठी-रायपुर, मनोजजी मनीषजी सुराणा-राणाखुज्जी, मूलचंदजी संचेती-भारीटोला, कछारमलजी संचेती-मोहल्ला, शान्तिलालजी सतीशजी डोशी-भेड़ी, सुखलालजी बाफना-राजनांदगांव, विजयलालजी कोटड़िया -

मुंगेली, जेठमलजी कोटड़िया -मुंगेली, पन्नालालजी कोटड़िया -मुंगेली, पारसमलजी कोटड़िया-मुंगेली, कन्हैयालालजी कोटड़िया-मुंगेली, नरेन्द्रकुमारजी कोटड़िया-मुंगेली, राजकुमारजी कोटड़िया-मुंगेली, अरूणकुमारजी कोटड़िया-मुंगेली, पाबूदानजी कोटड़िया -मुंगेली, गौरवकुमारजी कोटड़िया -मुंगेली, नरेन्द्रजी अमितजी सुमितजी सुराणा -बैंगलोर, ओमप्रकाशजी दुग्गड-बैंगलोर, कुशालकुमारजी गन्ना-बैंगलोर, महावीरचंदजी नन्दावत-बैंगलोर, शकुन्तलादेवी बांठिया -बीकानेर, नरेन्द्रकुमारजी गोलछा -बीकानेर, रविन्द्रजी बरड़िया -बीकानेर, राजेन्द्रकुमारजी बुच्चा -बीकानेर, बंशीलालजी बांठिया -बीकानेर

उच्च शिक्षा योजना

51,111/- कोमलचंदजी बोहरा-मुम्बई/चिकारड़ा

महत्तम महोत्सव

51,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त शान्तिलालजी सेठिया-लुधियाना, संजयजी गुलाबचंदजी जैन-सुल्लुरपेटा-आन्ध्रप्रदेश

50,000/-राजेशजी गुलगुलिया- सिलचर/देशनोक

11,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त शौकिनलालजी मुणोत-नीमच, मनोजकुमारजी पारसमलजी पिपाड़ा-बिरमावल (रिषभ, रिषिका और ग्रन्थ के जन्मदिवस के उपलक्ष्य पर)

समता प्रचार संघ

1,00,000/- इन्दुबालाजी मुन्नालालजी पंवार-कानवन

1,00,000/- विजयकुमारजी टंच-बदनावर

समता संस्कार पाठशाला

1,000/- गुप्त-अजमेर

500/- किरणदेवी झाबक-कोलकाता

समता सहिता सेवा/विहार सेवा

21,000/- बिमलकुमारजी संचेती- विशाखापट्टनम

1,000/- भगवतीदेवी सेठिया-उदासर (स्व. गिरधारीमलजी सेठिया की पुण्य स्मृति में)

500/- किरणदेवी झाबक-कोलकाता

समता साहित्य स्टॉल अनुदान

2,000/- श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ-दल्लीराजहरा

1,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त कैलाशचंदजी कोठारी-गंगापुर, विनोदजी देसरड़ा-गंगापुर, सुरेशचंदजी सिंघवी-गंगापुर, अनिलकुमारजी कोठारी-चैन्नई, सज्जनराजजी कमलेशजी कोठारी-चैन्नई

730/- सुनिलजी बम्ब-टोंक

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

20,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त दीपाजी चण्डालिया-चैन्नई, प्रितीजी खेतपालिया-चैन्नई

5,500/- भंवरीदेवी सेठिया-कोलकाता

1,000/- भंवरीदेवी सेठिया-उदासर (स्व. गिरधारीमलजी सेठिया की पुण्य स्मृति में)

500/- किरणदेवी झाबक-कोलकाता

श्रमणोपासक भेंट

11,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त लहरीबाई एवं समस्त चावत परिवार-लसड़ावन, इन्द्रचंदजी बैदमुथा-बिलासपुर

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त उम्मेदमलजी प्रकाशचंदजी बुरड़-ब्यावर, कमलाबाईजी चौरड़िया-हिन्दमोटर/गंगाशहर (महेन्द्रजी चौरडिया के नूतन गृह प्रवेश के उपलक्ष्य पर)

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त डॉ सुभाषजी पंकजजी प्रभातीराजजी मेहता-कोटा (स्व. माताश्री संतोषदेवीजी मेहता की पुण्य स्मृति में), रामबिलासजी जैन-कोटा (स्व. विमलादेवीजी जैन की स्मृति में), बाबूलालजी गजेन्द्रजी जैन- झारखोड़ा (जितेन्द्रजी के शुभविवाह के उपलक्ष्य में), पवनकुमारजी जैन-सवाईमाधोपुर (शुभविवाह के उपलक्ष्य में)

1,000/- राजेन्द्रकुमारजी अमितकुमारजी जैन-रामपुरा/इन्दौर (पुत्र के शुभविवाह के उपलक्ष्य में)

501/- ओमप्रकाशजी जैन-सवाईमाधोपुर (पुत्र

जितेन्द्रजी के शुभविवाह के उपलक्ष्य में)

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त किरणदेवी झाबक-कोलकाता, कैलाशचन्दजी जैन- सवाईमाधोपुर

श्रमणोपासक आजीवन सदस्यता सहयोग

5,000/- पदमाजी अनिलकुमारजी रांका-नवसारी

2,000/- गुप्तदान-भीलवाड़ा

संघ सहयोग

18,750/- महिला और बहु मण्डल-बड़ीसादड़ी

11,000/- कंचनदेवी सुन्दरलालजी छल्लानी गंगाशहर, समता महिला मण्डल-चैन्नई

5,100/- समता महिला मण्डल-कानवन

5,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त निहारबालाजी डांगी-बड़ीसादड़ी, शशिकलाजी डांगी-ब्यावर, गुप्तदान-ब्यावर, समता महिला मण्डल-नीमच, समता महिला मण्डल-रतलाम

3,100/- समता महिला मण्डल- पिपलियामण्डी

2,500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त समता महिला मण्डल-चारूवा, समता महिला मण्डल-हरदा

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त समता महिला मण्डल-इन्दौर, समता महिला मण्डल-रावटी, समता महिला मण्डल- शिवानीबानापुरा, समता महिला मण्डल-नगरी, समता महिला मण्डल-संजीत, समता महिला मण्डल-खिरकिया

1,650/- गुप्तदान-रतलाम

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त समता महिला मण्डल-उज्जैन, निष्ठा पंकजजी कटारिया-रतलाम

1,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त समता महिला मण्डल-मन्दसौर, अरूणाजी कोठारी-रतलाम, समता महिला मण्डल-बिरमावल, पुष्पाजी बरड़िया-रतलाम

500/- ममताजी पिरोदिया-रतलाम

विहार सेवा संयोजन

1,00,000/- सुनीताजी तुषारजी बरमेचा -उलंदरपेठ

1,00,000/- हीरालालजी पुखराजजी चौपड़ा-सेलम्बा

श्री धर्मेशमुनिजी यावन स्मृति निधि

5,00,000/- पारसमलजी रतनलालजी रांका-चैन्नई/सौराष्ट्र

अनन्य महोत्सव-2020

1,100/- विकासबाबुजी जैन-बजरिया

: **विशेष** :

साहित्य आजीवन सदस्यता 03, श्रमणोपासक आजीवन सदस्यता 50

1 अप्रैल 2022 से 31 मई 2022 तक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में अधोलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन कार्यालय को जमाकर्त्ता के नाम एवं किस मद हेतु राशि जमा की गई, इसकी सूचना प्राप्त न होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केन्द्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाईल नम्बर 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	राशि	अन्य विवरण
एस.बी.आई बैंक		
18.04.22	7950/-	Ch.No. 439337
10.05.22	3100/-	नकद
11.05.22	5000/-	CDM
यूको बैंक		
30.05.22	3500/-	नकद

उपरोक्त भेंट दाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेन्द्र!

जन्म
19-10-1937

स्वर्गवास
18-04-2022

सुश्राविका सूरजदेवी नाहटा, बीकानेर/मुम्बई

धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सूरजदेवी नाहटा धर्मपत्नी स्व. श्री झँवरलालजी नाहटा, पुत्रवधू स्व. श्री चम्पालालजी नाहटा, बीकानेर निवासी मुम्बई प्रवासी का 18 अप्रैल 2022 को 84 वर्ष की आयु में नवकार महामंत्र का जाप करते हुए स्वर्गवास हो गया।

आप अत्यन्त धार्मिक, समताधारी, सरल हृदय, हँसमुख व मिलनसार व्यक्तित्व की धनी थी। आपके जीवनपर्यन्त दो सामायिक का लक्ष्य रहता था और अष्टमी व चतुर्दशी को रात्रिभोजन का त्याग था। वर्ष 2000 में आपने आचार्य प्रवर से शीलव्रत के प्रत्याख्यान लिए थे। आचार्य प्रवर के मलाड प्रवास के समय आपने पूर्ण जिम्मेदारी से सेवाएँ प्रदान की।

आप दृढ़ निश्चयी महिला थी। जब मुम्बई में आपके पति श्री झँवरलालजी नाहटा ने ''स्वास्तिक बैटरी'' की फैक्ट्री की स्थापना की तो आपने कंधे से कंधा मिलाकर अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए पूरी फैक्ट्री खुद ने संभाली।

आप गंगाशहर के सुप्रसिद्ध व्यवसायी चतुर्भुजजी बोथरा की पौत्री व तोलारामजी की पुत्री थी। आपके तीन भाई स्वर्गीय श्री जसकरणजी बोथरा, श्री रिद्धकरणजी बोथरा व श्री कन्हैयालालजी बोथरा है। तीनों भाई सदैव श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ से जुड़े रहे हैं व समय-समय पर अपने दायित्वों का निर्वहन किया है। आपके एक पुत्री प्रेमलता डागा गंगाशहर निवासी दिल्ली प्रवासी श्री कमलचन्दजी डागा की धर्मपत्नी है। कमलचन्दजी डागा दिल्ली के प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं धर्मनिष्ठ सुश्रावक हैं। श्री डागाजी समाजसेवा में अपनी अग्रणी भूमिका निभाते रहे हैं।

आपके पुत्र एवं पुत्रवधू क्रमश: रमेश-सुमन, हेमन्त-जयश्री हैं, जो मिलनसार, सेवाभावी, सुसंस्कारी हैं। आपकी पौत्रियाँ करिश्मा और दिव्या तथा पौत्र अंकित, धीरज और आदित्य हैं। पूरे परिवार ने आपके अंतिम समय में आप द्वारा प्रदत्त संस्कारों को आदर्श मानते हुए पूर्ण मनोयोग से आपकी सेवा की।

श्रद्धावनत्

रमेश व हेमंत नाहटा, मलाड (मुम्बई)

सुश्राविका वीर माता कमलादेवी गोलछा, बीकानेर

जिस पर हो गुरु राम का साया। उसको मौत ने भी नहीं सताया।।

सुश्राविका वीर माता कमलादेवी गोलछा, बीकानेर जिस पर हो गुरु राम का साया। उसे मौत ने भी नहीं सताया। सरलमना, हंसमुख, सौम्य प्रकृति की धनी मिलनसार सुश्राविका वीर माता कमलादेवी गोलछा धर्मपत्नी श्री विजयकुमारजी गोलछा का 64 वर्ष की आयु में 2 जून 2022 को शुभ भावों के साथ देवलोकगमन हो गया। आपने प्रात: दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर सेठिया कोटड़ी स्थानक में विराजित चारित्रात्माओं के दर्शनार्थ घर से प्रस्थान किया। मार्ग में गायों को रोटी खिलाकर मिलने-जुलने वालों को पूर्ण आत्मीय भावों से जय जिनेन्द्र से सम्बोधन देते हुए सेठिया कोटड़ी स्थानक से थोड़ा पूर्व ही इस नश्वर देह को त्याग दिया।शासन दीपक श्री वीरेन्द्रमुनिजी म.सा. ने पधारकर मंगलपाठ श्रवण कराया। स्वास्थ्य की अनुकूलता होने से आप प्रात:काल चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन कर मांगलिक श्रवण करती एवं यथा अवसर प्रवचन श्रवण का लाभ भी लेती थी। आपने अठाई तप सहित अनेक छोटे-छोटे प्रत्याख्यानों से अपने जीवन को सजाया। आपके प्रतिदिन सामायिक का भाव रहता था एवं स्वाध्याय में रत रहती थी। वर्ष में दो-तीन बार एवं चातुर्मास काल में आप आचार्यश्री एवं अन्य चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन व सान्निध्य का लाभ लेती थी। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आपका पूरा परिवार संघ व शासन सेवा में सदैव अग्रणी रहता है। वर्तमान आचार्यश्री के वर्ष 2001 के गंगाशहर-भीनासर चातुर्मास दीक्षा दलाली का पुण्यार्जन करते हुए चातुर्मास पश्चात् अपनी संसारपक्षीय सुपुत्री सुश्री लक्ष्मी गोलछा एवं वर्ष 2011 में हैदराबाद में अपनी छोटी सुपुत्री सुश्री समता गोलछा की दीक्षाएँ सम्पन्न करवाई। आचार्यदेव की महती कृपा से आपकी दोनों संसारपक्षीय सुपुत्रियाँ साध्वी श्री लघिमाश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री समयाश्रीजी म.सा. के रूप में आचार्य श्री रामेश की बगिया को महका रही हैं।

श्रद्धावनत्

समस्त स्व. श्री पूनमचंदजी गोलछा परिवार, सिंहानी गोलछा मोहल्ला, बीकानेर (राज.)

शोक संदेश

बालोतरा। सुश्राविका अमरीदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री पीरदानजी लोढा का 4 जून को देहावसान हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति असीम श्रद्धा थी। आपके रात्रिभोजन व जमीकंद का आजीवन त्याग था। प्रतिदिन 11 सामायिक व अन्य छोटे-छोटे नियमों के पालन का लक्ष्य रखती थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

नीमच। सुश्रावक कांतिलालजी मेहता पुत्र स्व. श्री कचरमलजी मेहता का 19 मई को 78 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के परमभक्त थे। साधु-संतों की सेवा और समाज के कार्यों में अग्रणी रहते थे। आपने स्थानीय संघ के संरक्षक, अध्यक्ष और मंत्री आदि पदों पर अपनी सेवाएँ दी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

ब्यावर। नेत्रदानी सुश्राविका पारसकँवर धर्मसहायिका श्री ताराचंदजी बन्ट का 75 वर्ष की आयु में सामायिक में चौविहार प्रत्याख्यान सहित निधन हो गया। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश की अनन्य भक्त थी। आपने मासखमण, दो वर्षीतप, पन्द्रह, अठाई, तेले व बेले की तपस्याएँ की थी। आपने पन्द्रह वर्षों से चौविहार कर रही थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

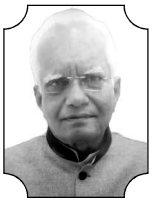

शहादा- सुश्रावक पारसमलजी कोटड़िया का दि 1 जून को संथारा-संलेखना सहित रामेश चालीसा सुनते हुए पंडितमरण हो गया। आप मूलत: लोहावट निवासी थे। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

गंगाशहर। हावड़ा प्रवासी नेत्रदानी सुश्राविका कंचनदेवी धर्मपत्नी सुन्दरलालजी बाँठिया का 69 वर्ष की आयु में1 मई को निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी महिला थी। आपकी आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति प्रगाढ़ आस्था थी। प्रतिदिन सामायिक करने का लक्ष्य रखती थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

गुवाहाटी। सुश्राविका जतनदेवी धर्मसहायिका लूणकरणजी बोथरा का 4 मई को 69 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति थी। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट आस्था थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

निकुंभ। सुश्राविका मनोरमादेवी धर्मपत्नी श्री अमृतलालजी सहलोत का 17 अप्रेल को शुभभावों सहित देवलोकगमन हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति प्रगाढ़ आस्था व श्रद्धा थी। चारित्रात्माओं की सेवा में भी आप सदैव अग्रणी रहती थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

चिंतन की कड़ियाँ

Sticky Wings

Much as it wanted to, the bird could not fly in the open sky. Not that its wings were clipped a la 'Jatayu'. The wings were in place. Then why was it unable to soar? Upon closer scrutiny, it became apparent that its wings were clingy. As such it could not take to the air. Why does our **'sadhana'** (spiritual discipline) not attain to heights? We have been doing **'samayik'** (a spiritual vow) for years. Fasting and '**poushadh'** (a spiritual vow) are proceeding apace. And yet, the heights of spirituality are eluding us. Now, gaining insight into these religious practices, we find our 'wings' sticky with the glue of attachment. Until this glue is cleared away, we will not attain to the heights of the limitless sky. There is need to do away with the sticky.

The Roaring Waves Musings and Reflection of Acharya Shree Ramlal Ji M.S.

आंचलिक रिपोर्ट

सभी क्षेत्रों में चारित्रात्माएँ सुख-सातापूर्वक विराजमान हैं।

महिला समिति

''महिला सशक्तिकरण :- एक अनुपम प्रयास''

नारी को जीवन की धुरी कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। माँ के गर्भ से लेकर जीवन के अंतिम श्वास तक प्रत्येक व्यक्ति का सम्बन्ध नारी के कई रूपों से होता है। जीवन के प्रत्येक पड़ाव में स्त्री किसी न किसी रूप में प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सबसे पहला और सबसे प्यारा रिश्ता हमारा अपनी माँ के साथ होता है। माँ संस्कारित हो तो केवल शिशु ही नहीं अपितु पूरा परिवार संस्कारित हो जाता है।

संस्कार सरिता प्रवाहित करने हेतु श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर रही है। महिला समिति समय-समय पर अपनी गतिविधियों के माध्यम से सिर्फ महिलाओं में ही नहीं अपितु बालिका वर्ग में भी संस्कारों का सर्जन कर रही है जिससे एक सशक्त परिवार, समाज व राष्ट्र का निर्माण हो सके। इसी दिशा में महिला समिति के प्रयासों को आकार देने वाली विभिन्न प्रवृत्तियाँ निम्न हैं-

1. संगठन :- संगठन जो कि महिला समति का महत्वपूर्ण अंग है। इसका मुख्य उद्देश्य है सभी साधुमार्गी महिलाओं को श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति से जोड़ना, नये सदस्य बनाना, 3 कि.मी. में मंडल लगवाना, जहाँ पर मंडल नहीं है वहाँ पर प्रवास करके मंडल का गठन करना, अगर 10 से या 10 से कम सदस्य हैं तो उस क्षेत्र से एक सक्रिय सदस्य को जोड़कर उसे राष्ट्रीय/आंचलिक ग्रुप से जोड़ना ताकि श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति द्वारा संयोजित सभी गतिविधियों की जानकारी उन्हें मिल सके।

व्यक्ति अकेला निर्बल होता, संघ सबल होता मानें।
''संघे शक्ति कलौयुगे'' की, सत्य भावना पहचानें।

2. केसरिया कार्यशाला :- जैसा कि नाम से विदित है महिला समिति द्वारा संचालित एक ऐसा कार्यक्रम जो ज्ञान-ध्यान व संस्कारों से रंगा हो। केसरिया कार्यशाला, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक माह एक कार्यशाला आयोजित की

जाती है। केसरिया रंग विजय व उल्लास का प्रतीक है। जब महिला समिति की बहिनें केसरिया गणवेश में इस कार्यक्रम में भाग लेती हैं तब उनका उत्साह देखते ही बनता है। माह में एक बार विभिन्न रोचक गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं की छुपी हुई प्रतिभाएँ सामने आती हैं। एक ओर जहाँ यह धार्मिक आयोजन है वहीं दूसरी ओर यह महिलाओं के लिए Skill Development Programme भी है। चाहे फिर किसी विषय पर लिखना हो, बोलना हो, वाद-विवाद या अभिनय करना हो आदि सभी कार्यक्रम महिलाओं में अलग-अलग तरीकों से आत्मविश्वास की वृद्धि करते हैं।

3. युवती शक्ति :- आज से कुछ वर्षों पहले लड़कियों से यही कहा जाता था कि खाना बनाना और घर के काम करना सीखो, ससुराल जाना है। लेकिन आज समय बदल रहा है। आज की लड़की शिक्षा ही नहीं बल्कि हर क्षेत्र में अपनी योग्यता साबित कर रही है। महिला समिति ने समय के बदलाव को जानकर हमारी युवा व किशोर लड़कियों को संगठित किया। और युवती शक्ति कार्यक्रम शुरु किया जिसमें 10 वर्ष से अधिक आयु की अविवाहित युवतियाँ ज्ञान-ध्यान तो सीख ही रही हैं साथ ही अपने नवीन अंकुरित विचारों से महिला समिति को हरा-भरा व रोचक बनाने में पूर्ण सहयोग कर रही हैं। पश्चिमी संस्कृति के पीछे भागने वाले आज के युवा संस्कारों को बहुत पीछे छोड़ चुके हैं, लेकिन युवती शक्ति कार्यक्रम युवतियों में संस्कारों का बीजारोपण कर रहा है। इसमें भी अलग-अलग कार्यक्रमों के माध्यम से लड़कियों की प्रतिभाओं को विकसित किया जाता है। धर्म से संस्कारित यह युवा पीढ़ी भविष्य में स्वयं, परिवार, संघ व राष्ट्र के विकास में अपना सहयोग देगी। यह महिला सशक्तिकरण में भी मददगार साबित होगा।

4. साधुमार्गी मोटिवेशनल फोरम (SMF) :- आज की महिलाएँ शिक्षित होकर परिवार ही नहीं समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में बराबर सहयोग कर रही हैं। (SMF) के अन्तर्गत महिला समिति की वे महिलाएँ जिन्होंने स्नातकोत्तर से उच्चशिक्षा प्राप्त की है उनका एक फोरम बनाया गया है, जिससे वे अपनी व्यस्त जीवनशैली में भी महिला समिति की विभिन्न गतिविधियों से जुड़ सकें और शिक्षा व अनुभव से महिला समिति को ऊँचाईयों पर ले जा सकें। (SMF) के अन्तर्गत सभी गतिविधियाँ महिलाओं की दिनचर्या को ध्यान में रखते हुए ही आयोजित की जाती है।

5. परिवारांजलि :- आचार्य भगवन् की प्रेरणा से परिवारांजलि कार्यक्रम आज एक आन्दोलन बन गया है। महिला समिति की अनुकरणीय मेहनत से अधिकतर साधुमार्गी परिवार इस कार्यक्रम से जुड़े हुए हैं। इसमें सिर्फ हमारे ज्ञान व दर्शन ही नहीं अपितु आचरण को भी मजबूत बनाया जा रहा है। परिवारांजलि कार्यक्रम में परिवार का कोई भी सदस्य इससे जुड़ सकता है। अलग-अलग 9 अंजलियों के माध्यम से छोटे-छोटे नियम जीवन में बड़ा बदलाव ला सकते हैं। भागदौड़ भरी जिन्दगी में भी परिवारांजलि हमें ठहराव देती है। महिला समिति के सार्थक प्रयासों से ही यह सम्भव हो पाया है। वर्तमान में भी महिला समिति इसे Update करने के लिए निरंतर कार्य कर रही है, जिससे जिन्होंने भी नियम लिए हैं वे उन्हें याद रखें और निरन्तर नियमों का पालन करते हुए अपने जीवन में परिवारांजलि के माध्यम से अनुशासन ला सकें। प्रत्येक साधुमार्गी परिवार को इससे जुड़ना चाहिए और अपने समाज के विकास में सहयोग देना चाहिए। परिवारांजलि की अधिक जानकारी के लिए संघ की वेबसाईट व संघ मार्गदर्शिका का अवलोकन करें।

6. सर्वधर्मी सहयोग :- आज समाज में आर्थिक असमानता की स्थिति दृष्टिगत है। इसलिए जरूरत है कि आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्तियों के अपने सहयोग से समाज में समानता लाने का प्रयास करें। हमारी सम्पन्नता हमारे अहं को पोषित करने वाली न बनकर सहयोग की भावना को बढ़ाने वाली बने। महिला समिति द्वारा आयोजित स्वधर्मी सहयोग कार्यक्रम हमें आत्मीयता सिखाता है। साधुमार्गी परिवार का कोई सदस्य यदि आर्थिक रूप से सक्षम नहीं है तो समिति द्वारा आर्थिक मदद की जाती है, जिससे वह भी समाज में सामान्य जीवन जी सके।

7. समता छात्रवृत्ति योजना :– समता छात्रवृत्ति योजना एक अनुपम अतुलनीय कार्यक्रम है। शिक्षा में सहयोग करना अनन्तानन्त ज्ञानावरणीय कर्मों को क्षय करता है। किसी परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी ना हो तो उस परिवार के बच्चों की शिक्षा अधूरी न रह जाए इस हेतु महिला समिति ने यह कार्यक्रम चलाया है, जिसमें जरूरतमंद बच्चों को शिक्षा के लिए आर्थिक मदद की जाती है। आज के बच्चे हमारा आने वाला कल हैं और शिक्षा हेतु किया गया उनका यह सहयोग उन्हें भविष्य में स्वावलम्बी व आत्मनिर्भर बनने में मदद करता है। श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति द्वारा आयोजित बहुआयामी कार्यक्रम महिलाओं के सर्वांगीण विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान दे रहे हैं।

केसरिया कार्यशाला – ''सिद्धी''

श्रीमद् भगवती सूत्र शतक 2 उद्देशक 5 के आधार से गत कुछ महीनों का सफर ले आया हमें इस **सवणे णाणे** के अंतिम पायदान पर, जो कि था ''सिद्धी''। जो भगवान ने स्वयं प्राप्त की और हमारा मार्ग भी बहुत सुन्दर रीति से प्रशस्त कर गए हैं। काल का प्रभाव, समय का अभाव, कर्मों का बचाव आदि बहाने किनारे करें और अपने अन्दर छिपी तेजस्वी और ओजस्वी आत्मा पर लगे कर्मों को झाड़कर सिद्ध भगवान की भक्ति में लीन हो जाएँ।

केसरिया कार्यशाला

मई माह में आयोजित ''सिद्धी'' गतिविधि के प्रतिभागी

क्र.	क्षेत्र	प्रतिभागियों की सं.	क्र.	क्षेत्र	प्रतिभागियों की सं.	क्र.	क्षेत्र	प्रतिभागियों की सं.	क्र.	क्षेत्र	प्रतिभागियों की सं.
1	अकोला	7	10	ब्यावर	13	20	गुंडरदेही	7	30	कूचबिहार	7
2	चित्तौड़	6	11	चौथ का बरवाड़ा	5	21	रायपुर	18	31	अलीपुरद्वार	8
3	कानोड़	24	12	जयपुर	12	22	बेरला	7	32	बंगईगाँव	6
4	उदयपुर	30	13	अजमेर	15	23	पुणे	7	33	गुवाहाटी	12
5	लसड़ावन	7	14	अलीगढ़	49	24	सूरत	28	34	सिलापथार	14
6	निम्बाहेड़ा	19	15	रतलाम	6	25	शिरपुर	13	35	विश्वनाथ चाराली	5
7	प्रतापगढ़	15	16	जावद	7	26	सेवली	8	36	गोलकगंज	6
8	बीकानेर	13	17	हरदा	11	27	परोला	14	37	धुबड़ी	7
9	बजरिया	9	18	डोंगरगांव	6	28	परतवाड़ा	18	38	दिल्ली	18
			19	ठेलकाडीह	5	29	काठमांडू	6			

धार्मिक कार्य-

अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर हुए एकासन

निम्बाहेड़ा	55	मन्दसौर	20	सूरत	9	कोलकाता	17
भदेसर	28	रतलाम	31	पूणे	21	हावड़ा	14
चित्तौड़गढ़	31	रावटी	30	सूरत	75	सिलचर	31
भीलवाड़ा	28	खाचरौद	50	अहमदाबाद	72	सिलापथार	15
गंगाशहर	11	रायपुर	17	जलगाँव	88	बंगईगाँव	7
ब्यावर	51	दुर्ग	11	दौंडाईचा	22	सिलापथार	45
टोंक	6	महासमुंद	10	नासिक	9	गुवाहाटी	40
जयपुर	22	खरियार रोड़	9	धरणगाँव	11	नारायणपुर	8
अजमेर	15	हैदराबाद	13	शिरपुर	49	चण्डीगढ़	
सवाईमाधोपुर	29	बैंगलूरु	7	अक्कलकुवा	6	पंचकुला, जिरकपुर	8
मंडी	15	तमिलनाडु	20	राहुरी फैक्ट्री	9	मुंगेली	11
						रानीगंज	7

बांसवाडा, मारवाड, चंगेडी, धागडमऊ, जावद, चारवा, सिवनी मालवा, बदनावर, बेरला, नुआपाडा, भिलाई, नारायणपुर, गंडई, ठेलकादीह, सेमरा, वापी, नंदुरबार, कारंजा लाड, रायगंज, पुरुलिया, फारबिसगंज, गोलकगंज, लालाबाजार, टंगला, लूम्डिंग, चाराली, गोलकगंज, कोकराझार, करीमगंज, विश्वनाथचाराली, धर्मनगर, नगरी, साजा, बरहमपुर, तुफानगंज, मोरवान और दिल्ली आदि क्षेत्रों में भी एकासन हुए।

नोट : उपरोक्त डाटा गूगल लिंक फॉर्म से लिया गया है।

मेवाड़ अंचल–

कानोड :– आचार्य श्री नानेश जन्मदिवस पर सामूहिक नवकार मंत्र जाप तथा 60 महिलाओं ने 12 व्रत धारण किए।

उदयपुर :– आचार्य श्री नानेश जन्म जयंती पर 400 एकासन हुए।

छत्तीसगढ़–उड़ीसा अंचल–

रायपुर :– शासन दीपक श्री हर्षितमुनिजी म.सा. आदि ठाणा–6, शासन दीपिका साध्वी श्री रजतमणिजी म.सा. आदि ठाणा–3 के सान्निध्य में एक हजार श्रावक–श्राविकाओं की उपस्थिति में 19 वर्षीतप पारणे वॉलफोर्ट सिटी, रायपुर में संपन्न हुए। इस अवसर पर एक अलग कार्यक्रम में तीन मुमुक्षु बहिनों– यशस्वीजी ढेलडिया–बालोद, अनमोलजी जैन–टिटलागढ़, सिद्धिजी नाहर–धमतरी के अभिनन्दन का अवसर भी प्राप्त हुआ। इसी अवसर पर महिला समिति की संरक्षिका श्रीमती इंदुजी बैद, शान्तिबाई पारख, श्रीमती मांगीबाई गोलछा का भी महिला मण्डल द्वारा बहुमान किया गया। आयंबिल की लड़ी निरन्तर गतिमान है।

धमधा :– शासन दीपक श्री हर्षितमुनिजी म.सा. आदि ठाणा–4 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री समियाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा–4 का शेखेकाल सान्निध्य धमधा श्रीसंघ को प्राप्त हुआ। आपश्रीजी की प्रेरणा से एकासना दिवस, नीवी अभिग्रह, पोरसी, बियासना आदि दिवस सामूहिक रूप से सम्पन्न हुआ। सभी ने अपनी सहभागिता प्रदान की एवं विहार सेवा का लाभ लिया।

कर्नाटक–आंध्रप्रदेश अंचल–

हुबली :– शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रभाश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के 11वें अध्ययन तथा श्री दशवैकालिक सूत्र के 1 से 4 अध्ययन का श्रावक–श्राविकाओं द्वारा ज्ञानार्जन किया गया, जिसमें 15 महिलाओं ने भाग लिया।

मुम्बई–गुजरात–यू.ए.ई अंचल–

सूरत :– शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभाजी म.सा. ठाणा–3 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री कल्पनाश्रीजी म.सा. ठाणा–3 का विभिन्न क्षेत्रों में विचरण हो रहा है। सभी क्षेत्रों में जिनवाणी की सरिता प्रवाहित हो रही है। 1 मई को देशनोक की दीक्षार्थी बहन सुश्री कविताजी बुच्चा का अभिनन्दन समता महिला मंडल द्वारा चुन्दड़ी ओढ़ाकर किया गया। शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभाजी म.सा. ने श्रीमद् उपासकदशांग सूत्र को बहुत ही रोचक तरीके से समझाइश दी। कईयों ने याद करने का पुरुषार्थ किया।

22 से 29 मई तक बच्चों का 8 दिवसीय आवासीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में महिला मंडल एवं बहू मंडल की कुछ सदस्याओं ने बच्चों के साथ 24 घंटे रहकर उन्हें दिनचर्या के हिसाब से संभालने, पढ़ाने, एक्टीविटी करवाने, मोटीवेशनल वक्ताओं को बुलाने की जिम्मेदारी उठाकर शिविर को सफल बनाने में योगदान दिया।

मुम्बई :– गत माह महिला समिति की वार्षिक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें वर्षभर हुई परीक्षाओं में भाग लेने वाले परीक्षार्थियों एवं तपस्वी बहिनों का सम्मान किया गया एवं धार्मिक प्रश्नोत्तर पर

केबीसी का आयोजन किया गया।

पूर्वोत्तर अंचल :– बिलासीपाड़ा :– अक्षय तृतीया पर 5 उपवास हुए। 18 मई को दीक्षार्थी बहिन मुस्कानजी बरड़िया का समता भवन में महिला मण्डल द्वारा अभिनन्दन किया गया साथ ही गुवाहाटी, कोकराझाड़ एवं बंगईगाँव में भी उनका अभिनन्दन किया गया।

शिविर

क्र.सं.	क्षेत्र	शिविर के विषय
1	बम्बोरा	एक कदम ज्ञान की ओर
2	भीण्डर	करो और भरो (आठ कर्म)
3	नोखा	तीर्थंकरों के पंचकल्याणक, श्रावकों की जानकारी, तीर्थंकरों की अवगाहना, निर्वाण मुहूर्त्त, आनुपूर्वी कैसे पढ़ें, विकार कैसे निकालते हैं व अनुष्ठान दस आश्चर्य आदि।
4	रतलाम	12 व्रत का शिविर संघ द्वारा, धर्मपाल बन्धुओं का शिविर
5	इंदौर	धर्म हमारा जीवन
6	राजनांदगाँव	जैन सिद्धांत बत्तीसी, प्रतिक्रमण
9	बैंगलोर	युवा कर्त्तव्य बोध शिविर
10	हैदराबाद	भिक्षा के 110 दोष
11	हुबली	अध्ययन धर्म महान है
12	बेलेचारी (चैन्नई)	आई टू आई
13	सूरत	जागो नारी जागो, किं कर्त्तव्यम्, मास्टर की
14	दिल्ली	लोक की सरंचना, तत्त्वज्ञान व कर्मों पर प्रकाश

सामाजिक कार्य :–

क्षेत्र	कार्यक्रम	राशि
निम्बाहेड़ा	गौशाला में गायों को चारा डलवाया।	30,000/–
बड़ीसादड़ी	अस्पताल में फल व बिस्किट वितरित किए गए।	
	सर्वधर्मी सहयोग के लिए धनराशि दी गई।	25,750/–
इंदौर	सर्वधर्मी परिवारों को अनाज का वितरण तथा वृद्धाश्रम में भोजन, फल, बिस्किट वितरित किए गए।	
नीमच	गौशाला में गायों को चारा डलवाया गया।	
मंदसौर	गौशाला में गायों को गुड़, लड्डू व चारा डाला गया।	
ब्यावर	सामाजिक संस्था 'शुकून' में साड़ी, बर्तन, खिलौने आदि प्रदान किए गए।	
चैन्नई	संगठन एवं सर्वधर्मी सहयोग के लिए धनराशि दी गई।	15,000/–
सूरत	गरीब परिवारों को अनाज किट वितरित किए गए।	
सिलचर	कैंसर अस्पताल में ''हैल्प डेस्क'' की सुविधा उपलब्ध करवाई गई।	

समता शाखा रिपोर्ट

क्रमांक	अंचल का नाम	आंचलिक गतिविधि	03-04	10-04	17-04	24-04
1	मेवाड़	आंचलिक उपस्थिति	1486	1608	1787	1757
		आंचलिक क्षेत्र	89	90	91	88
2	बीकानेर-मारवाड़	आंचलिक उपस्थिति	689	617	595	652
		आंचलिक क्षेत्र	43	44	44	42
3	जयपुर-ब्यावर	आंचलिक उपस्थिति	269	421	438	480
		आंचलिक क्षेत्र	27	28	28	27
4	मध्यप्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	1016	1040	961	1251
		आंचलिक क्षेत्र	74	74	72	76
5	छत्तीसगढ़-उड़ीसा	आंचलिक उपस्थिति	2235	1981	1928	1954
		आंचलिक क्षेत्र	160	160	164	155
6	कर्नाटक-तेलंगाना-आंध्रप्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	242	248	340	431
		आंचलिक क्षेत्र	22	21	24	19
7	तमिलनाडु	आंचलिक उपस्थिति	295	252	271	298
		आंचलिक क्षेत्र	13	13	13	13
8	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई	आंचलिक उपस्थिति	346	399	361	408
		आंचलिक क्षेत्र	34	32	33	33
9	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	आंचलिक उपस्थिति	405	407	424	480
		आंचलिक क्षेत्र	40	44	48	42
10	बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखण्ड-आंशिक उड़ीसा	आंचलिक उपस्थिति	272	285	262	297
		आंचलिक क्षेत्र	43	43	42	37
11	पूर्वोत्तर	आंचलिक उपस्थिति	211	224	237	241
		आंचलिक क्षेत्र	23	24	26	24
12	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-यू.पी.	आंचलिक उपस्थिति	63	266	109	116
		आंचलिक क्षेत्र	8	9	10	9
13	अंतरराष्ट्रीय शाखा	आंचलिक उपस्थिति	24	41	16	15
		आंचलिक क्षेत्र	8	7	7	7
संयुक्त रिपोर्ट						
कुल उपस्थिति			**7553**	**7789**	**7729**	**8380**
कुल क्षेत्र			**584**	**589**	**602**	**572**

समता शाखा में सर्वाधिक उपस्थिति दर्ज़ करवाने वाले प्रथम 10 संघों की सूची

क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति संख्या	क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति संख्या
1	उदयपुर	1338	6	नोखामंडी	513
2	रायपुर	912	7	राजनांदगाँव	507
3	रतलाम	830	8	बैंगलूरु	447
4	दुर्ग	745	9	ब्यावर (उत्क्रांति ग्राम)	375
5	चैन्नई	660	10	बड़ीसादड़ी (उत्क्रांति ग्राम)	370

श्रीमद् अंतकृद्दशांग सूत्र - 12

गतांक 29-30 मई, 2022 से आगे...

प्रश्न 212. आठवें वर्ग के तृतीय अध्ययन में किनका वर्णन है एवं उन्होंने कौन से तप की आराधना की?

उत्तर. आठवें वर्ग के तृतीय अध्ययन में महाकाली आर्या का वर्णन हैं। उन्होंने लघुसिंह निष्क्रीड़ित तप की आराधना की।

प्रश्न 213. लघुसिंह निष्क्रीड़ित तप की आराधना में कितना समय लगता है?

उत्तर. उपरोक्त तप की आराधना में कुल 2 साल और 28 दिन लगते हैं।

प्रश्न 214. महासिंह निष्क्रीड़ित तप किसने किया?

उत्तर. महासिंह निष्क्रीड़ित तप कृष्णा आर्या ने किया।

प्रश्न 215. महासिंह निष्क्रीड़ित तप की आराधना में कितना समय लगता है?

उत्तर. इस तप की आराधना में कुल 6 साल 2 महीने और 12 अहोरात्र लगते हैं।

प्रश्न 216. सुकृष्णा आर्या कौन-कौन सी भिक्षु प्रतिमाओं को स्वीकार करती हैं?

उत्तर. सुकृष्णा आर्या सप्तसप्तमिका , अष्टअष्टमिका, नवनवमिका, दशदशमिका भिक्षु प्रतिमाओं को धारण करती हैं।

प्रश्न 217. महाकृष्णा आर्या कौन से तप की आराधना करती हैं?

उत्तर. महाकृष्णा आर्या लघु सर्वतोभद्र तप की आराधना करती हैं।

प्रश्न 218. सप्तम् अध्ययन में वर्णित वीरकृष्णा आर्या किस तप की आराधना करती है?

उत्तर. सप्तम् अध्ययन में वर्णित वीरकृष्णा आर्या महासर्वतोभद्र तप की आराधना करती हैं।

प्रश्न 219. महासर्वतोभद्र तप की चार परिपाटियों को पूर्ण करने में कितना समय लगता है?

उत्तर. महासर्वतोभद्र तप की चार परिपाटियों को पूर्ण करने में 2 साल 8 महीने और 20 दिन का समय लगता है।

प्रश्न 220. अष्टम् अध्ययन में किनका वर्णन आता है एवं वे कौन-सी तपाराधना करती हैं?

उत्तर. अष्टम् अध्ययन में रामकृष्णा आर्या का वर्णन आता है। वे भद्रोत्तरप्रतिमा तप आराधना करती हैं।

प्रश्न 221. भद्रोत्तरप्रतिमा तप कितनी परिपाटियों में पूर्ण होता है?

उत्तर. भद्रोत्तरप्रतिमा तप 4 परिपाटियों में पूर्ण होता है।

प्रश्न 222. नवम् अध्ययन में पितृसेनकृष्णा आर्या द्वारा किए गए किस तप की आराधना का वर्णन आता है?

उत्तर. नवम् अध्ययन में पितृसेनकृष्णा आर्या द्वारा किए गए मुक्तावली तप की आराधना का वर्णन आता है।

प्रश्न 223. आयम्बिल वर्धमान तप की आराधना किसने की?

उत्तर. आयम्बिल वर्धमान तप की आराधना महासेनकृष्णा आर्या ने की।

प्रश्न 224. आयम्बिल वर्धमान तप की आराधना में एक-एक आयम्बिल बढ़ाते हुए महासेनकृष्णा आर्या कितने आयम्बिल करती हैं?

उत्तर. एक-एक आयम्बिल बढ़ाते हुए महासेनकृष्णा आर्या 100 आयम्बिल करती हैं।

प्रश्न 225. आयम्बिल वर्धमान तप को पूर्ण करने में कितना समय लगता है?

उत्तर. आयम्बिल वर्धमान तप को पूर्ण करने में 14 वर्ष 3 महीने और 20 अहोरात्र लगते हैं।

-श्रीमद् अंतकृद्दशांग सूत्र प्रश्नोत्तर सम्पूर्ण

परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. के नैश्राय में सभी चारित्रात्माओं की विचरण सूची							
विभाग-1 (दिनांक-17-06-2022)							
01-मेवाड़ अंचल							
क्र. स.	चारित्रात्माओं के नाम	विराजने का स्थान	सक्रिय व्यक्ति का नाम व नम्बर	क्र. स.	चारित्रात्माओं के नाम	विराजने का स्थान	सक्रिय व्यक्ति का नाम व नम्बर
1	**परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म. सा.** श्री आदित्यमुनिजी म.सा. श्री मनीषमुनिजी म.सा. श्री अटलमुनिजी म.सा. श्री आदर्शमुनिजी म.सा. श्री इभ्यमुनिजी म.सा. श्री मयंकमुनिजी म.सा.	समता भवन, फतेहनगर, उदयपुर (राज.)	मनोहरलाल जी कावड़िया 9460210716 वर्धमानजी मारू 9414620552 महेशजी नाहटा 9406201351 7977370892	2	**बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा.** श्री नीरजमुनिजी म.सा. श्री शोभनमुनिजी म.सा. श्री गुणीशमुनिजी म.सा.	जैन स्थानृक भवन, वल्लभ नगर, उदयपुर (राज.)	प्रकाशजी सुराना 9784177001
3	शासन दीपक श्री राजनमुनिजी म.सा. श्री लाघवमुनिजी म.सा.	जुहार जैन भवन, भुपालपुरा, उदयपुर (राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495	4	शासन दीपक श्री गगनमुनिजी म.सा. श्री नवोन्मेषमुनिजी म.सा.	समता भवन, देवगढ़, राजसमन्द (राज.)	प्रेमजी पोरवाड़ 9460320943
5	शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. साध्वी श्री सुमनप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री रौनकश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुखदाश्रीजी म.सा.	समता भवन, गुडली, उदयपुर (राज.)	नरेशजी कावड़िया 9950300499 तरुणजी कावड़िया 8005710568	6	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा.(उदयपुर वाले) साध्वी श्री कमलश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सिद्धमणिजी म.सा. साध्वी श्री अर्पिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मृगांकश्रीजी म.सा.	11,डॉ.मदनजी कोठारी का निवास, पार्श्वनाथनगर सोसायटी सेक्टर 3, हिरण मंगरी उदयपुर(राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495
7	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताजी म.सा.(राजनांदगाँव वाले) साध्वी श्री पुष्पलताजी म.सा. साध्वी श्री जिनप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री सिद्धप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री अनुप्रेक्षाश्रीजी म.सा.	विवेक सांड समता भवन, कॉलेज रोड, निम्बाहेड़ा, चित्तौडगढ़ (राज.)	प्रकाशजी चपलोत 9414109613 सुरेशजी सहलोत 9414395581	8	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा.(बीकानेर वाले) साध्वी श्री राजमतिजी म.सा. साध्वी श्री तरुलताश्रीजी म.सा.	बगदीरामजी पाटीदार का निवास, खेताखेड़ा उदयपुर (राज.)	रमेशजी कुदाल 9414683309 तखतमलजी लसोड़ 9166663441
9	शासन दीपिका साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा. साध्वी श्री सुमित्राश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रीतिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मंजरीश्रीजी म.सा.	प्रभुलालजी सहलोत का निवास, शांतिनगर, हिरण मगरी, सेक्टर–5, उदयपुर (राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495	10	शासन दीपिका साध्वी श्री चेतनश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सूर्यमणिजी म.सा. साध्वी श्री सुरभिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुषमाश्रीजी म.सा.	आर.के. कालोनी, भीलवाड़ा (राज.)	बलवंतजी रांका 9829178431 पारसमलजी कूकड़ा 9462241948
11	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा.(मोड़ी वाले) साध्वी श्री मधुबालाजी म.सा. साध्वी श्री गरिमाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री विवेकश्रीजी म.सा. साध्वी श्री पुनिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री चिंतनप्रज्ञाजी म.सा. साध्वी श्री अर्जिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मुदितप्रज्ञाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सम्पन्नताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सौम्यताश्रीजी म.सा.	समता भवन, मयूरवन कॉलोनी, सेक्टर–4, उदयपुर (राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495	12	शासन दीपिका साध्वी श्री समताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री रविप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री अक्षयप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री स्वर्णज्योतिजी म.सा. साध्वी श्री प्रसिद्धिश्रीजी म.सा.	अम्बेश भवन, बानसेन, चित्तौड़गढ़ (राज.)	बाबूलालजी जैन 9928123167

13	शासन दीपिका साध्वी श्री निरंजनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री ललिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रणतप्रज्ञाश्रीजी म.सा.	स्वाध्याय भवन, काशीपुरी, भीलवाड़ा (राज.)	बलवंतजी रांका 9829178431 पारसमलजी कूकड़ा 9462241948	14	शासन दीपिका साध्वी श्री किरणप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री विरक्ताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. साध्वी श्री भावनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुरभिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री अनुरागश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुरिद्धिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुसिद्धिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री संभाव्यश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रत्युषाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा.	राजूजी बोरा का निवास, फतेहनगर, उदयपुर (राज.)	मनोहरलालजी कावड़िया 9460210716 वर्धमानजी मारू 9414620552
15	शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रभुताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री संवरश्रीजी म. सा. साध्वी श्री प्रीतिश्रीजी म.सा. (नारायणपुर)	महावीर भवन, रुंडेडा, उदयपुर (राज.)	फतेहलालजी कोठारी 9829459997 8619224746	16	शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभाजी म.सा साध्वी श्री गुणसुन्दरीजी म.सा. साध्वी श्री समर्पिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री ऋतुश्रीजी म.सा. साध्वी श्री गुंजनश्रीजी म.सा.	जैन स्थानक भवन, सलुम्बर, उदयपुर (राज.)	गोपालजी तातेड़ 9602403078
17	शासन दीपिका साध्वी श्री शांतप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री पंकजश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सरोजश्रीजी म.सा. साध्वी श्री लक्षिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री विशाखाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रगतिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री जलजश्रीजी म.सा.	कोठारी साहब की हवेली, भड़भूजा घाटी, उदयपुर (राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495	18	शासन दीपिका साध्वी श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री पूजिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री नीरजश्रीजी म.सा. साध्वी श्री महकश्रीजी म.सा. साध्वी श्री श्रुतिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री संयमसुगंधाश्रीजी म.सा.	भैरुंलालजी जैन का निवास, पाखण्ड, राजसमन्द (राज.)	भैरुंलालजी जैन 7073207672
19	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री वंदनाश्रीजी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री सुव्रतयशाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री अवियशाजी म.सा.	जैन स्थानक भवन, भावा, राजसमन्द (राज.)	पिंटूजी जैन 9867201913	20	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री सुभद्राश्रीजी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री समीक्षणाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री रूपयशाश्रीजी म.सा.	शंकर समता भवन, शास्त्री नगर, भीलवाड़ा (राज.)	बलवंतजी रांका 9829178431 पारसमलजी कूकड़ा 9462241948
21	शासन दीपिका साध्वी श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुवर्णाश्रीजी म.सा.	समता भवन, आदर्श कॉलोनी, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	प्रकाशजी चपलोत 9414109613 सुरेशजी सहलोत 9414395581	22	शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावतीजी म.सा. साध्वी श्री नमनश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रतिज्ञाश्रीजी म.सा.	हरकचंदजी गोखरू का निवास, राजाजी का करेड़ा,भीलवाड़ा (राज.)	अमरसिंहजी कोठारी 9414574533
23	शासन दीपिका साध्वी श्री करुणाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री इंगिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री जिज्ञासाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री कृतिश्रीजी म.सा.	निर्मलजी भण्डारी का निवास, सुभाष नगर, उदयपुर (राज.)	पारसजी डागा 9413300423 अर्जुनजी लोढ़ा 8949942495	24	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणाश्रीजी म.सा. (कानोड़ वाले) साध्वी श्री रश्मिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री उन्नतिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सम्पदाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सम्यक्श्रीजी म.सा.	समता साधना भवन, कानोड़, उदयपुर (राज.)	रमेशजी कुदाल 9414683309 तखतमलजी लसोड़ 9166663441
25	शासन दीपिका साध्वी श्री पावनश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा. (चिकारडा वाले) साध्वी श्री प्रेक्षाश्रीजी म. सा. साध्वी श्री प्रणतिश्रीजी म.सा.	समता भवन, चिकारड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)	प्रहलादजी लोढ़ा 9929201607	26	शासन दीपिका साध्वी श्री कविताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री विभाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री अंजलिश्रीजी म.सा.	मांगीलालजी जोशी का निवास, बडवई, उदयपुर (राज.)	रमेशजी कुदाल 9414683309 तखतमलजी लसोड़ 9166663441
27	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री रुचिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रज्ञप्तिश्रीजी म.सा.	महावीर भवन, नाथद्वारा, राजसमन्द (राज.)	बंशीलाल जी सूर्या 9460302453	28	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरुचिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुसौम्यश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुहर्षाश्रीजी म.सा.	पंकजजी सरूपरिया का निवास, फतेहनगर से 3 किमी. आगे, उदयपुर(राज.)	वर्धमानजी मारू 9414620552 पंकजजी सरूपरिया 7976449176
29	शासन दीपिका साध्वी श्री निखारश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मर्यादाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री अरुणिमाश्रीजी म. सा.	समता भवन, कपासन, चित्तौड़गढ़ (राज.)	सुरेशजी दुग्गड़ 9413045379 मदनजी चंडालिया	30	शासन दीपिका साध्वी श्री खंतीप्रियाश्रीजी म सा साध्वी श्री खामेमिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री रमामिश्रीजी म.सा. नवदिक्षिता साध्वी श्री	जैन स्थानक भवन, नवानिया, उदयपुर (राज.)	भगवतीलालजी पोखरना 9414682288

	साध्वी श्री रिभिताश्रीजी म.सा.		9929262606		आगमश्रीजी म.सा.		
31	शासन दीपिका साध्वी श्री अनाकारश्रीजी म.सा. साध्वी श्री काव्ययशाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री तारिकाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री शाश्वतश्रीजी म.सा.	जैन स्थानक भवन, भीमगढ़, चित्तौड़गढ़ (राज.)	मोतीलालजी हिंगड़ 8949685513				
	02-बीकानेर-मारवाड़-अंचल						
1	शासन दीपक श्री रमेशमुनिजी म.सा. श्री राकेशमुनिजी म.सा. श्री राजरत्नमुनिजी म.सा.	प्रवीणजी नाहटा का निवास, करनानी ललवानी मोहल्ला, गंगाशहर बीकानेर (राज.)	कौशलजी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमलजी सेठिया 9460172673	2	शासन दीपक श्री वीरेन्द्रमुनिजी म.सा. श्री गौतममुनिजी म.सा. श्री प्रशममुनिजी म.सा. श्री चंद्रेशमुनिजी म.सा. श्री संजयमुनिजी म.सा. श्री जयेशमुनिजी म.सा. श्री हिमांशुमुनिजी म. सा. श्री हृषिकेशमुनिजी म.सा. श्री सूर्यप्रभमुनिजी म.सा. श्री मंगलमुनिजी म.सा.	सेठिया कोटड़ी, कंसेरा बाजार के पास, मरोठी मोहल्ला, बीकानेर (राज.)	राजेन्द्रकुमारजी गोलछा 9571840310 वीरेन्द्रजी बडेर 9829240337
3	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री पारसकँवरजी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री सुमतिकँवरजी म.सा. साध्वी श्री पूर्णिमाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री विशालप्रभाजीम.सा. साध्वी श्री कनकप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री संयमप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री सुबोधप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री मननप्रज्ञाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री रमणश्रीजी म.सा. साध्वी श्री समयाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुप्रीतिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रथमाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सांत्वनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री जयामिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री कौमुदीश्रीजी म.सा.	समता साधना भवन, मालू कोटड़ी, रांगड़ी चौक, बीकानेर (राज.)	राजेन्द्रकुमार जी गोलछा 9571840310 वीरेन्द्रजी बडेर 9829240337	4	शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याणकँवरजी म.सा. साध्वी श्री लब्धिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सन्निधिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री वरदाश्रीजी म.सा.	साकेत बिल्डिंग, बोथरा चौक–2, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशलजी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमलजी सेठिया 9460172673
5	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. (देशनोक वाले) साध्वी श्री लघुताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री संस्कारश्रीजी म.सा. साध्वी श्री लघिमाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री वरणश्रीजी म.सा. साध्वी श्री पूर्णाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री भाग्यश्रीजी म.सा. साध्वी श्री भव्याश्रीजी म.सा. साध्वी श्री रम्याश्रीजी म.सा. साध्वी श्री शुभदाश्रीजी म.सा.	कांकरिया पौषधशाला, पावटा बी रोड, लक्ष्मी नगर, जोधपुर (राज.)	गुलाबजी चौपड़ा 9414196356 9057121008 किशोरजी सांखला 9414921151 7073901008	6	शासन दीपिका साध्वी श्री हर्षिलाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री ज्योत्सनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मणिप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री लवियशाश्रीजी म.सा.	समता भवन, समता नगर, बीकानेर (राज.)	राजेन्द्रकुमारजी गोलछा 9571840310 वीरेन्द्रजी बडेर 9829240337
7	शासन दीपिका साध्वी श्री श्वेताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री नूतनश्रीजी म.सा. साध्वी श्री ऋषिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री विश्रुतश्रीजी म.सा.	पारखजी का निवास, कुमठ चौक, नोखा, बीकानेर (राज.)	किशनलाल जी कांकरिया 9414147607	8	शासन दीपिका साध्वी श्री लक्ष्यप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री मीताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री लक्ष्यज्योतिजी म.सा. साध्वी श्री निशान्तश्रीजी म.सा.	श्री रामेश रत्नम, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशलजी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमलजीसेठिया 9460172673
9	शासन दीपिका साध्वी श्री वैभवप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री प्रभातश्रीजी म.सा. साध्वी श्री संयतिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री साक्षीश्रीजी म.सा. साध्वी श्री खुशालश्रीजी म.सा.	जैन स्थानक भवन, दिग्विजय नगर, जोधपुर (राज.)	गुलाबजी चौपड़ा 9414196356 9057121008 किशोरजी सांखला	10	शासन दीपिका साध्वी श्री विकासश्रीजी म.सा. साध्वी श्री अपूर्वश्रीजी म.सा. साध्वी श्री चिरागश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मतिज्ञाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.	कोठारी भवन, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)	गुलाबजी चौपड़ा 9414196356 9057121008 किशोरजी सांखला

	साध्वी श्री हिमानीश्रीजी म.सा.		9414921151 7073901008		साध्वी श्री अभिप्साश्रीजी म.सा. साध्वी श्री पुष्पिकाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मानसश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुहानीश्रीजी म.सा.		9414921151 7073901008
11	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिलाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुप्रियाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री अनुजाश्रीजी म.सा.	समता भवन, कमला नेहरू नगर, जोधपुर (राज.)	गुलाबजी चौपड़ा 9414196356 9057121008 किशोरजी सांखला 9414921151 7073901008	12	शासन दीपिका साध्वी श्री शर्मिलाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुगुप्तिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सोऽम्श्रीजी म.सा.	जैन जवाहर मण्डल, देशनोक, बीकानेर (राज.)	मोतीलालजी बुच्चा 6350348268 पानमलजी भूरा 8094812556
13	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रज्ञाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुश्रद्धाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुरचिताश्रीजी म.सा.	समता भवन, सूरतगढ़, श्रीगंगानगर (राज.)	पूनमचंदजी सुराणा 9351092281	14	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुविधाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुचारूश्रीजी म.सा.	बोथरा कोटड़ी, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)	कौशलजी दुग्गड़ 9414137121 9001037121 विमलजी सेठिया 9460172673
15	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रखरश्रीजी म.सा. साध्वी श्री भवपारश्रीजी म.सा. साध्वी श्री चन्द्रकलाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री जयंकराश्रीजी म.सा.	महावीर भवन, सोजत सिटी, पाली (राज.)	सुरेशजी सुराना 9829023158				
			03-जयपुर -ब्यावर-अंचल				
1	पर्यायज्येष्ठ श्री नरेन्द्रमुनिजी म.सा. शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा. श्री अनंतमुनिजी म.सा. श्री मधुरमुनिजी म.सा. श्री प्राणेशमुनिजी म.सा. श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, खटिकान हथाई के पास, ब्यावर, अजमेर (राज.)	अरविन्दजी मूथा 9414010326 चेतनजी हिंगड़ 7597188424	2	शासन दीपक श्री चिन्मयमुनिजी म.सा. श्री अमितमुनिजी म.सा. श्री उम्मेदमुनिजी म.सा.	जैन स्थानक भवन, पचाला, सवाईमाधोपुर (राज.)	तिलोकचंदजी जैन 9116482259
3	शासन दीपक श्री मुदितमुनिजी म.सा. श्री शमितमुनिजी म.सा. श्री गौरवमुनिजी म.सा. श्री यत्नेशमुनिजी म.सा. श्री मुक्तेश्वरमुनिजी म.सा.	सौभाग्यशशि लोढा समता भवन, माली मौहल्ला, फॉयसागर रोड, अजमेर (राज.)	रतनलालजी सांखला 9829072098 सुधीरजी सांखला 9829070402	4	शासन दीपक श्री श्रुतप्रभमुनिजी म.सा. श्री निःश्रेयसमुनिजी म. सा	जैन स्थानक भवन, ओसवाल मौहल्ला, मदनगंज, किशनगढ़, अजमेर (राज.)	कमलेशजी चौपड़ा 9828210721 धर्मेन्द्रजी चौपड़ा 9414355126
5	शासन दीपिका साध्वी श्री रोशनकँवरजी म.सा. साध्वी श्री परागश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्राचीश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रकृतिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री वाचनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सत्कारश्रीजी म.सा.	कांकरिया डेलान, नयाबास, ब्यावर, अजमेर (राज.)	अरविन्दजी मूथा 9414010326 चेतनजी हिंगड़ 7597188424	6	शासन दीपिका साध्वी श्री चन्द्रप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री सुजाताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुमेधाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री समिधाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री जीतयशाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री जागृतिश्रीजी म.सा.	रत्न स्वाध्याय भवन, रिजर्व बैंक के पास, तख्तेशाही रोड, कानोता बाग, जयपुर (राज.)	मुकेशजी जारोली 9351149600 राजकुमारजी नाहर 9928074897
7	शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा. साध्वी श्री सुरक्षाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री उमंगश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुनिधिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुवृष्टिश्रीजी म.सा.	मूथाजी की बगेची, विनोद नगर, ब्यावर, अजमेर (राज.)	अरविन्दजी मूथा 9414010326 चेतनजी हिंगड़ 7597188424	8	शासन दीपिका साध्वी श्री ऋजुताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री श्रेयाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मुस्कानश्रीजी म.सा.	वर्धमान जैन स्थानक भवन, रामपुरा, कोटा (राज.)	पंकजजी मेहता 9414187814
9	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंकाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री ह्रींकारश्रीजी म.सा. साध्वीश्री शीलसुगंधाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री श्रुतिप्रज्ञाजी म.सा.	शासकीय स्कूल, पिलोदा, अजमेर (राज.)	उत्तमचंदजी मेहता 9829793437				

04-मध्यप्रदेश अंचल							
1	शासन दीपक श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. श्री हेमगिरीमुनिजी म.सा. श्री किशोरमुनिजी म.सा.	जैन स्थानक भवन,बडवेल झाबुआ (म.प्र.)	महेन्द्रजी पटवा 8827049049	2	शासन दीपक श्री जयप्रभमुनिजी म.सा. श्री अनन्यमुनिजी म.सा.	शासकीय स्कूल, सुल्तानपुर, धार (म.प्र.)	अभिषेकजी पंवार 9179401008
3	शासन दीपक श्री सुमितमुनिजी म.सा. श्री ब्रह्मऋषिमुनिजी म.सा. श्री ऋजुप्रज्ञमुनिजी म.सा.	समता भवन, चौमुखीपुल, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शनजी पिरोदिया 9425103697 दशरथजी बाफना 9425103717	4	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री कस्तूरकँवरजी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री चंदनबालाजी म.सा. (पिपलियामण्डी) साध्वी श्री शारदाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री दिव्यप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री लक्षिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री यशस्वीश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मनस्वीश्रीजी म.सा. साध्वी श्री विशुद्धिश्रीजी म.सा.	समता सदन, पुलिस कंट्रोल रूम के सामने, रोम टॉवर वाली गली न. 2, नई आबादी, मन्दसौर (म.प्र.)	बाबूलालजी पितलिया 9425369562 नरेन्द्रकुमारजी चौधरी 9425369547
5	शासन दीपिका साध्वी श्री जयश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रभावनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री चितरंजनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री चंदनाश्रीजी म.सा. (इन्दौर वाले) साध्वी श्री सुनीताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मल्लिकाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री कृतिकाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री कृणिकाश्रीजी म.सा.	जगदीशजी गुर्जर का निवास, हिंगोरिया नीमच (म.प्र.)	शोकीनजी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोकजी मोगरा 9329444345	6	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. (महाराष्ट्र वाले) साध्वी श्री चंदनाश्रीजी म.सा. (बड़ीसादड़ी वाले) साध्वी श्री अर्पणाश्रीजी म.सा. (बड़ीसादड़ी वाले) साध्वी श्री मर्मज्ञश्रीजी म.सा.	अभिषेकजी कांठेड़ का निवास, जवाहर नगर, नीमच (म.प्र.)	शोकीन जी मुणोत 9425106189 6261923732 अशोकजी मोगरा 9329444345
7	शासन दीपिका साध्वी श्री शकुन्तलाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री चरित्रप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री हर्षिताश्रीजी म.सा.	पारसनाथ भवन, जैन मेडिकल के सामने, बालाघाट (म.प्र.)	सुरेशजी चौरड़िया 9425402951 7000805796	8	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताजी म.सा. (मंदसौर वाले) साध्वी श्री कुसुमकांताजी म.सा. (जावरा) साध्वी श्री समीक्षाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री स्तुतिश्रीजी म.सा.	समता भवन, पिपलियामंडी, मंदसौर (म.प्र.)	मनोहरजी खिन्दावत 9425105061 पारसमलजी भण्डारी 8964868181
9	शासन दीपिका साध्वी श्रीकांताजी म.सा. साध्वी चंदनबालाजी म.सा. (बड़ावदा वाले) साध्वी श्री रंजनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रियलक्षणाजी म.सा. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री जयंतश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मधुश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मुक्ताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुमंगलाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री श्रुतशीलाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री अविचलश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रांजलश्रीजी म.सा. साध्वी श्री विरलश्रीजी म.सा. साध्वी श्री महिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री जिनेन्द्रप्रज्ञाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रियताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री अविकारश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मीनाक्षीश्रीजी म.सा. साध्वी श्री छवियशाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री पीहिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री पर्युपासनाश्रीजी म.सा.	समता भवन, यशवंत निवास रोड, इंदौर (म.प्र.)	तेजकुमारजी तातेड़ 9826033624 ललितजी दुग्गड़ 9827013200	10	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रीतिसुधाजी म.सा. साध्वी श्री करिश्माश्रीजी म.सा. साध्वी श्री हितैषीश्रीजी म.सा. साध्वी श्री दीपिकाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री कीर्तियशाश्रीजी म.सा.	समता सदन, घास बाजार, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शनजी पिरोदिया 9425103697 दशरथजी बाफना 9425103717
11	शासन दीपिका साध्वी श्री वनिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री साधनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री निष्ठाश्रीजी म.सा.	पंकजजी बम्ब का निवास, भाटखेड़ी,	पंकजजी बम्ब 9713966690	12	शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सरोजबालाजी म.सा. साध्वी श्री सुमुक्तिश्रीजी म.सा.	समता भवन, जवाहरपेठ, जावरा, रतलाम (म.प्र.)	अभयकुमारजी भण्डारी 8989605240 नरेशजी मेहता

	साध्वी श्री निरामगंधाश्रीजी म.सा.	नीमच (म.प्र.)			साध्वी श्री सुविरागश्रीजी म.सा साध्वी श्री सुविराजश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुअर्चाश्रीजी म.सा.		9425124737
13	शासन दीपिका साध्वी श्री अरुणाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री उपासनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री वीतरागश्रीजी म.सा. साध्वी श्री राजुलश्रीजी म.सा. साध्वी श्री रुचिराश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सौम्यसुगंधाश्रीजी म.सा.	रमेशजी कटारिया का निवास, गोपालनगर, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शनजी पिरोदिया 9425103697 दशरथजी बाफना 9425103717	14	शासन दीपिका साध्वी श्री दर्शनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री रिद्धप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री प्रतिक्षाश्रीजी म.सा.	29,राजकुमार जी चौपड़ा का निवास, न्यू अग्रवाल नगर, इन्दौर (म.प्र.)	तेजकुमारजी तातेड़ 9826033624 ललितजी दुग्गड़ 9827013200
15	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. साध्वी श्री कृतज्ञाजीम.सा. साध्वी श्री स्वागतश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुगुणाश्रीजी म.सा.	जैन साधना भवन, स्कीम न. 71, रणजीत हनुमान मंदिर के पीछे, इंदौर (म.प्र.)	तेजकुमारजी तातेड़ 9826033624 ललितजी दुग्गड़ 9827013200	16	शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुवासश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुरम्यश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुपदमश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुदक्षाश्रीजी म.सा.	आदिवासी छात्रावास, अवलदा मान, धार (म.प्र.)	मनोहरलालजी ओरा 9893777131
17	शासन दीपिका साध्वी श्री सरिश्माश्रीजी म.सा. साध्वी श्री अणिमाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सर्वज्ञश्रीजी म.सा. साध्वी श्री ख्यातिश्रीजी म.सा.	समता सदन, घास बाजार, रतलाम (म.प्र.)	सुदर्शनजी पिरोदिया 9425103697 दशरथजी बाफना 9425103717	18	शासन दीपिका साध्वी श्री शृंगारश्रीजी म.सा. साध्वी श्री दीक्षिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री निर्वेदश्रीजी म.सा.	महावीर भवन, मनावर, धार (म.प्र.)	मनोहरलालजी ओरा 9893777131
05-छत्तीसगढ़ - उड़ीसा अंचल							
1	शासन दीपक श्री अक्षयमुनिजी म.सा. श्री दिनेशमुनिजी म.सा.	चौपड़ा भवन, भिलाई–3, दुर्ग (छ.ग.)	कोमलजी पारख 9827939671	2	शासन दीपक श्री हेमन्तमुनिजी म.सा. श्री सौरभमुनिजी म.सा.	जैन भवन, अहिवारा, दुर्ग (छ.ग.)	चंचलजी बाफना 9300770362
3	शासन दीपक श्री हर्षितमुनिजी म.सा. श्री धीरजमुनिजी म.सा.	सांखलाजी का निवास, महावीर कॉलोनी, दुर्ग (छ.ग.)	सुभाषजी छाजेड़ 9893628100 नवीनजी बोथरा 9827174330	4	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शनमुनिजी म.सा. श्री लक्षितमुनिजी म.सा.	जैन भवन, गुंडरदेही, दुर्ग (छ.ग.)	अशोकजी देशलहरा 9425211984
5	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांताजी म.सा. साध्वी श्री सुनेहाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुशक्तिश्रीजी म.सा.	प्रकाशजी ढेडिया का निवास, महावीर कॉलोनी, दुर्ग (छ.ग.)	सुभाषजी छाजेड़ 9893628100 नवीनजी बोथरा 9827174330	6	शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री रजतमणिजी म.सा. साध्वी श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा. (उड़ीसा वाले) साध्वी श्री सुमेरुश्रीजी म.सा. साध्वी श्री चन्द्रिकाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री निर्मलयशाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री नियतयशाश्रीजी म.सा.	समता भवन, शिवपारा, दुर्ग (छ.ग.)	सुभाषजी छाजेड़ 9893628100 नवीनजी बोथरा 9827174330
7	शासन दीपिका साध्वी श्री समियाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री कामनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुधृतिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मृदुलप्रज्ञाश्रीजी म.सा.	मैत्री डेन्टल कॉलेज, अंजोराख दुर्ग (छ.ग.)	सुभाषजी छाजेड़ 9893628100 नवीनजी बोथरा 9827174330				
06-कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल							
1	शासन दीपक श्री छत्रांकमुनिजी म.सा. श्री निर्वाणमुनिजी म.सा.	महावीर भवन, टी. नरसिंहपुर, मैसूर (कर्ना.)	नवलजी कोठारी 9449323126 नवलजी कोठारी 9449323126	2	शासन दीपक श्री विदेहमुनिजी म.सा. श्री उत्तमयशमुनिजी म.सा.	श्री सुधर्म जैन पौषधशाला, ताड़बंद, सिकंदराबाद, हैदराबाद (तेलंगाना)	अरविंदजी गोलेछा 9247121108
3	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री सत्यप्रभाजी म.सा.	जैन स्थानक भवन,	श्रवणजी बाघमार 9448135770	4	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री मल्लिप्रज्ञाश्रीजी म.सा.	आराधना भवन, केशवपुर,	सागरजी कटारिया 9886700511

	साध्वी श्री पुण्यप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री सन्मतिशीलाजी म.सा.	मुंडर्गी, गदग (कर्ना.)	दीपचंदजी भंसाली 9945425105		साध्वी श्री प्रतिष्ठाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री रुचिताश्रीजी म.सा.	हुबली (कर्ना.)	
5	शासन दीपिका साध्वी श्री दिव्यदेशनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री नवकारश्रीजी म.सा. साध्वी श्री भाविताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री शुभंकराश्रीजी म.सा.	शासकीय स्कूल, हिलियुर, बैलूर (कर्ना.)	किशोरजी कर्नावट 9845038597				
07-तमिलनाडु अंचल							
1	शासन दीपिका साध्वी श्री समीहाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री निर्जराश्रीजी म.सा. साध्वी श्री संहिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री छविप्रज्ञाश्रीजी म.सा.	जैन स्थानक भवन, वडपल्ली, चैन्नई (तमि.)	हेमराजजी जैन 8220581613				
08-मुम्बई-गुजरात अंचल							
1	शासन दीपक श्री निश्चलमुनिजी म.सा. श्री मदनमुनिजी म.सा. श्री रोहितमुनिजी म.सा.	जैन मंदिर परिसर, हरिओम नगर, मुलुंड ईस्ट, मुम्बई (महा.)	सुरेशजी बोरदिया 9820925081	2	शासन दीपिका साध्वी श्री कल्पनाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री स्थितप्रज्ञाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री जयघोषाश्रीजी म.सा.	महावीर भवन, पांडेसरा, उधना, सूरत (गुज.)	उमेशजी मेहता 9724163092 प्रेमजी पारख 94268 65679 पारसमलजी हिंगड़ 9427881730
3	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुभगश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुरक्षणश्रीजी म.सा.	जैन मंदिर परिसर, शेरथा, गांधीनगर (गुज.)	गरिमाजी जैन 9427895511	4	शासन दीपिका साध्वी श्री उज्जवलप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री प्रमितिश्री जी म.सा. साध्वी श्री मणामगंधाश्रीजी म.सा.	602,करणीदान जी मालू का निवास, पदमाकृति बिल्डिंग, सिटीलाईट, सूरत (गुज.)	उमेशजी मेहता 9724163092 प्रेमजी पारख 9426865679
09-महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल							
1	शासन दीपक श्री पदममुनिजी म.सा. श्री उदितमुनिजी म.सा. श्री प्रणतमुनिजी म.सा.	राजेन्द्रजी कोठारी का निवास, परदापुर, औरंगाबाद (महा.)	महावीरजी गोलेछा 9579889101 राजेन्द्रजी कोठारी 7972081700	2	शासन दीपक श्री सुबाहुमुनिजी म.सा. श्री भूतिप्रज्ञमुनिजी म.सा.	जितेन्द्रजी बम्ब का निवास, बोरकुंड, धुलिया (महा.)	मनसुखजी भण्डारी 9561663224
3	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. (भीनासर वाले) साध्वी श्री सुसारिकाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुपरश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुरक्तिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुनवनिधीश्रीजी म.सा.	विनोदजी राखेचा का निवास, मारवाड़ी गली,शिरपुर धुलिया (महा.)	दिलीपजी बाफना 9420476479 सतीशजी लुणावत 9284062832	4	शासन दीपिका साध्वी श्री सौम्यशीलाजी म.सा. साध्वी श्री विवेकशीलाजी म.सा. साध्वी श्री सुयशप्रज्ञाजी म.सा. साध्वी श्री जयप्रज्ञाजी म.सा.	वर्धमान जैन स्थानक भवन, हिंगनघाट वर्धा (महा.)	ज्ञानचंदजी बोगावत 8805423970 विजयजी ओस्तवाल 9284640040
5	शासन दीपिका साध्वी श्री सुभक्तिश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुऋचाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री पल्लवश्रीजी म.सा.	स्वाध्याय भवन, मलकापुर, बुलढाना (महा.)	सुगनचंदजी आबड़ 9423146412				
10-बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखण्ड-आंशिक उड़ीसा अंचल							
1	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरीलीश्रीजी म.सा. साध्वी श्री चिरन्तनश्रीजी म.सा. साध्वी श्री इहिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री रोहिताश्रीजी म.सा.	बिमलजी अग्रवाल का निवास, मकरामपुर, मेदिनीपुर (प.बं.)	विनोदजी डागा 9331018261				

11-दिल्ली-पंजाब-हरियाणा एवं उत्तरी अंचल							
1	शासन दीपिका साध्वी श्री मनीषाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री धैर्यप्रभाजी म.सा. साध्वी श्री मृणालकँवरजी म.सा.	जैनस्थानक भवन,ऋषभ विहार, मेट्रो स्टेशन के पास, कडकडडूमा कोर्ट,दिल्ली	रमेशचंदजी गोलेछा 9810074206 जतनजी भूरा 9811160100	2	शासन दीपिका साध्वी श्री विजेताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री विराटश्रीजी म.सा. साध्वी श्री जयतिश्रीजी म.सा.	गोलछा भवन, आनन्द विहार, पीतमपुरा, दिल्ली	रमेशचंद जी गोलेछा 9810074206 जतनजी भूरा 9811160100
3	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रशांतश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रबोधश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रणवश्रीजी म.सा. साध्वी श्री प्रशस्तिश्रीजी म.सा.	एस.एस. जैन सभा भवन, शार्दुलगढ़, मानसा (पंजाब)	अभयजी जैन 9465264127 पूनमचंदजी सुराणा 9351092281	4	शासन दीपिका साध्वी श्री पूर्वीश्रीजी म.सा. साध्वी श्री सुश्रियाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री शिक्षिताश्रीजी म.सा. साध्वी श्री शशांकश्रीजी म.सा.	श्री वर्धमान जैन स्थानक भवन, उत्तरी पीतमपुरा, दिल्ली	रमेशचंदजी गोलेछा 9810074206 जतनजी भूरा 9811160100

जैन सिद्धान्त बत्तीसी के सन्दर्भ में शुद्धिपत्र

पृ.सं.	पंक्ति सं.	पहले	अब नया
8	1	जैसे- सौर ऊर्जा की बिजली	जैसे- जलता हुआ कोयला, चूल्हे की अग्नि, सौर ऊर्जा से उत्पन्न बिजली,
12	7	पतंग	पतंगा
15	15	नोट	ज्ञातव्य
18	9	लेश्या कहते हैं।	लेश्या कहते हैं। लेश्या तेरहवें जीवस्थान तक के जीवों में होती है।
26	11	आत्मा के साथ बंधे हुए अथवा बंध रहे कार्मण वर्गणा	आत्मा के साथ बंधे हुए कार्मण वर्गणा
27	10	वेदन = कर्मों का फल भोगना।	हटा दिया गया है।
27	14	मोह = मोहित होना, मूर्च्छित होना।	मोह = मोहित होना।
27	15	रहित हो,	रहित हो (अथवा हित-अहित को जानकर भी हित में पूर्ण रूप से प्रवृत्त और अहित से पूर्ण रूप से निवृत्त न हो पाए)
27	27	दान आदि में विघ्न	दान आदि संबंधी विघ्न
30	17	वज्रऋषभानाराच	पेज 31 का ज्ञातव्य-वज्रऋषभनाराच... यहाँ पढ़ें।
31	22	कहते हैं।	कहते हैं। वर्तमान में इस भरत क्षेत्र में उत्पन्न मनुष्यों में सेवार्त्त संहनन ही पाया जाता है।
56	8	उस जीवस्थान	उस श्रेणीवर्ती जीवस्थान
56	12	उस जीवस्थान	उस श्रेणीवर्ती जीवस्थान
56	15	सूक्ष्म कषाय (लोभ)	सूक्ष्म कषाय
56	16	कहते हैं।	कहते हैं। दसवें जीवस्थान में क्रोध, मान और माया का उदय नहीं होता, सिर्फ सूक्ष्म लोभ का उदय होता है।
67	21	एक जीव में ...	एक जीव में असंख्येय जीव प्रदेश होते हैं। लोक में कुल अनन्त जीव हैं। अनन्त जीवों के समुदाय को जीवास्तिकाय कहते हैं।

पृ.सं.	पंक्ति सं.	पहले	अब नया
68	3	उसे	उन्हें
71	2	तिक्त (तीखा)	तिक्त (कड़वा)
71	3	कटुक (कड़वा)	कटुक (तीखा)
77	12	जुगे,	जुगे,...
77	13-15	वीसं...सहस्सं	ये हटा दिया गया है।
79	23	जिसका आकार बेलनाकार	जो बेलनाकार
83	15	उस समय अनाहारक	उस समय वह अनाहारक
84	1	जिस समय जीव वचन योग से युक्त हो, उस समय वह भाषक कहलाता है।	भाषक के दो अर्थ हैं:- 1. पर्याप्त त्रस सयोगी जीव भाषक कहलाता है। 2. वचन योग से युक्त जीव भाषक कहलाता है।
84	4	जिस समय जीव के वचन योग न हो, उस समय वह अभाषक कहलाता है।	अभाषक के दो अर्थ हैं:- 1. एकेन्द्रिय जीव, अयोगी जीव तथा अपर्याप्त त्रस जीव अभाषक कहलाते हैं। 2. जिस समय जीव वचन योग से युक्त नहीं है, उस समय वह अभाषक कहलाता है।
96	8		यह प्रश्न उत्तर जोड़ा गया है- प्रश्न :- सद्भाव पदार्थ किसे कहते हैं? उत्तर :- सद्भाव अर्थात् विद्यमानता, अस्तित्व। जिन पदार्थों का अस्तित्व है, उन्हें सद्भाव पदार्थ कहते हैं।
99	17	प्रदेशों ...	परस्पर बंधे हुए प्रदेशों ...
100	1	प्रदेश के तुल्य ... पुद्गल कहते हैं।	वह सबसे छोटा पुद्गल जिसका विभाग न हो सके एवं जो किसी अन्य पुद्गल से जुड़ा हुआ न हो, उसे परमाणु पुद्गल कहते हैं।

कृपया आप अपनी प्रति में उपरोक्त अनुसार सुधार कर पढ़ने का कष्ट करें।

श्रमणोपासक विशेषांक

शीघ्र ही होगा नव आगाज

सादर जय जिनेन्द्र!

समय की गति अति तीव्र है, जिसके साथ चलने का साहस विरले महापुरुष ही कर सकते हैं। समय की माँग एवं आवश्यकता को देखते हुए आचार्य भगवन् निरन्तर जन-जन को धर्म साधना हेतु पुरजोर प्रेरणा दे रहे हैं। जनमानस के आत्मकल्याण हेतु उनका चिन्तन निरन्तर गतिशील है और उनके चिन्तनरूपी आशीर्वचनों व प्रवचनांश को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य संघ का मुखपत्र ''श्रमणोपासक'' अनवरत कर रहा है।

अंधानुकरण में सामान्य जनमानस ने एक ऐसी जीवनशैली अपना ली है, जिसका कोई ओर-छोर नहीं है। उसमें ना धर्म के लिए स्थान है, ना साधना का समय। ना चिन्तन करने की चिन्ता है, ना जिनवाणी सुनने की इच्छा। ना कर्मों का भय है, ना ही सम्यक्त्व की समझ। लगभग सभी मिथ्यात्व में डूबते हुए श्रावकाचार को भूलते जा रहे हैं।

महापुरुषों द्वारा आत्मकल्याण हेतु प्रदत्त चिन्तनों को ध्यान में रखते हुए एक 'विशेषांक' प्रकाशित किया जाना संभावित है, जिसका विषय **''श्रावकाचार व सम्यक्त्व''** रहेगा।

विशेषांक हेतु आप प्रतिभावान एवं सुज्ञ लेखकों, मनीषियों एवं पाठकों के सुझाव, विचार, रचनाएँ, लेख, कविताएँ, भजन आदि सादर आमंत्रित हैं। आप सुधीगण विशेषांक के सन्दर्भ में अपने विचार अधिकाधिक भेजने की कृपा करें।

विशेषांक हेतु निम्न विषयों पर रचनाएँ आमंत्रित हैं-

1. सम्यक्त्व की महिमा
2. सम्यक्त्व का अर्थ
3. देव, गुरु, धर्म और सम्यक्त्व
4. सम्यक्त्व सम्बन्धी जिज्ञासा-समाधान
5. सम्यक्त्व का उदय व्रतों की चेतना
6. मिथ्यात्व के 10 भेद के प्रयोगात्मक उदाहरण
7. श्रावक का अर्थ
8. श्रावक जीवन व व्रतों की महिमा
9. श्रावक के गुण
10. श्रावकाचार
11. व्रतधारी श्रावक का वातावरण
12. गृहस्थ व श्रावक की विचारधाराओं में अन्तर
13. प्राचीन श्रावक V/s वर्तमान श्रावक
14. श्रावक के तीन मनोरथ
15. ब्रह्मचर्य एक सम्पत्ति है
16. शाकाहार : सर्वोत्तम आहार
17. रात्रिभोजन त्याग : वैज्ञानिक धारणा
18. कषायमुक्त जीवन : आरोग्य जीवन
19. अच्छे श्रोता की क्या पहचान
20. बारह व्रतों का संक्षिप्त स्वरूप
21. स्वधर्मी वात्सल्य की ओर कदम बढ़ाएँ
22. धर्म संस्कार बिन जीवन सूना
23. Jain life style is an ideal life style

विशेष निवेदन है कि आपकी रचनाएँ सुन्दर व स्पष्ट अक्षरों में 1000-1100 शब्दों में समाहित करते हुए अपने नाम, पते व मोबाइल नं. सहित शीघ्रातिशीघ्र व्हाट्सएप्प नं. **9314055390** अथवा ईमेल **news@sadhumargi.com** के माध्यम से भिजवावें।

-सह-सम्पादिका

	जय गुरु नाना	
	जय महावीर	
	जय गुरु राम	
हु शि उ चौ श्री ज ग ना रा
©
राम चमकते भानु समाना
महत्तम महोत्सव
आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महा - महोत्सव
अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
महत्तम
महोत्सव
"महत्तम महोत्सव"
प्रारंभ दिवस
दिनांक १३ जुलाई २०२२
आषाढ सुदी १५, वि.सं.२०७९
चातुर्मासिक स्थापना दिवस
तप त्याग
जन जन में राम
सामाजिक
ज्ञानार्जन
गुदडी के लाल
व्रत विवेक
संघ विस्तार
स्वाध्याय
संस्कार
"महत्तम महोत्सव"
पूर्णता दिवस
फरवरी २०२५
माघ सुदी १२, वि.सं.२०८१

।। जय गुरू नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरू राम ।।

स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर

22-23-24 जुलाई 2022, उदयपुर (राजस्थान)

पावन सानिध्य

रत्नत्रय के महान आराधक श्रीमज्जैनाचार्य श्री 1008 श्री रामलाल जी म.सा. आदि ठाणा

शिविर के प्रमुख आकर्षण

- ज्ञान समीक्षा
- उपासना विधि एवं स्वाध्याय उच्चारण की विशुद्धि
- अप्रमत्त व निर्दोष स्वाध्यायी सेवा का अभ्यास
- पूर्ण समय सामायिक एवं संवर की आराधना
- औपचारिकता रहित समयबद्ध कार्यक्रम
- चयनित विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा दर्शाने का अवसर

13 जुलाई को चातुर्मास प्रारंभ दिवस है।

पात्रता : 2022 में सेवा देने के इच्छुक (सभी स्वाध्यायी)
उपस्थिति : पूर्ण कालिक
साथ लाएं : प्रतिक्रमण व अंतगढ़ सूत्र की पुस्तक (यदि हो तो)

—:नोट:—
2022 में स्वाध्याय सेवा देने पर शिविरार्थी को इस शिविर का मार्ग व्यय दिया जाएगा।

रिपोर्टिंग समय : 22 जुलाई 2022, प्रातः 7:30 बजे
शिविर समापन : 24 जुलाई 2022, सायः 5:30 बजे

—:शिविर स्थल :—

श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्थान, हिरण मगरी सेक्टर-4 उदयपुर

आयोजक

श्री साधुमार्गी जैन संघ, उदयपुर

अर्जुन लोढ़ा — अध्यक्ष
पारसकुमार डागा — मंत्री

शीघ्र रजिस्ट्रेशन कराएं

स्थानीय संपर्क
अशोक मुणोत
9406830581

राष्ट्रीय संपर्क
शैलेन्द्र लोढ़ा
9785083191

संयोजक : **समता प्रचार संघ**
(अंतर्गत श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर)
मोबाइल नम्बर और व्हाट्सअप नम्बर : 7231866008
Email.: udaipur@sadhumargi.com, website : www.sadhumargi.com

राम चमकते भानु समाना

संयोजक मण्डल— निर्मल संघवी, देवीलाल कोठारी, सुशील गोरेचा, सुभाष गोरवरू, संतोष जैन,

।।जय गुरु नाना।।
।।जय महावीर।।
।।जय गुरु राम।।
राम चमकते भानु समाना
कपासन
बंगेडी
उदयपुर
कतेहनगर
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति
(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)
मेवाड़ अंचल प्रवास की उपलब्धियाँ
दिनांक- 15-16 मई, 2022
संगठन की मजबूती पर पुरजोर प्रभावना
उदयपुर में 2 माह पूर्व गठित स्थानीय बहुमंडल ने 250 सदस्याओं को जोड़ा
केसरिया कार्यशाला, युवती शक्ति, मोटिवेशनल फोरम, सर्वधर्मी, समता छात्रवृत्ति, पाठशाला आदि प्रवृत्ति और परीक्षा की प्रभावना
महत्तम महोत्सव की जानकारी
स्वाध्यायी सेवा के लिए प्रेरणा
राष्ट्रीय अध्यक्षा
राष्ट्रीय महामंत्री
राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा
राष्ट्रीय उपाध्यक्षा
राष्ट्रीय मंत्री
आंचलिक संगठन संयोजिका

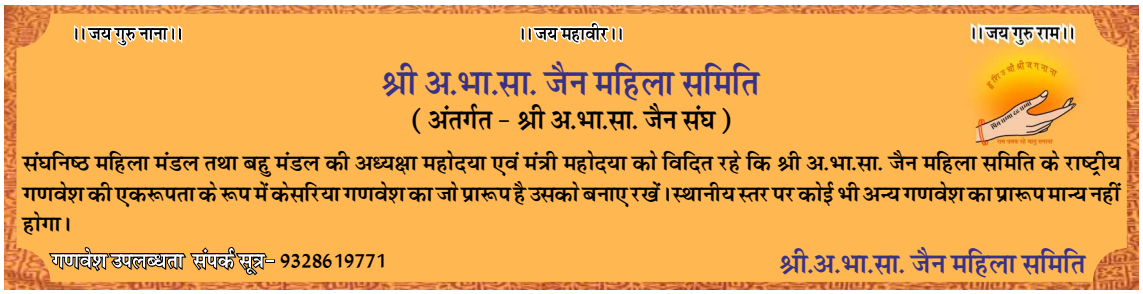
।।जय गुरु नाना।।
।।जय महावीर।।
।।जय गुरु राम।।
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति
(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)
संघनिष्ठ महिला मंडल तथा बहु मंडल की अध्यक्षा महोदया एवं मंत्री महोदया को विदित रहे कि श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति के राष्ट्रीय गणवेश की एकरूपता के रूप में केसरिया गणवेश का जो प्रारूप है उसको बनाए रखें। स्थानीय स्तर पर कोई भी अन्य गणवेश का प्रारूप मान्य नहीं होगा।
गणवेश उपलब्धता संपर्क सूत्र- 9328619771
श्री.अ.भा.सा. जैन महिला समिति

समता छात्रवृत्ति योजना
(कक्षा 1 से 12 तक)
- साधुमार्गी परिवार के विद्यार्थियों के लिए -
कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थी छात्रवृत्ति के लिए आवेदन कर सकते हैं।
छात्रवृत्ति आवेदन के लिए गत कक्षा में विद्यार्थी ने कम से कम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हो।
छात्रवृत्ति की राशि विद्यार्थी के स्कूल के खाते में प्रदान की जाएगी।
पूर्ण विवरण, पात्रता, आवेदन प्रपत्र इत्यादि महिला समिति एवं श्री संघ की वेबसाइट पर उपलब्ध है।
वेबसाइट-
www.sadhumargi.com/forms/
www.sabsjmsorg/downloads/
सम्पर्क सूत्र : 7231033008
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
तीनों इकाई के राष्ट्रीय पदाधिकारीगण एवं स्थानीय अध्यक्ष/मंत्री से करबद्ध निवेदन है कि अपने क्षेत्र में समता छात्रवृत्ति की प्रभावना करें, जिससे ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थी लाभान्वित हो सके।

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

सामाजिक जिम्मेदारी ही हमारी पहचान

सिपानी सेवा सदन, बैंगलोर एक ऐसा निवास स्थान है जहाँ बुजुर्ग एवं असहाय व्यक्तियों को निःशुल्क भोजन, कपडे, चिकित्सा आदि उपलब्ध करवाए जाते हैं।

इस सदन ने छः वर्ष पूर्ण कर लिए हैं एवं 100 से शुरुआत करके वर्तमान में 300 व्यक्तियों को यह सेवा उपलब्ध है। अब हम 100 अतिरिक्त आवासियों को जोडने की व्यवस्था कर रहे हैं।

इस सुविधा में पूर्ण सुसज्जित एंबुलेन्स, डाक्टर व नर्सिंग देखभाल आदि की सुविधा चौबीसों घंटे उप्लब्ध है एवं 40 का स्टाफ इस सेवा में नियुक्त है।

आर के सिपानी फाउंडेशन

439 18वाँ मेइन , 6वाँ ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूर – 560 095

संपर्क सूत्र : संतोष 9964105057, 9243667700, सिपानी कार्यालय । ई–मेल : sipanigrand@gmail.com

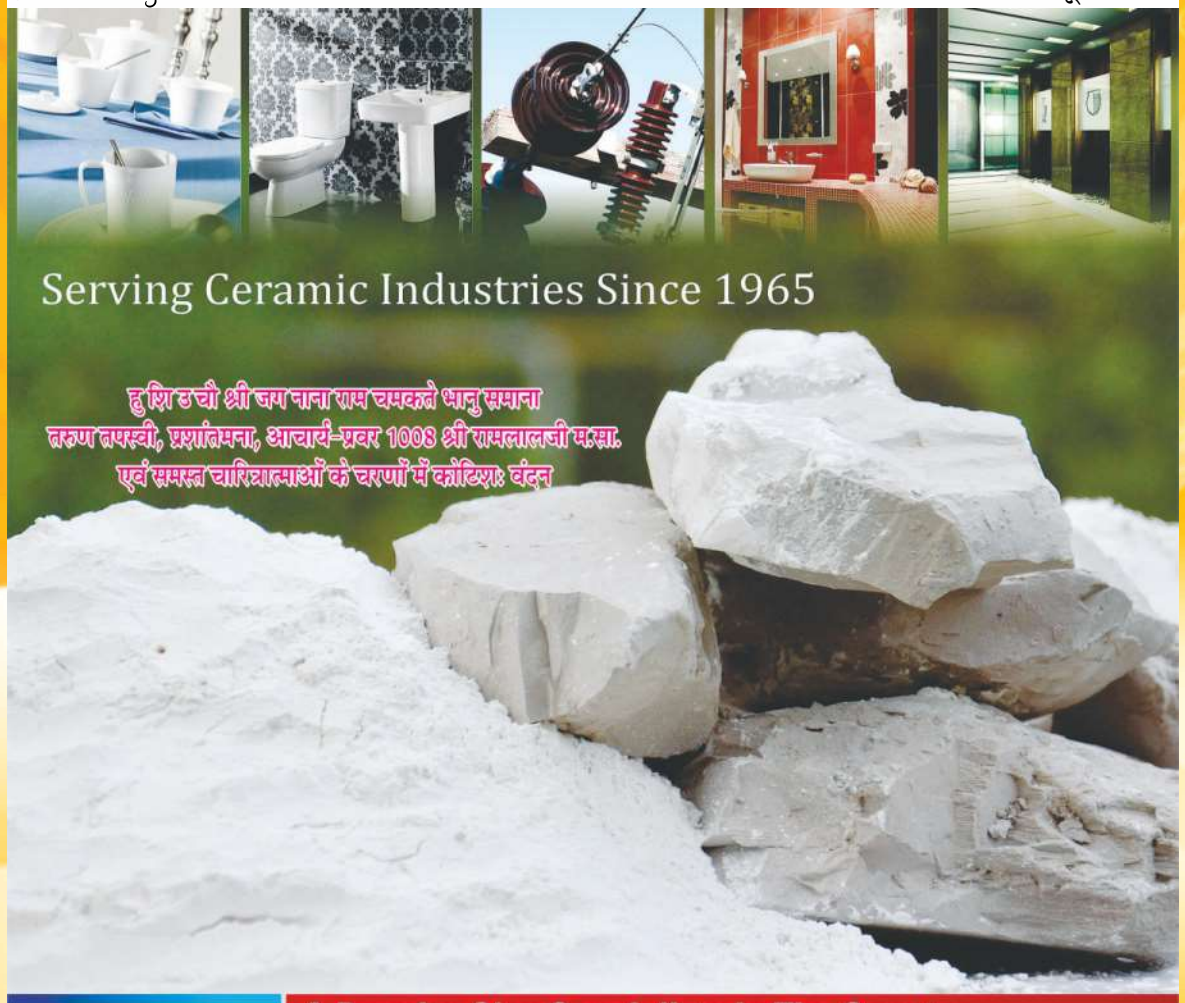

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

।।जय गुरु नाना।। ।।जय महावीर।। ।।जय गुरु राम।।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

(अंतर्गत: श्री अ.भा.सा. साधुमार्गी जैन संघ)

प्रधान कार्यालय: रतलाम (म.प्र.), प्रशासनिक कार्यालय: बीकानेर (राज.)

अध्यक्षीय कार्यालय: जावरा (म.प्र.)

राम चमकते भानु समाना

चातुर्मासिक स्थापना दिवस

के उपलक्ष में

तेले तप की आराधना

लक्ष्य 5555

दिनांक

11-12-13 जुलाई 2022

सभी स्थानीय संघ प्रतिनिधि पुरजोर पुरुषार्थ कर अधिक से अधिक तेले करने, करवाने के लक्ष्य के साथ ज्यादा से ज्यादा तप, त्याग, संवर, पौषध और धार्मिक प्रभावना कर इस पावन पर्व को कर्म बंधनों से परे रहकर कर्मनिर्जरा का माध्यम बनाएँ।

आयोजक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

आप सभी स्थानीय पदाधिकारियों से निवेदन है कि आपके स्थानीय संघ में आयोजित कार्यक्रमों का विवरण हमें व्हाट्सएप्प नंबर 9993104202 या ईमेल samtabhawan21@gmail.com अथवा गूगल लिंक पर अपडेट करें।

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए भण्डारी ऑफसेट, जोधपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24900
प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261